1225

अखिल भारतीय आयुर्वेद महासम्मेलन

श्री शंकर दाजी शास्त्री पदे

४८०

संसार के प्रसिद्ध वैद्यों, डाक्टरों, हकीमों के

गुप्त अनुभूत योग

लेखक

डा० एस० पी० मैहता

मेडिकल रिसर्च स्कालर

चौखम्भा विश्वभारती
चौक (चित्रा सिनेमा के सामने)
वाराणसी-२२१००१

मैडिकल हाउस
३६५६, कुतब रोड, दिल्ली

चतुर्थ संस्करण

मूल्य ४.०० रुपए

केवल रजिस्टर्ड मेडिकल प्रैक्टिशनर्ज़ के लिये

प्रकाशक:—
मेडिकल हाउस
३६५६ कुतब रोड देहली

Vaidyaraj Zinda Bhatji
National Ayurvedic Library
Punjabi Bagh, New Delhi-26
Call No. LX3
Book No. 1521
Acc No.

चतुर्थ संस्करण

मूल्य ४ रुपये

000128

मुद्रक—
तिलक प्रिंटिंग प्रैस, देहली

भूमिका

"संसार के प्रसिद्ध वैद्यों, हकीमों और डाक्टरों के गुप्त अनुभूत योग" का प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय संस्करण थोड़े ही समय में समाप्त हो गया। देश के कोने कोने से योग्य चिकित्सकों ने इस पुस्तक की प्रशंसा के पत्र लिखे। तीसरा संस्करण समाप्त होते ही पाठकों ने इसका नया संस्करण प्रकाशित करने पर ज़ोर दिया। अब चिकित्सकों के लाभार्थ इस पुस्तक का चतुर्थ संस्करण काफी संशोधनों के पश्चात प्रकाशित किया गया। कुछ ही समय में इसका तीसरा संस्करण भी समाप्त हो गया है। इस चतुर्थ संस्करण को काफी संशोधन करने के पश्चात प्रकाशित किया जा रहा है। इस पुस्तक में संसार के बड़े २ चिकित्सकों के ऐसे २ योग लिख दिये गये हैं जिनसे आप बड़े २ असाध्य रोगियों को स्वस्थ बना सकेंगे। आपकी आमदनी और प्रैक्टिस कई गुणा बढ़ जायेगी और आप अपने नगर के प्रसिद्ध चिकित्सक बन जायेंगे। इस पुस्तक में लिखे गये योग हज़ारों रोगियों पर सफलतापूर्वक प्रयोग किये जा चुके हैं। यह योग जो आप सैकड़ों रुपये खर्च करके भी प्राप्त नहीं कर सकते, इस पुस्तक में प्रकाशित कर दिए गये हैं। आप इनको

अपने रोगियों पर प्रयोग करके उनको स्वस्थ बना सकेंगे। इन योगों से आपके रोगियों की संख्या, आमदनी और ख्याति बहुत बढ़ जायेगी। चतुर्थ नये संस्करण में प्रसिद्ध अंग्रेज सिविल सर्जन के योग और पाकिस्तान के प्रसिद्ध हकीमों के अनुभूत योग बढ़ा दिये गये हैं।

एस० पी० मैहता
मैडिकल रिसर्च स्कालर

संसार के प्रसिद्ध वैद्यों, डाक्टरों, हकीमों के

गुप्त अनुभूत योग

चिकित्सा सम्बन्धी पुस्तकें

डाक्टर प्याज़—डा० गंगा प्रसाद नाहर। प्याज से बीसियों रोग दूर करने का वृतान्त और अनुभूत योग। १.२५ रु०।

शीरे के चमत्कार—श्री एस० पी० मेहता मेडिकल रिसर्च स्कालर। खांड और गुड़ के शीरे पर रिसर्च और शीरे से कन्सर, रसूलियों, पक्षाघात, लकवा, हाई ब्लड प्रैशर, नासूर, दिल के रोग और दूसरे बीसियों रोग दूर करने तथा बुढ़ापे को जवानी में बदलने की विधियां। एक रुपया।

नाड़ी परीक्षा—रोगी की नाड़ी को देखकर बिना पूछे उसको रोग बताकर चकित करना, नाड़ी परीक्षा पर प्रसिद्ध वैद्यों,हकीमों और डाक्टरों के अनुभव, नाड़ी परीक्षा की विभिन्न विधियां, सम्भोग, व्यायाम, मौसम और भोजनों का नाड़ी पर प्रभाव और विभिन्न रोगों में नाड़ी की गतियों में अन्तर का वृतान्त, दूसरा संस्करण। २ रुपये।

केश (बाल) रोगों की चिकित्सा—श्री एस० पी मेहता, मेडिकल रिसर्च स्कालर। बाल गिरने, बाल झड़ने, गंज, भूसी, बाल चमकदार, लम्बे, सुन्दर बनाने, समय से पहले बाल सफेद हो जाने के कारण और उनकी एलोपैथिक, वैद्यक, होमियोपैथिक दवाओं से चिकित्सा। बालों को जड़ों से काला बनाने, खाने और लगाने की दवायें, बाल झड़ने, गिरने, गंज और केश रोगों की सैकड़ों अनुभूत दवायें और योग जिनको बेचकर सैकड़ों रुपया कमा सकते हैं।

प्राकृतिक चिकित्सा के चमत्कार—लेखक श्री एस० पी० मेहता। मनुष्य शरीर से विषैले दोष निकालकर बड़े २ पुराने असाध्य रोग दूर करने की सरल विधियां, लम्बी आयु प्राप्त करने और स्वस्थ बने रहने की विधियां, उपवास, फलों और सब्जियों के रसों से बड़े २ रोगों की चिकित्सा, सूरज की किरणों, विटामिनों, खनिज और प्रोटीन खाद्यों से चिकित्सा, ऐनक छुड़ाने और बुढ़ापे तक दृष्टि तेज़ रखने के गुप्त भेद। प्राकृतिक विधियों से बड़े २ असाध्य रोग दूर करने के गुप्त भेद। २ रु०।

मेडिकल हाउस ३६५६ कुतब रोड, देहली

पाकिस्तान के प्रसिद्ध हकीमों के अनुभूत योग

सोज़ाक की दवा

देहली के प्रसिद्ध आनरेरी मजिस्ट्रेट हकीम हाजी अमजद अली इस योग को पुराने सोज़ाक में प्रयोग कराया करते थे जिससे पुराने सोज़ाक के तमाम रोगियों को आराम आ जाता। योग—छोटी इलायची, सिलखड़ी, यवक्षार हर दवा पीसकर बराबर बराबर मात्रा में मिला लें। 6 से 9 माशा दवा बकरी के दूध या दूध की कच्ची लस्सी के साथ दिन में दो बार खिलाते रहें। इससे मूत्र जल कर आना, दर्द से आना, रुक रुक कर थोड़ी मात्रा में आना, बन्द हो जाना, मूत्र मार्ग के घाव, शोथ और पीप आने को आराम आ जाता है।

अद्धसी (लंगड़ी) का दर्द

यह दर्द रोगी को चूतड़ से लेकर पाँव की एड़ी तक शियाटिक नर्व में होता है। यह बहुत भयानक रोग है और बड़ी कठिनाई से ठीक होता है। निज़ाम हैदराबाद के शाही हकीम जनाब अब्दुल वहाब अन्सारी का यह योग इस रोग की रामबाण दवा है। योग—सन्ना के पत्ते दो तोला, मीठी सोरंजा एक तोला $5\frac{1}{2}$ माशा, चित्रक सात माशा, केसर $1\frac{3}{4}$ माशा, सबको पीस छानकर आपस में मिलाकर तमाम दवाओं के बराबर खाँड मिला लें। $5\frac{1}{4}$ से 9 माशा दवा आधी रात और 4 बजे प्रातः के मध्य में खिलायें। वात की दर्दें, जोड़ों का दर्द और जोड़ों के पत्थरा जाने में भी बहुत लाभप्रद है।

नपुंसकों की दवा

देहली के प्रसिद्ध अन्धे हकीम अब्दुल वहाब अन्सारी जो वर्षों तक निजाम हैदराबाद के शाही हकीम रहे और जिनकी गणना देहली के प्रसिद्ध हकीमों में थी। वह उन जवानों, बूढ़े पुरुषों को खिलाया करते थे जिनकी मर्दाना शक्ति बिल्कुल समाप्त हो चुकी थी। इसको खिलाने से वीर्य अधिक पैदा होता, गाढ़ा हो जाता और वीर्यकीट ताकतवर हो जाते हैं। दुबले और कमजोर पुरुष मोटे ताजे हो जाते और उनका रंग लाल हो जाता है। योग—मुर्गी के एक अण्डे में छेद करके तमाम सफेदी और ज़र्दी निकाल लें। अब विशुद्ध घी, गाजर का रस, प्याज़ का रस उस खाली अण्डे में भरकर आपस में मिलाकर खूब फैंटकर और गर्म करके बिना कुछ खाये रोगी को 40 दिन तक पिलाते रहें। रोगी को छाछ, सिरका, दही और तमाम खट्टी वस्तुओं से परहेज़ करायें। रोगी को बादाम, काजू, पिस्ता आदि अधिक खिलायें। इन दिनों रोगी स्त्री के पास न जाये। इसके प्रयोग से बूढ़े और जवान पहलवान बन जाते हैं, वज़न और मर्दाना शक्ति बढ़ जाती है।

क्षय रोग की दवा

हकीम फरीद अहमद अब्बासी भूतपूर्व प्रिंसिपल वैद्यक तथा यूनानी कालेज देहली जो पाकिस्तान के सबसे बड़े हकीम थे। इस योग से क्षय के सैंकड़ों रोगी स्वस्थ बना चुके हैं। योग—काली मिर्च, छोटी इलायची, शुद्ध भिलातक, सत गिलो। सबको समभाग मिलाकर पीस लें। एक रत्ती दवा 10 तोला बकरी के दूध के साथ खिलाना शुरू करें और 2 तोला दूध प्रतिदिन बढ़ाते जायें। इससे क्षय रोग का ज्वर, पुराना ज्वर, वज़न कम हो जाना, खाँसी, भूख की कमी आदि कष्ट दूर होकर रोगी का ज्वर दूर हो जाता और उसका वज़न तथा शक्ति बढ़ जाती है। सत गिलो असली प्रयोग करें। भिलावे शुद्ध करने में बड़ी सावधानी की ज़रूरत होती है।

तिला वाजिद अली शाह

अवध के प्रसिद्ध नवाब वाजिद अली शाह विषयवासना में अपने समय में बहुत प्रसिद्ध थे। उनके महल में सैकड़ों स्त्रियां रहती थीं। वह रात दिन मर्दाना शक्ति की दवायें खाते थे। यहाँ उनके शाही हकीम के तिले का प्रसिद्ध योग लिखा जाता है जिससे पुरुष इन्द्री में तीव्र शक्ति आ जाती है। इसको मालिश करते रहने से मनुष्य सैकड़ों स्त्रियों को काबू में रख सकता है।

योग—रीछ की चर्बी, शेर की चर्बी, साँडे की चर्बी, चिड़े के सिर का मग्ज़, मूली के बीज, जंगली कबूतर की सफेद बीट। हर दवा बारीक पीस कर समभाग लेकर 5 तोला तिलों के तेल में खूब घोटें, यहाँ तक कि तमाम दवायें मक्खन की भाँति नर्म हो जायें। दवा तैयार है। चौड़े मुंह की ढक्कन वाली शीशी में डालकर रख लें। रात को सोते समय 4-5 रत्ती दवा इन्द्री पर प्रतिदिन मालिश करके सो जाया करें।

पायोरिया की दवा

एक प्रसिद्ध यूनानी दवाखाने ने यह दवा बेचकर हज़ारों रुपया कमाया। इस मंजन की ख्याति तमाम देश में फैली हुई थी। मसूड़ों से पीप और रक्त आना, मुंह से बदबू आना, मसूड़े पिलपिले हो जाना और उनके कारण दाँत हिलने या सड़ने लग जाने के लिये यह बहुत ही चमत्कारी मंजन है। इससे तमाम कष्ट दूर हो जाते हैं। पायोरिया के सैकड़ों रोगी जिनको डाक्टरों ने तमाम दाँत निकलवा देने को कहा था उनको भी इस योग से आराम आ जाता है। योग—कत्था $1\frac{1}{4}$ तोला, फिटकरी खिल की हुई 6 माशा, नीला थोथा खिल किया हुआ 3 माशा, माजू, अनार के फूल, नीम के पत्ते इनको जलाकर बनी राख 6-6 माशा। सबको बारीक पीस और कपड़े से छानकर प्रतिदिन मसूड़ों पर कई मास तक मलते रहें।

गर्भपात की चमत्कारी औषधि

महाराजा जम्मू काश्मीर के शाही हकीम का यह योग हज़ारों स्त्रियों पर आज़माया जा चुका है। जिन स्त्रियों को बार बार गर्भपात हो जाता है उनको इस दवा को खिलाते रहने से गर्भपात का डर नहीं रहता। यदि रक्त जारी हो चुका हो, दर्दें शुरू हो चुकी हों तो इस दवा को खिलाने से यह कष्ट दूर हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त यह दवा फोड़े, फुंसी, खारिश, मुंह के कील, मुहासे और दूसरे चर्म रोगों को भी दूर करती है। योग–लाल चन्दन, सफेद चन्दन, नीम के पत्ते, मेंहदी के पत्ते, मुलहठी के पत्ते, मजीठ, कचूर, गेरू मिट्टी सब दवाओं का बारीक चूर्ण समभाग। सबको भली प्रकार मिलाकर रख लें। एक से दो रत्ती दवा प्रातः समय पानी के साथ खिलाते रहें।

पक्षाघात और वात रोगों का तेल

यह तेल एक साधु का अनुभूत योग है जिसकी मालिश करते ही थोड़ी देर में रोगी के कष्ट कम होने लग जाते हैं। यह तेल पक्षाघात, लकवा, किसी अंग का मारा जाना, जोड़ों का पत्थरा जाना और भली प्रकार गति न कर सकना, जोड़ों का सूज जाना और उनमें दर्द होना, कम्पन, किसी अंग का सूख जाना, तमाम वात और स्नायु रोग दूर हो जाते हैं।

योग–आक के पत्त, महानिम्ब (बकायन) के पत्ते, अरण्ड के पत्ते, निरगुन्डी (सम्भालू) के पत्ते, सुहाँजना के पत्ते, काले धतूरा के पत्ते, थोहर के पत्ते 1–1 तोला। कूटकर एक सेर तिलों के तेल में बहुत धीमी आग पर जलायें और छानकर रख लें। थोड़ा सा यह तेल गर्म करके पीड़ित अंग पर मालिश करके उसके ऊपर पुरानी रुई बाँध दें।

कष्टार्तव की दवा

जिन स्त्रियों को प्रदर सख्त दर्द से आता हो। प्रदर शुरू होने से

पूर्व और प्रदर के समय तमाम शरीर में कष्ट हो जाते हों। प्रदर कम मात्रा में काले रंग का बदबू वाला, काफी देर से, दर्द और कष्ट से आता हो तो इस साधारण योग से आराम आ जाता है। योग– अमलतास का गूदा एक तोला, गुड़ एक तोला, केसर 3 माशा। सबको पीसकर चने के बराबर गोलियाँ बना लें। 1–1 गोली प्रातः सायं गर्म पानी से खिलायें।

पुरानी कब्ज़ की दवा

कब्ज़ रहने से मनुष्य को कई रोग हो जाते हैं। यह दवा पुरानी कब्ज़ को दूर करती है। इसको खाते रहने से अन्तड़ियों की गति तेज़ हो जाती है। पाखाना खुलकर आ जाता है। भूख लगती है। खट्टे डकार, पेट दर्द, पेट फूल जाना, पेट में गैस चलना, पेट बढ़ जाना आदि रोग दूर हो जाते हैं।

योग – सुहागा 7 माशा, अजवायन खुरासानी $8\frac{3}{4}$ माशा, काली मिर्च $3\frac{1}{2}$ माशा, ऐलवा 4 तोला 8 माशा। सबको पृथक पृथक पीस कर कंवार गन्दल (घृतकुमारी) के गाढ़े रस की सहायता से चने के बराबर गोलियाँ बना लें। एक से चार गोली तक सोते समय या भोजन के बाद दोनों समय पानी के साथ खिलायें।

अंग्रेज़ सिविल सर्जन के अनुभूत योग

डा० सर विलियम मूर पिछली शताब्दी में बम्बई सरकार के सर्जन जनरल थे। आप महारानी विक्टोरिया के आनरेरी फिजिशन भी थे। आपकी गणना उस समय लन्दन और योरुप के बड़े बड़े डाक्टरों में की जाती थी। यहाँ आपके कुछ अल्पमूल्य अनुभूत ऐलोपैथिक योग लिखे जाते हैं जिनकी पहली मात्रा से ही घन्टों में रोग घटने लग जाता है।

1–सोडा बाई कार्ब	2 ड्राम
टिंक्चर रिहाई	½ औंस
टिंक्चर ज़िंजर	1 ड्राम
स्प्रिट क्लोरोफार्म	1 ड्राम
पानी	6 औंस

विधि अनुसार मिक्सचर बना लें। दो बड़े चम्मच दिन में तीन बार पिलायें।

पीलिया (पाँडू रोग Jaundice) की बहुत सफल दवा है।

2–मैगनेशिया बाई कार्ब	15 ग्रेन
आयल एनीसाईड	2 बूंद
पानी	1½ औंस

विधि अनुसार मिक्सचर बना लें। एक छोटा चम्मच समय समय पर 6 मास से 1 वर्ष के बच्चे को पिलायें। पेट फूलना, आमाशय में गैस पैदा होना, गर्भवती को प्रातः समय कै आना और जी मिचलाना में बहुत लाभप्रद है। 6 मास से कम आयु के बच्चों को आधे चम्मच की मात्रा में दें।

3–सोडा सल्फेट	6 ड्राम
कोनीन	20 ग्रेन
आयरन सल्फेट (हीरा कसीस)	15 ग्रेन
डिस्टिल्ड वाटर या उबालकर ठण्डा किया हुआ पानी	8 औंस

सबको मिलाकर मिक्सचर बना लें। मात्रा–दो बड़े चम्मच हर चार घण्टे वाद पिलायें। शरीर को शक्ति देने, कब्ज़ दूर करने वाली दवा है। प्लीहा (तिल्ली) के रोगों को दूर करती, पेट के कीड़ों को मारती और प्रदर बन्द हो जाना, रुक जाना, कम मात्रा में और देर से आने में बहुत लाभप्रद है। रक्तअल्पता को दूर करके चेहरे को लाल बनाती और वज़न बढ़ाती है।

4–सोडा सल्फेट	6 ड्राम
सल्फयूरिक एसिड डाईल्यूट	1 ड्राम
गुलाब के फूलों का इन्फ्यूज़न	8 औंस

मिक्सचर बनायें। हर चार घण्टे बाद दो चम्मच दवा पिलाते रहें। यह ठण्डी, कब्ज़ कुशा परन्तु माँसपेशियों को सिकोड़ने वाली तथा दस्तों को बन्द करने वाली दवा है। यह गर्भपात, नकसीर, प्रदर बहुत अधिक मात्रा में आना (Menorrahagia) और वह सब रोग तथा कष्ट जो बहुत अधिक रक्त बहने से पैदा हो गये हों में बहुत अनुभूत है।

5–केलोमल	5 ग्रेन
कम्पाउण्ड जैलप पाउडर	1 ड्राम

भली प्रकार मिलाकर एक पुड़िया बना लें। यह एक तेज़ जुलाब है। इसके खा लेने से रोगी को पानी जैसे पतले दस्त आते हैं। पेट और शरीर के विभिन्न भागों में पानी पड़ जाने पर यह जुलाब विशेष रूप में दिया जाता है।

6–बैन्ज़ोएक एसिड	1 ड्राम
कार्बोनेट आफ अमोनिया	1 ड्राम
पानी	8 औंस

मिक्सचर बना लें। दो बड़े चम्मच दिन में तीन बार पिलायें। यह दवा पुराने मूत्राशय प्रदाह (Cystitis), मूत्र सम्बन्धी कई रोग और जोड़ों के दर्द तथा शोथ में रामबाण है।

7–बाई कार्बोनेट आफ पोटाश $1\frac{1}{2}$ ड्राम को 8 औंस पानी में घोल लें। मात्रा—दो बड़े चम्मच दिन में तीन बार पिलायें। यह दवा ज्वर के तापमान को तुरन्त गिरा देती है। मूत्र के कई रोगों में भी लाभप्रद है। चर्म रोग में इसको रुई की फुरेरी से लगाने पर कई बार कष्ट तुरन्त कम हो जाता है।

8–सल्फयूरिक एसिड डाईल्यूट	2 ड्राम

टिंक्चर जिज़र	1 ड्राम
पानी	8 औंस

मिक्सचर बनायें। दो बड़े चम्मच हर 4 घण्टे बाद पिलायें। यह दवा गर्भस्राव, फेफड़ों से रक्त आना, अजीर्ण, आमाशय और अन्तड़ियों के रोग जैसे भूख की कमी, खट्टे डकार, पेट में गैस आदि में बहुत ही लाभकारी है। दवा पीने के बाद मुंह को पानी से गरारे करके साफ कर लेना अति आवश्यक है।

9–डाईल्यूट सल्फयूरिक एसिड	25 मिनिम
टिंक्चर ओपियम	8 मिनिम
पानी	1 औंस

यह एक मात्रा है। दिन में ऐसी तीन मात्रायें पिलायें। फेफड़ों से रक्त आना, आमाशय से रक्त आना, दस्त आना और हैज़े के दस्तों में बहुत ही अनुभूत है। 6 मास के बच्चे को ½ छोटा चम्मच, एक वर्ष के बच्चे को एक छोटा चम्मच दवा प्रति बार दें। इस दवा के एक छोटे चम्मच में एक बूंद टिंक्चर ओपियम होती है। जिस दवा में अफीम का कोई मिश्रण हो उसको बच्चों को विशेष सावधानी से देना जरूरी है।

10–स्प्रिट अमोनिया ऐरोमैटिक	2 ड्राम
स्प्रिट नाईट्रस ईथर	4 ड्राम
टिंक्चर जिंजर	1 ड्राम
पानी (डिस्टिल्ड वाटर)	5½ औंस

मिक्सचर बना लें। मात्रा—2 बड़े चम्मच हर दूसरे या तीसरे घण्टे बाद दें। जब रोगी दमा के दौरे से तड़प रहा हो तो इसकी एक ही मात्रा से दौरे के कष्ट दूर हो जाते हैं और निरन्तर प्रयोग से रोग घट जाता है। यह दवा पुरानी ब्रोंकाईटिस में भी बहुत लाभप्रद है। यह दवा फेफड़ों की वायु प्रणालियों में जमी हुई कफ को पतला करके उसको आसानी से निकाल देती है। खाँसी में रोगी की

बलगम निकलकर रोग कम हो जाता है। जुकाम में भी लाभप्रद है।

11–कार्बोनेट आफ मैगनेशिया	25 ग्रेन
पीपरमेंट आयल	2 बूंद
पानी	1 औंस

मिक्सचर बनायें। यह दवा छोटे बच्चों की काली खाँसी में बहुत ही लाभप्रद है। एक वर्ष के बच्चे को एक छोटा चम्मच दवा दिन में 2-3 बार दें। दवा देने से पहले शीशी को भली प्रकार हिला लेना जरूरी है। गर्भवती की कै और जी मिचलाने में इस दवा की पूरी मात्रा पिला दें।

12–सल्फेट आफ आयरन (हीरा कसीस)	12 ग्रेन
डाईल्यूट सल्फयूरिक एसिड	1 ड्राम
पानी	6 औंस

मिक्सचर बनायें। मात्रा—दो बड़े चम्मच दिन में तीन बार पिलायें। यह अल्प मूल्य योग शरीर में नया रक्त पैदा करता है। पीत मुख मनुष्यों का रंग गुलाबी हो जाता है। वज़न और शक्ति बढ़ जाती है।

13–सोडा बाई कार्ब एक ड्राम लेकर आठ औंस डिस्टिल्ड वाटर में घोलकर रख लें। यह लोशन खुजली, ऐक्ज़ीमा और दूसरे चर्म रोगों में बहुत लाभप्रद है। इसका गर्म पानी में लोशन बनाकर नाक और कान के रोगों में सिरिंज करने से दर्द, पीप, सूजन को आराम आ जाता है। कीड़े मर जाते हैं।

14—रैड आयोडाइड आफ मर्करी	16 ग्रेन
आलिव आयल (जैतून का तेल)	½ औंस
वैसलीन	½ औंस

वैसलीन और आलिव आयल को धीमी आग पर पिघलाकर खरल में डालकर रैड आयोडाइड आफ मर्करी मिला और घोटकर मरहम बना लें। बढ़ी हुई प्लीहा (तिल्ली Derbyshire Neck) जिसको

घेघा या गिल्हड़ कहते हैं पर मालिश करने से आराम आ जाता है।

15 -	टिंक्चर ओपियम	2 ड्राम
	कार्बोलिक एसिड	20 ग्रेन
	आलिव आयल	1 औंस
	वैसलीन	1 औंस

धीमी आग पर पिघलाकर नीचे उतारकर भली प्रकार घोटकर ठण्डा कर लें। गन्दे सड़े हुये घाव जिनमें सख्त दर्द होती हो और पीप आती हो पर लगाने से दर्द तुरन्त दूर हो जाती और घाव शीघ्र भर जाते हैं।

16 -	ज़िंक सल्फेट	20 ग्रेन
	टिंक्चर ओपियम	30 बूंद
	गर्म पानी	8 औंस

सबको भली प्रकार मिलाकर स्त्री के गुप्तांगों में एनीमा करते रहने से श्वेत प्रदर (ल्यूकोरिया), योनिस्राव और गर्भाशय रोगों को आराम आ जाता है।

सरकारी अस्पतालों के अनुभूत योग

वह योग जो सरकारी अस्पतालों में लाखों रोगियों पर सफलता से प्रयोग किये जा रहे हैं।

1–सीरप टोलू	$\frac{1}{2}$ ड्राम	सीरप सिली	$\frac{1}{2}$ ड्राम
इन्फ्यूज़न आफ सनेगा	4 ड्राम		

इसको थोड़े पानी में मिलाकर दिन में तीन बार पिलायें। पुरानी खाँसी और पुरानी ब्रोंकाईटिस में अनुभूत है।

2–कैम्फर	$\frac{1}{2}$ ग्रेन	ऐक्सट्रेक्ट वेलाडोना	$\frac{1}{8}$ ग्रेन
कोनीन सल्फेट	1 ग्रेन		

सब दवाओं को एक कैपसूल में भर लें। हर दो घण्टे बाद 1-1 कैपसूल 4 बार खिलायें। नया तीव्र जुकाम और नाक की भीतरी

झिल्ली की शोथ के आरम्भ में पतले पदार्थ को तुरन्त खुश्क कर देता है।

3–पोटासियम ब्रोमाइड 3 ग्रेन   टिंक्चर वेलाडोना 3 बूंद
सीरप टोलू 10 बूंद   एक्वा क्लोरोफार्म 1 ड्राम

ऐसी एक मात्रा दिन में 3 बार पिलायें। वच्चों की काली खाँसी की चमत्कारी दवा है। पहली ही मात्रा से रोग घटने लग जाता है। (रायल चिलड्रन हास्पिटल मानचेस्टर)

4-टिंक्चर वेलाडोना 1 ड्राम   टिंक्चर ओपियम 1 ड्राम
ग्लीसरीन कुल 1 औंस

सबको आपस में मिला लें और मामूली गर्म करके कुछ बूंद कान में टपकायें। कान दर्द को तुरन्त आराम आ जाता है।

5–सोडियम बोरेट 10 ग्रेन   सीरप जिंजर 1 ड्राम
एक्वा क्लोरोफार्म 1 औंस

ऐसी एक मात्रा दिन में 3 बार पिलाते रहें। मिर्गी के दौरों को तुरन्त आराम आ जाता है। प्रसिद्ध अंग्रेज डाक्टर बेकर इसको हजारों रोगियों पर आजमा चुके हैं।

6–बोरैक्स 1 ड्राम   टिंक्चर मिरर्ह 2 ड्राम
ग्लीसरीन 1 औंस

रुई की फुरेरी से मुंह के अन्दर लगायें। मुंह पकने और जीभ के छालों में वहुत अनुभूत है।

7–पोटासियम ब्रोमाइड 10 ग्रेन, सोडा फेनो बारबीटीन $\frac{1}{2}$ ग्रेन
टिंक्चर वलेरियन एमोनीएटा 15 मिनिम, लाईकर आरसेनी
कैलिस 2 मिनिम, एक्वा मैन्थापिप कुल $\frac{1}{2}$ औंस।

ऐसी एक मात्रा दिन में दो बार पिलायें। जब किसी दुख या चिन्ता के कारण नींद न आती हो या दिल अधिक धड़कने लग जाये या डर और चिन्ता से दस्त आने लग जायें। हिस्टेरिया के दौरे, हाई ब्लड प्रैशर और रजोनिवृति विकारों में वहुत अनुभूत है। लैफ्टीनैन्ट कर्नल इलाही बक्स प्रिंसिपल मेडिकल कालिज लाहौर इसको हजारों

रोगियों पर आजमा चुके हैं।

8–फीनोल 12 ग्रेन कैलेमन लोशन 4 औंस

भली प्रकार मिला और हिलाकर चर्म पर लगायें। इससे हर प्रकार की खुजली को आराम आ जाता है। छपाकी (पित्ती उछलना) में भी लाभप्रद है।

9–सीरप कैलसियम ग्लूकोनेट 2 औंस ओस्टेलीन 1 ड्राम
सीरप ग्लीसरो फासफेट 2 औंस

सबको मिला लें। एक छोटा चम्मच दवा दिन में तीन बार पिलायें। स्नायु (नर्वस) की कमज़ोरी, दिमागी कमजोरी और इसके कारण पैदा होने वाले रोगों की रामबाण दवा है।

10—सीरप फ़ाई फासफास $\frac{1}{2}$ ड्राम, कैलसियम हाईपोफासफाईट 1 ग्रेन, सादा शर्बत 1 ड्राम।

यह मात्रा एक वर्ष के बच्चे के लिये है। यह दवा बच्चों को शक्ति देकर उनको मोटा ताज़ा बनाती है। कमज़ोर और नर्म हड्डियों को मज़बूत बनाती है। भूख लगाती, रक्त और वज़न बढ़ाती है।

बिच्छू काटे की सफल दवा

कविराज बामनदास कलकत्ता के प्रसिद्ध विज्ञापनदाता तीस वर्षों से इस दवा को विज्ञापनों के द्वारा बेच रहे हैं। लाभ भी अच्छा करती है। रसायनिक परीक्षण करने पर इस दवा में निम्नलिखित वस्तुयें पाई गईं।

योग—नौशादर 1 छटांक, पोटासियम परमेंग्नेट $\frac{1}{2}$ छटांक। दोनों को अलग अलग पीसकर बारीक चूर्ण बनाकर शीशियों में भर दें। डंक पर दो तीन रत्ती डालकर कुछ बूंदें पानी की डालें। दर्द और विष का असर तुरन्त दूर हो जायेगा। पोटासियम परमेंग्नेट लाल दवा है जो तमाम अंग्रेजी दवा बेचने वालों के यहां से बहुत सस्ती प्राप्त हो सकती है। इस दवा को कुओं में पानी के कीड़े मारने के लिये डाला

जाता है।

आमाशय के रोगों की औषधि

एक पंसारी जीरे में कुछ दवायें मिलाकर बेचा करता है। इस जीरें के कारण वह कई मकान बना चुका है। यह जीरा पेट का अफारा, अजीर्ण, भूख का न लगना, प्लीहा इत्यादि रोगों के लिये रामबाण और स्थायी लाभ करता है।

योग—जीरा सफेद 1 छटाँक। शुद्ध सिरका दस छटाँक, तेज़ाब गन्धक 1 तोला, काला नमक 1 छटाँक, तमाम दवाओं को चौड़े बर्तन में डालकर बन्द करके तीन चार दिन तक पड़ा रहने दें। बाद में जीरे को छाया में सुखा लें। चार-चार रत्ती खाने से आमाशय के सारे रोग दूर हो जाते हैं।

प्लीहा (तिल्ली) की औषधि

यह औषधि कलकत्ते की एक कम्पनी तैयार करके बेच रही है। रेलवे स्टेशनों पर इस दवा के बड़े बड़े साईन बोर्ड लगे हुये हैं। तीन रुपये में शीशी बेची जाती है किन्तु लागत चार आने से भी कम आती है। इस दवा के कुछ दिनों के सेवन से बढ़ी हुई तिल्ली ठीक हो जाती है।

योग—कागजी लीमू का रस 3 छटाँक, शुद्ध नौशादर 1 तोला, घीक्वार का रस 1 छटाँक। तीनों को भली भाँति मिला लें। मिल जाने पर कपड़े से छान लें। एक छोटा चम्मच दवा खाना खाने के बाद प्रातः और सायंकाल दें।

दर्दों की औषधि

आजकल अंग्रेजी दवायें बेचने वाले सिर दर्द और शरीर के विभिन्न अंगों में दर्दों के लिये सफेद रंग की टिकियाँ बेचते हैं। एक गोली खा लेने से घण्टे दो घण्टे में आराम हो जाता है।

एस्प्रीन (Aspirin)	4 भाग
फैनसटीन (Phenacetin)	2 भाग
कैफीन साइट्रेट (Caffein Citrate)	1 भाग

इनकी मशीन की सहायता से दो तीन रत्ती की टिकियाँ तैयार कर ली जाती हैं। सिर दर्द या किसी प्रकार का दर्द कहीं भी हो, एक या दो गोली ताजे पानी के साथ दें। इस प्रकार की दवायें बार बार सेवन करना ठीक नहीं होता क्योंकि लगातार सेवन से हृदय पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

चर्म रोगों के लिये रामबाण मरहम

कोढ़, खारिश, खुजली, दाद, चम्बल, फोड़े फुंसी की मरहमें जनता में सफलतापूर्वक बेची जा सकती हैं। मरहम को टीन या गत्ते की डिब्बियों या चौड़े मुंह की शीशी में डालकर खूबसूरत लेबल लगाकर बेचें।

इन रोगों के लिये नीचे लिखी मरहम रामबाण है।

चालमोगरा का तेल	1 भाग
हार्ड पैराफीन (एक प्रकार का मोम)	4 भाग
सफेद वैसलीन	5 भाग

तीनों दवाओं को बर्तन में डाल कर बहुत ही धीमी आग पर पिघलाकर आपस में मिलायें और शीशियों या डिब्बियों में भर लें।

दर्दों का तेल

लाहौर मच्छीहट्टा में एक पहलवान दर्दों की चिकित्सा करता था। वह लकवा, गठिया, वायु के रोगियों के शरीर पर एक गाढ़े तेल की मालिश करता था जिससे दो चार दिन में रोगी का दर्द दूर हो जाती थी। एक एक रोगी से वह पांच से दस रुपये तक प्राप्त कर लेता। यह गुप्त भेद वर्षों के कठिन परिश्रम के बाद उसके एक नौकर द्वारा प्राप्त किया गया।

एक पाव तारपीन के तेल में ग्राधी छटांक साबुन को बारीक कतर कर डाल दें ग्रौर एक तोला कपूर भी मिलाकर खूब घोट लें जिससे तमाम दवायें ग्रच्छी तरह मिल जायें। इसे दर्द की जगह पर गर्म करके मालिश करें। पेट की दर्द की दशा में पेट पर मालिश की जाये।

खाँसोलीन बनाने की विधि

खाँसोलीन, खाँसोल, कफसोल ग्रौर इसी प्रकार की खांसी की ग्रौषधि प्रत्येक घर में बेची जा सकती हैं। निम्नलिखित ग्रनुभूत योग से पुरानी से पुरानी खाँसी, सर्दी की खाँसी, गले में काँटे चुभना इत्यादि कुछ दिनों में दूर हो जाते हैं।

मुलेहठी, बंशलोचन ग्रसली, काकड़ासिगी, खांड [प्रत्येक एक एक तोला, पिपरमेंट क्रिस्टल ग्राधा माशा। तमाम दवाग्रों को ग्रलग ग्रलग कूट कर कपड़े में से छानकर ग्रापस में मिलायें ग्रौर खरल में डालकर पिपरमेंट मिलाकर गोंद मिले पानी के छींटे देते ग्रौर रगड़ते जायें। ग्रच्छी प्रकार मिल जाने पर मशीन की सहायता से खूबसूरत चपटी टिकियाँ तैयार कर लें। ये गोलियाँ चूसने से सूखी व गीली खाँसी को ग्राराम हो जाता है।

दाँत निकालने का बिजली का फीता

इसके विज्ञापन भी ग्रापने समाचार पत्रों में पढ़े होंगे। बच्चों के गले में यह फीता बाँध देने से उनकी दाँत निकलने की पीड़ा तथा कष्ट कम हो जाते हैं ग्रौर दाँत ग्रासानी से निकल ग्राते हैं। तांबे ग्रौर जस्ते की तारें लें ग्रर्थात तीन ताँबे ग्रौर तीन जस्ते की तारें लेकर उनको इकट्ठी करके रस्सी की तरह बल दे लें। तब उनको शनील (मखमल) के कपड़े में डालकर ग्रौर सीकर फीता बना लें। दोनों प्रकार की तारों को मिलाने से इनसे बिजली की लहरें पैदा होती हैं ग्रौर दाँत ग्रासानी से निकल ग्राते हैं।

भीमसेनी काफूर

इस दवा के नाम से आप भली भाँति परिचित होंगे। इसे समस्त नेत्र रोगों के लिये अक्सीर माना जाता है और नेत्रों की कोई दवा या सुरमा इसकी बराबरी नहीं कर सकता। आयुर्वेदिक ग्रंथों में इस सुरमे की बहुत प्रशंसा की गई है।

योग—सफेद चन्दन, शीतल चीनी, शोरा, नौशादर प्रत्येक चार-चार तोला, कपूर चार तोला, तमाम दवायें अलग-अलग पीसकर खरल में डालकर हरे केले की जड़ के रस में आठ घंटे तक रगड़ते रहें यहाँ तक कि केले का रस सूख कर टिकियाँ बनने के योग्य हो जाये। इसे काँसी के चौड़े बर्तन में रखकर इस पर काँसी का कटोरा या कोई दूसरा बर्तन उलटा दें और जोड़ों पर गीला कपड़ा रखकर उस पर गूंधा हुआ आटा अच्छी तरह लगा दें ताकि दोनों बर्तन आपस में जुड़ जायें और किसी भी जगह से भाप निकलने का भय न रहे। अब इस बन्द बर्तन को चूल्हे पर रख कर एक बड़ा दिया लेकर उसमें काफी मोटी रुई की बत्ती और घी डालकर जलायें। चार पाँच घंटे लगातार घी का दीपक जलता रहे। इसके बाद बर्तन को धीरे धीरे ठण्डा हो जाने दें। ठण्डा हो जाने पर दोनों बर्तनों को अलग कर लें और ऊपर वाले बर्तन के अन्दर लगी हुई सफेद दवा को चाकू से खुरच कर सुरक्षित रख लें। यही भीमसेनी कपूर है जिसकी प्रशंसा में आयुर्वेदिक ग्रन्थ भरे पड़ हैं। आँखों से पानी आना, लाली, कुकरे, फोला, मोतियाबिन्द की आरम्भिक दशा, दृष्टि की निर्बलता के लिये रामबाण है। सुरमे की भाँति लगाया जाता है।

जादू का तेल

एक देहाती हकीम इस तेल से असंख्य रोगों की चिकित्सा करते थे। इस तेल के कारण बहुत दूर दूर के रोगी उस हकीम के पास आते थे और इस दवा को जादू का तेल समझते थे। बनाने में आसान और

बहुत सस्ता है।

विधि—ताजे तम्बाकू के नर्म नर्म पत्ते लेकर कूटकर रस निकालकर कपड़े से छान लें। इस रस में आधा तिलों का तेल मिलाकर धीमी धीमी आँच पर पकायें यहाँ तक कि तम्बाकू का तमाम रस जल जाये और केवल तेल बाकी रह जाये। अब इस तेल को छानकर शीशियों में भर लें।

लाभ—(1) यह तेल सिर में लगाने से जुएं एक दो बार के प्रयोग से ही मर जाती हैं।

(2) नासूर का मुंह चौड़ा करके इस तेल को घाव के अन्दर टपकायें और बत्ती बनाकर घाव में रखें। धीरे धीरे घाव भरता जायेगा।

(3) जानवरों के घाव में जिनमें कीड़े पड़ गये हों उन पर चुपड़ दें।

(4) दांत में कीड़े के कारण दर्द हो तो रुई की फुरेरी तर करके खोड़ में भरें।

(5) दर्द के स्थान पर मालिश करें।

बहरापन की औषधि

हकीम नूरूदीन भैंरवी बड़े बड़े राजों महाराजों की चिकित्सा किया करते थे। बहरापन के लिये आपका योग बहुत सफल और अनुभूत योग है।

योग—लहसुन लेकर उसकी फाँके (फाड़ियाँ) अलग अलग करके छिलका दूर कर लें। 20-25 छिली हुई फाड़ियाँ लेकर कड़वे बादामों का तेल एक छटाँक में डालकर आग पर रखें यहाँ तक कि लहसुन की फाड़ियाँ जलकर काली हो जायें। तब छानकर शीशी में डाल लें। यह तेल दो तीन बूंद मामूली गर्म करके कान में डाला करें। लगातार प्रयोग से बहरापन (सुनाई न देना) दूर हो जाता है।

देशी ग्लूकोज़

कमज़ोर रोगियों को डाक्टर ग्लूकोज़ सेवन कराते हैं किन्तु हज़ारों भारतीय इसे खरीद नहीं सकते। निम्नलिखित दवा लाभ की दृष्टि से ग्लूकोज़ की बराबरी करती है। रोगी की दुर्बलता को दूर करती, उसकी पाचन शक्ति बढ़ाती है। हृदय, मस्तिष्क व यकृत को शक्ति देती है। देहली के एक प्रसिद्ध चिकित्सक जिनके यहाँ सैकड़ों रोगी प्रतिदिन आते हैं, अपने रोगियों को यह दवा टानिक के रूप में देते हैं।

योग—चाँदी के वर्क, वंशलोचन (तबाशीर) असली, छोटी इलायची के बीज प्रत्येक बराबर बराबर, मिश्री दो गुना, खरल में डालकर दो तीन घन्टे तक घोटते रहें यहाँ तक कि मैंदे की तरह बारीक हो जाये। 1–2 माशा दवा थोड़ी थोड़ी देर बाद रोगी को पानी, दूध या मक्खन में मिलाकर या वैसे ही खिलाते रहें।

शर्बत फौलाद जामुनी

यह शर्बत यकृत की कमजोरी, आमाशय व अंतड़ियों के रोग, रक्त अतिसार और रक्त की कमी के लिये सर्वश्रेष्ठ है। साथ ही शरीर में नवीन शक्ति व साफ रक्त पैदा करके वज़न बढ़ाता है। भूख लगाता है।

योग— ताजा जामुन का रस दो सेर, फौलाद का बारीक चूर्ण एक छटाँक, त्रिफला (हरड़, बहेड़ा, आँवला) एक छटाँक, कासनी दो तोला, ब्रह्मी बूटी 15 तोला, इलायची 2 तोला, त्रिकुटा पाँच तोला, बहमन लाल और बहमन सफेद पाँच पाँच तोला।

विधि — जामुन का रस किसी रोगनी मटके या मर्तबान में डालकर फौलाद चूर्ण भी मिला दें। मुंह बन्द करके पड़ा रहने दें। प्रतिदिन एक लकड़ी से लोह चूर्ण को अच्छी तरह हिला दिया करें। 30-35 दिन में लोह चूर्ण जामुन के रस में बिल्कुल घुल जायेगा। अब

बाकी वस्तुयें कूट छानकर मिलाकर बारह सेर पानी मिलाकर दस बोतलें अर्क खींच लें। अब इस अर्क में डेढ़ गुना खाँड मिलाकर धीमी आँच पर पका लें जब तार निकलने लगे तो उतार लें। इस शर्बत में खाने का मीठा लाल रंग मिला देने से शर्बत बहुत खूबसूरत हो जायेगा। आधी छटाँक शर्बत पानी या दूध में मिलाकर दिन में एक या दो बार लें।

तिल्ली, वायु गोला की सरल चिकित्सा

आक के मुलायम पत्ते और सेन्धा नमक बराबर बराबर वज़न में लें। आक के पत्तों को साफ पानी से धोकर पोंछ लें। सेन्धा नमक को पीसकर कपड़े में छान लें।

अब मिट्टी के दो प्याले एक ही आकार के लें। एक प्याले में आक का पत्ता रखकर उस पर नमक का चूर्ण छिड़क दें। इसके बाद दूसरा पत्ता रखकर उसी तरह नमक छिड़क दें। इसी प्रकार एक दूसरे के ऊपर पत्ते और नमक रखते जायें। यहाँ तक कि दोनों वस्तुयें समाप्त हो जायें। अब इसके ऊपर दूसरा प्याला उल्टा रखकर जोड़ों पर गीला कपड़ा फैलाकर चारों ओर गीली मिट्टी पोत दें जिससे दोनों प्याले जुड़ जायें। जोड़ कहीं पर भी नंगा न रहने पाये। सूख जाने पर 15-20 उपले ऊपर नीचे रखकर वायु से सुरक्षित स्थान में आग लगा दें। जब आग बुझ जाये और प्याले अपने आप ठण्डे हो जायें तो जली हुई दोनों वस्तुओं को निकाल कर खरल में डालकर सुरमें की तरह रगड़ लें और शीशी में भरकर रख लें।

आयुर्वेदिक और यूनानी ग्रन्थों में इस योग की अतीव प्रशंसा की गई है। बढ़ी हुई तिल्ली, पेट में वायुगोला हो जाना, आमाशय के रोग जैसे खट्टे डकार आना, भोजन न पचना, भूख न लगना, पेट का दर्द आदि तुरन्त दूर हो जाते हैं। हैजे तक में लाभदायक है।

मात्रा—1–2 माशा तक अर्क सौंफ या खट्टी छाछ के साथ दें।

वृक्कशूल के लिए रामबाण औषधि

सन् 1928 में कश्मीर की यात्रा के समय शंकराचार्य मन्दिर की पहाड़ी पर एक साधु से यह वस्तु प्राप्त हुई। देखने में मामूली राख है पर आज़माने पर आप इस एक भेद को सैकड़ों रुपये मूल्य से कम नहीं समझेंगे। वृक्कशूल का रोगी तड़प रहा हो, इस दवा को खाते ही मिनटों में आराम हो जाता है।

भाँतल बूटी जंगलों में बहुत मिल जाती है। इस बूटी को जड़ों समेत उखाड़ कर धोकर साफ कर लें। अब इसे साफ जगह में जलाकर राख बना लें। इस राख को कढ़ाई में डालकर पानी मिला कर अच्छी तरह हिलायें। 24 घण्टे तक पड़ा रहने दें। राख का तमाम प्रभाव पानी में आ जायेगा। अब इस निथरे पानी को सावधानी के साथ अलग करके किसी चौड़े बर्तन में डालकर यहाँ तक पकायें कि गाढ़ा हो जाये और तमाम पानी उड़ जाये। नीचे नमक या जो क्षार बचे उसे शीशी में सुरक्षित रखें। एक रत्ती नमक गर्म पानी के साथ खिलाने से तीव्र से तीव्र वृक्कशूल को आराम आ जाता है।

भाँतल बूटी को जंगली गोभी भी कहते हैं।

साधू का उपहार

बनारस के एक साधु के पास श्वास रोग के रोगियों का जमघट लगा रहता था। वह अपनी थैली से कागज की एक पुड़िया निकालता और उसमें से एक रत्ती दवा श्वास रोग के रोगी को देता। इस तरह दमे का रोगी 8–10 दिन में ठीक हो जाता। साधु के एक शिष्य को लोभ देकर भेद प्राप्त किया गया। साधु मोर के पर जलाकर राख बना लेता। इस राख को एक रत्ती पान में रखकर खाने से दमे के बड़े बड़े रोगी ठीक हो चुके हैं। सैकड़ों बार का अनुभूत योग है।

देशी कुनीन

मलेरिया के लिये कुनीन बहुत सफल समझी जाती है। किन्तु यह इतनी गर्मी और खुश्की पैदा करती है कि इसके लगातार प्रयोग से रोगी को कई दूसरे रोग हो जाते हैं। नीचे लिखी दवा से जाड़े का ज्वर, मलेरिया, बारी का ज्वर और दूसरे हर प्रकार के ज्वर दूर हो जाते हैं।

कुनीन की तरह किसी प्रकार की हानि नहीं पहुंचाती।

योग--करंजुवे के बीजों की गिरी, पीपल (पिपली) आधी 2 छटाँक, गेरू मिट्टी दो माशा, फिटकरी खिल की हुई सवा तोला, तमाम दवायें अलग अलग पीसकर खरल में डालकर दो तीन घण्टे तक रगड़ें और कपड़े से छानकर शीशी में सुरक्षित रखें या मशीन से टिकियाँ तैयार कर लें। किसी भी प्रकार के चढ़े हुये ज्वर को पसीना लाकर उतार देती है। ज्वर चढ़ने से पहले दवा लेने से ज्वर रुक जाता है। दो से चार रत्ती दवा गर्म पानी या उचित अनुपान से दें।

मीठा फल

पाकिस्तान बनने से पहले लाहौर की एक प्रसिद्ध फार्मेसी ने देश के तमाम समाचार पत्रों में विज्ञापन दिया कि जिन लोगों के यहाँ पुत्र न पैदा होता हो वे हमें लिखें। हम दवा इत्यादि का कोई मूल्य न लेंगे जब तक कि उनके घर में लड़का पैदा न हो जाये। इस विज्ञापन को पढ़कर हजारों लोगों ने फार्मेसी को पत्र लिखे। फार्मेसी ऐसे लोगों से इस बात का स्टाम्प लिखवा लेती कि लड़का पैदा होने पर हम अपनी शक्ति के अनुसार इतना मूल्य प्रसन्नतापूर्वक दे देंगे। इसके बाद दवा उनको भेज दी जाती। यह दवा गर्भवती स्त्रियों को खिलाई जाती। इस दवा के प्रभाव से 90 प्रतिशत स्त्रियों के यहाँ लड़के पैदा हुये। फार्मेसी ने उन लोगों से उनकी हैसियत का ध्यान रखते हुये 25 रुपये से लेकर 500 रुपये प्रति रोगी प्राप्त किया। यह भेद वर्षों

के कठिन परिश्रम के बाद प्राप्त किया गया। बुद्धिमान लोग इस भेद से सैकड़ों रुपये कमा सकते हैं।

सम्पूर्ण रहस्य--जब स्त्री को दो महीने का गर्भ हो जाये तो प्रातःकाल प्रतिदिन भंग के बीज (साबुत) एक माशा पानी के साथ और सायंकाल को खाने से दो घण्टे पहले शिवलिंगी के चार बीज (साबुत) ताजे पानी के साथ एक मास तक प्रतिदिन निगल ले। इन निर्देशों पर अमल करने से शर्तिया लड़का पैदा होता है चाहे पहले लड़कियाँ पैदा होती हों।

बच्चों के सूखापन की चिकित्सा

एक प्रसिद्ध फार्मेसी ने निम्नलिखित रीति से हज़ारों रुपया कमा लिया है। बच्चों का सूखा, मसान बहुत भयानक रोग है जिसके कारण बच्चा सूख कर हड्डियों का पिंजर बन जाता है। इसको 'भूत का साया' भी कहते हैं। कोई दवा लाभ नहीं करती। यह रोग निम्नलिखित बूटी से सफलतापूर्वक दूर हो जाता है। विज्ञापन करने वाली फार्मेसी इस बूटी के कुछ पत्तों का मूल्य कई कई रुपये वसूल करती है। यह भेद कई साधुओं फकीरों में रहने के बाद प्राप्त किया गया है। कंघी बूटी बड़े शहरों के दवाखानों और पंसारियों के यहाँ बिकती है। इसके 4-5 पत्ते लेकर चूना, कत्था लगे पान में रख कर पान को मुंह में रखकर चबाकर पान की पीक और रस को छोटी सी प्याली में डालकर सूखे बच्चे की पीठ और रीढ़ की हड्डी पर धीरे धीरे मलते रहें। इस बूटी के प्रभाव से कुछ मिनटों बाद बारीक बारीक कीड़े पीठ पर प्रकट होते हैं। उनको चुन कर फेंक दें। 3-4 दिन तक यह चिकित्सा जारी रखें। बच्चा दिन प्रतिदिन मोटा ताज़ा होना आरम्भ हो जायेगा। लोग इस चिकित्सा प्रणाली को चमत्कार समझते हैं और चिकित्सक को पूरी रकम देने के अतिरिक्त हजारों शुभ कामनायें अर्पण करते हैं।

12 औषधियों से प्रत्येक रोग की चिकित्सा

प्रसिद्ध जर्मन डाक्टर शुस्लर ने वर्षों की रिसर्च के वाद यह परिणाम निकाला कि मनुष्य का शरीर बारह भिन्न भिन्न नमकों से बना है। जब मनुष्य में किसी नमक की कमी हो जाती है तो मनुष्य को कई रोग हो जाते हैं। यदि उसके शरीर में उस नमक की कमी को पूरा कर दिया जाये तो वह रोग दूर हो जाते हैं। उन्होंने इन नमकों को मिल्क शूगर में रगड़ कर बारह दवायें तैयार कीं और इनसे लाखों रोगियों को ठीक कर लिया। अब यह चिकित्सा प्रणाली अमेरिका, योरुप और संसार के तमाम दूसरे देशों में प्रचलित हो चुकी है। यह औषधियाँ हानिरहित और मीठी हैं। इनको देने में किसी प्रकार की कोई कानूनी रुकावट नहीं है। बच्चे, गर्भवती और बूढ़े तक को बिना भय के दे सकते हैं। बड़ों को 6 ग्रेन (3 रत्ती) या 5-6 गोलियाँ पानी में घोल कर पिलायें या मुंह में रख कर चूसने को कहें।

इन दवाओं को आपस में मिलाकर आप बड़े बड़े असाध्य तथा हताश रोगियों को ठीक कर सकते हैं। इन बारह दवाओं के नाम यह हैं।

1. केलकेरिया फ्लोर 2. केलकेरिया फास 3. केलकेरिया सल्फ
4. फैरम फास 5. काली म्यूर 6. काली फास 7. काली सल्फ
8. मैगनेशिया फास 9. नैट्रम म्यूर 10. नैट्रम फास 11. नैट्रम सल्फ
12 सिलिशिया। अब इन बारह औषधियों को आपस में मिलाकर भिन्न भिन्न रोग दूर करने के अनुभूत योग लिखे जाते हैं जो बड़ी बड़ी पेटेन्ट औषधियों और इन्जेक्शनों से भी अधिक लाभ पहुँचाते हैं। एक रोगी की दवा की लागत दो तीन पैसा प्रतिदिन से भी कम होती है।

(1) बेबी टानिक

केलकेरिया फास	30 ग्रेन	फैरम फास	30 ग्रेन
मैगनेशिया फास	20 ग्रेन	काली फास	20 ग्रेन

नैट्रम फास	10 ग्रेन	काली म्यूर	10 ग्रेन
नैट्रम म्यूर	10 ग्रेन	नैट्रम सल्फ	10 ग्रेन

दो या तीन ग्रेन प्रति मात्रा चार पाँच बार प्रतिदिन दें।

वच्चों के लिये सर्वोत्तम टानिक है। दाँत निकालने में सहायता देता है। पाचन क्रिया को ठीक रखता है। अतिसारों को बन्द करता है या कब्ज़ हो तो कब्ज़ को दूर करता है, कै या दूध डालने को लाभ पहुँचाता है। बाजार में बिकने वाले ग्राइप मिक्सचरों से अत्याधिक लाभदायक है। इसका लगातार प्रयोग वच्चों को स्वस्थ रखता है। सूखा रोग से वचाता और इस रोग को दूर करता है।

(2) इन्फ्लुएन्जा मिक्सचर

फैरम फास	10 ग्रेन	काली म्यूर	10 ग्रेन
नैट्रम सल्फ	15 ग्रेन	नैट्रम म्यूर	5 ग्रेन

इसकी 6 मात्रायें बनायें। एक मात्रा प्रत्येक दो घण्टे बाद गर्म पानी में घोल कर दें। महामारी इन्फलुएन्ज़ा में मैंने इसको बहुत लाभदायक पाया है।

(3) टाईफ़ायड की औषधि

1. फैरम फास काली म्यूर
नैट्रम म्यूर काली फास

प्रत्येक बराबर बराबर, 5 ग्रेन प्रति मात्रा प्रत्येक दो घंटे बाद दें। टाईफायड ज्वर में आरम्भ से अन्त तक देना लाभदायक है। मस्तिष्क के लक्षण, बेहोशी में अधिक बोलना, अतिसार इत्यादि हर प्रकार की अवस्था के लिये लाभदायक है।

2. फैरम फास, काली म्यूर, काली सल्फ समभाग। 5 टिकियाँ प्रत्येक दो घंटे पश्चात दें। यदि दाने न निकल रहे हों या निकलकर दब जायें तो इससे बड़ी आसानी निकल आते हैं।

(4) ब्रोंकाईटिस तथा न्यूमोनिया

फैरम फास	काली म्यूर	नैट्रम म्यूर

तमाम बराबर 2 लें। एक एक मात्रा दो दो घंटे बाद गर्म पानी के साथ दें। खाँसी, न्यूमोनिया, ज्वर, जुकाम इत्यादि के लिये लाभदायक है। इससे प्रायः भयानक से भयानक रोग भी ठीक हो जाते हैं।

(5) घाव सुखाने तथा पीप सुखाने के लिए

सिलिशिया	कैलकेरिया सल्फ

5 ग्रेन प्रति मात्रा तीन बार प्रतिदिन दें।

जख्म तथा फोड़े सुखाने, पीप खुष्क करने जैसे कान से पीप आना, पायोरिया (दाँतों से पीप आना) इत्यादि के लिये लाभदायक है।

(6) प्रसव के बाद दर्दों के लिए

फैरम फास	मैगनेशिया फास	नैट्रम सल्फ

छः ग्रेन प्रति मात्रा प्रत्येक दो घंटे बाद गर्म पानी के साथ दें।

यह योग प्रसव के बाद की दर्दो को कम करता है दूषित स्राव अच्छी प्रकार निकल जाता है। स्त्री प्रसूत ज्वर से बची रहती है।

(7) मुंह आना (मुख के छाले)

काली म्यूर	नैट्रम म्यूर
फैरम फास	काली फास

चारों बराबर 2 लें। मात्राः—बच्चों को 2–3 ग्रेन, बड़े को 5–6 ग्रेन प्रति मात्रा। 4 बार प्रतिदिन दें।

हर प्रकार के मुंह आने के लिये चाहे सफेद छाले हों या लाल, मुंह से राल बहती हो, घाव हो गया हो, संक्षेपतया हर प्रकार के मुंह के छालों में बहुत लाभदायक योग है। इस योग को ग्लीसरीन में मिलाकर मुंह के अन्दर छालों पर भी लगायें।

(8) हर प्रकार के अतिसार (डायेरिया)

1. फेरम फास केलकेरिया फास काली फास
काली सल्फ नैट्रम सल्फ

प्रत्येक बराबर 2। 5 ग्रेन प्रति मात्रा प्रत्येक दो घंटे बाद दें। पतले पानी जैसे अपचे अतिसारों के लिये बहुत लाभप्रद है। दस्तों के साथ कमजोरी और प्यास को भी दूर करता है।

2. फेरम फास केलकेरिया फास
नैट्रम फास काली फास

दो तीन ग्रेन प्रति मात्रा बच्चों को दें। विशेषकर बच्चों के अतिसार के लिये लाभदायक है। दाँत निकलने के समय के अतिसार, कै आना, दूध डालना इत्यादि के लिये लाभदायक है।

3.

फैरम फास	5 ग्रेन	नैट्रम म्यूर	5 ग्रेन
काली फास	5 ग्रेन	एकवा (पानी)	2 औंस

आपस में मिलाकर मिक्सचर बना लें। एक ड्राम (एक छोटा चम्मच) प्रति मात्रा प्रत्येक एक या दो घंटे बाद बच्चों को पिलायें, अतिसारों के साथ तीव्र ज्वर, प्यास, बेचैनी, इत्यादि हो तो यह योग सर्वश्रेष्ठ है। गर्म मौसम या सर्द मौसम के अतिसारों और ज्वर के लिये भी लाभदायक है।

(9) फीवर (ज्वर) मिक्सचर

फैरम फास	2 ग्रेन	काली म्यूर	2 ग्रेन
काली सल्फ	2 ग्रेन	नैट्रम भ्यून	2 ग्रेन
पानी (एक्वा)	1 औंस		

यह वयस्क रोगी की एक मात्रा है। 2 या 3 घंटे बाद दें। हर प्रकार के ज्वरों के लिये लाभदायक है। इससे पसीना आता है और ज्वर कम हो जाता है। नज़ला का ज्वर, शोथयुक्त ज्वर जैसे ब्रोंकाईटिस इत्यादि। खसरा, चेचक इत्यादि का ज्वर सभी के लिये लाभ-

दायक है। इससे दाने (खसरा, चेचक इत्यादि के) शीघ्र और पूरी तरह निकल आते हैं। हमेशा रहने वाले साधारण ज्वर के लिये भी लाभदायक है। संक्षेपतया हर प्रकार के लिये एक अचूक मिक्सचर होता है।

(10) बारी का ज्वर

नैट्रम सल्फ   नैट्रम म्यूर   काली म्यूर

ज्वर उतरने पर तीन बार प्रतिदिन दें। ज्वर की बारी को रोकता है। कब्ज़ दूर करता है।

(11) नेत्र दुखना

फैरम फास   नैट्रम म्यूर
मैगनेशिया फास   काली म्यूर

6 ग्रेन प्रति मात्रा प्रत्येक दो या तीन घंटा बाद दें। नेत्र दुखना शोथ हो जाना, तीव्र पीड़ा, खड़क, नेत्रों से पानी बहना, कीचड़ निकलना इत्यादि के लिये अचूक है।

(12) रोहे, कुकरों के लिए

काली म्यूर   नैट्रम सल्फ   नैट्रम म्यूर

कुछ दिन तक लगातार खिलायें। पुराने रोहे भी इस योग से ठीक हो जाते हैं।

(13) यकृत रोग

फैरम फास   काली म्यूर   नैट्रम सल्फ

बड़ों को 6 ग्रेन प्रति मात्रा तथा बच्चों को 2 से 3 ग्रेन दें। यकृत रोग, यकृत का बढ़ जाना, यकृत शोथ, पाँडू रोग इत्यादि के लिये लाभदायक है।

(14) कालरा (विशूचिका) हैज़ा

फैरम फास   काली फास   मैगनेशिया फास

नैट्रम म्यूर नैट्रम सल्फ

प्रत्येक 5 ग्रेन लेकर 4 औंस गर्म पानी में घोलकर एक छोटा चम्मच दवाई प्रत्येक 10–15 मिनट बाद दें। रोग कम होने पर दवा का समय बढ़ाते जायें। हैज़ा और हर प्रकार की कै तथा दस्तों के लिये लाभदायक है।

(15) रक्त अल्पता के लिए

फैरम फास काली फास
कैलकेरिया फास नैट्रम म्यूर

5 ग्रेन प्रति मात्रा 4 बार प्रतिदिन दें। रक्त अल्पता (Anaemia) के लिये बहुत लाभदायक है।

(16) दाँतों के लिए

कैलकेरिया फ्लोर कैलकेरिया फास सिलिशिया

तीन बार प्रतिदिन खिलायें। हिलते दाँतों को मज़बूत बनाता है। यदि दाँत गलने लग गये हों तो गलने से रोकता है। दाँतों की रक्षाकरता है परन्तु याद रखें कि बुढ़ापे में हिलते दाँतों को लाभ नहीं पहुँचाता है।

(17) पाँच (फ़ईाव) फास कम्पाउंड

फैरम फास काली फास कैलकेरिया फास
मैगनेशिया फास नैट्रम फास

प्रत्येक बराबर बराबर लें। बड़ों को 5–6 ग्रेन प्रति मात्रा, बच्चों को आयु अनुसार 2-2 ग्रेन प्रति मात्रा चार बार प्रतिदिन दें।

साधारण टानिक है। हर प्रकार की कमजोरी को दूर करता है। नये रोगों के बाद होने वाली कमजोरी, गर्भवती स्त्रियों के लिये गर्भ-काल में लाभदायक है, बच्चों को सूखा रोग से बचाता। पाचन शक्ति को ठीक करता है, अतिसारों को रोकता, दुर्बल रोगियों के लिये अमृत तुल्य है। यह औषधियाँ आधी आधी रत्ती की ख़ूबसूरत

टिकियो के रूप में बड़ी बड़ी होमियोपैथिक फार्मेसियों से बहुत सस्ती मिल जाती हैं। एक रोगी की दवाई पर 2-3 पैसा प्रतिदिन से भी कम व्यय होता है लेकिन आप रोगी से 4 से 8 आना प्रतिदिन प्राप्त कर सकते हैं। यदि यह दवायें आपको अपने यहाँ न मिल सकें तो एक एक औंस साईज की इन 12 दवाओं से भरी 12 शीशियों और पूरे वृतान्त की पुस्तक मूल्य 24 रु० डाकखर्च 6 रु० 50 पैसे में हमसे मंगवाकर इन जर्मन औषधियों से प्रैक्टिस करनी आरम्भ कर दें। अधिक मात्रा में दवायें मंगवाने पर बहुत सस्ती दी जाती हैं।

स्त्री रोगों की सफल औषधि

अशोका (Ashoka) – शताब्दियों से यह दवा स्त्री रोगों के लिये सफलतापूर्वक प्रयोग की जा रही है। लाखों स्त्रियाँ इस दवा से नया जीवन और शक्ति प्राप्त कर चुकी हैं। यह दवा गर्भाशय को शक्ति देती और मासिक धर्म सम्बन्धी तमाम रोगों को दूर करती है। जब मासिक धर्म कम आये, रुक जाने के कारण तमाम पेड़ू में सख्त पीड़ा हो, मासिक धर्म आरम्भ होने से पूर्व स्त्री को बहुत पीड़ा हो और मासिक धर्म सख्त कष्ट के साथ आये। मासिक धर्म दुर्गन्ध-युक्त काला, पतला और दोष युक्त आये तो इस दवा को देते रहने से थोड़े दिनों में ही तमाम कष्ट दूर हो जाते हैं। जिन स्त्रियों को प्रदर का रोग हो और कई दवायें खाने पर भी आराम न आये तो अशोका के प्रयोग से यह रोग बिल्कुल ठीक हो जाता है। वह स्त्रियाँ जिनकी शादी हो जाने के कई साल गुजर जाने पर भी सन्तान न होती हो उनको 2-3 मास तक प्रतिदिन प्रयोग कराने से सुन्दर बच्चा पैदा होता है। जिन स्त्रियों को हिस्टेरिया रोग हो उनके लिये यह दवा बहुत ही लाभदायक है। एक स्त्री को गर्भपात हो गया परन्तु काफी दिन गुजर जाने पर भी खून बन्द न होता था, अधिक रक्त निकल जाने के कारण मृत्यु का भय था, काफी दवायें देने पर भी रक्त स्राव

न रुका। उस स्त्री को इस दवा की 3—4 मात्रायें देनी शुरू की गईं जिससे उसका रक्त रुक गया। एक 35 वर्षीय रोगी को काफी समय से खूनी बवासीर (रक्त अर्श) थी उसको बहुत अधिक मात्रा में सुर्ख रक्त आता, सख्त कब्ज़ रहती, पेशाब जल कर आता, उसको 5 बूंद दवा 5 तोला पानी में मिलाकर दी गई। दूसरे दिन ही अत्याधिक खून आना बन्द हो गया। प्रसूत ज्वर में भी यह अनुभूत दवा है। कलकत्ता के प्रसिद्ध डा० चैटर्जी ने प्रसूत ज्वर की एक स्त्री जिसके पेट के निचले भाग में सख्त पीड़ा थी। गर्भाशय से रक्त की भाँति बहुत बदबू वाला स्राव आ रहा था, स्त्री बहुत कमज़ोर थी। यह दवा दो सप्ताह तक देते रहने से उसके तमाम रोग दूर हो गये और उसकी जान बच गई।

मात्रा :—अशोका मदर टिंक्चर की तीन से दस बूंद 1 2 तोला ताज़ा पानी में मिलाकर दिन में 2—3 बार देते रहें।

जीवित बच्चा उत्पन्न होगा

कई स्त्रियों को गर्भ होने पर कुछ मास बाद मरा हुआ बच्चा पैदा हो जाता है या हर बार गर्भपात हो जाता है। कई बार मरे बच्चे पैदा होने या कुछ समय बाद मर जाने पर घर वालों को भारी दुःख होता है। ऐसी स्त्रियों को गर्भ होते ही प्रसिद्ध होम्योपैथिक दवा सिमीसीफ्यूगा (Cimicifuga Q) मदर टिंक्चर की 5 बूंद एक तोला ताज़ा पानी में मिलाकर दिन में तीन बार गर्भ हो जाते ही पिलाना शुरू कर दें और गर्भ के पाँचवें मास तक पिलाते रहें। इससे न तो गर्भ ही गिरेगा और न ही बार बार मरा हुआ बच्चा पैदा होगा।

प्रसिद्ध भारतीय औषधियां (डाक्टरी रूप में)

भारत की कई दवायें तो हज़ारों वर्षों से असंख्य रोगियों पर सफलतापूर्वक प्रयोग की जा रही हैं। गुणों में वह बहुत कीमती डाक्टरी

इन्जेक्शनों और माडर्न पेटेन्ट दवाओं से बढ़कर चढ़ हैं। परन्तु दुख की बात यह है कि वैद्य, डाक्टर उनको देशी रूप में प्रयोग नहीं करते। इन प्रसिद्ध दवाओं को होमियोपैथिक टिंक्चरों के रूप में बनाया गया है जिससे तमाम भारत और विदेशों में इनकी भारी माँग पैदा हो गई है। आप इन दवाओं की 4—5 बूंदों से बड़े बड़े पुराने रोगों को 2 – 4 दिन में दूर कर सकते हैं।

1. बाँसा, अड़ूसा (Vasaka Justicia)—हज़ारों वर्षों से क्षय रोग, फेफड़ों से खून आने, पुरानी खाँसी, दमा और फेफड़ों की कमज़ोरी में प्रयोग की जा रही है। यह नज़ला, जुकाम, सख्त कै, तपेदिक, खून थूकने, पुराना ज्वर, भूख की कमी में बहुत ही अनुभूत है। 5 से 10 बूंद एक तोला पानी में मिलाकर दिन में दो तीन बार दें। एक सप्ताह में रोगी को पूर्ण रूप में आराम आ जाता है।

2. ब्रह्मी बूटी (Hydrocotyle) – यह दवा भारत में दिमागी कमज़ोरी, भूल जाना, सिर दर्द, पागलपन और मस्तिष्क रोगों में सफलतापूर्वक प्रयोग की जा रही है। वैद्यक ग्रन्थों में लिखा गया है कि इसके प्रयोग से वर्षों भूली बातें याद आ जाती हैं। आजकल इस दवा से बड़े बड़े चर्म रोग जैसे कुष्ठ, फुलबहरी (श्वेत कुष्ठ), चम्बल, कील, खुजली आदि रोग भी सफलता से दूर किये जा रहे हैं। स्त्री रोगों जैसे ल्यूकोरिया, योनि और गर्भाशय के घाव, खुजली और दर्द में भी बहुत लाभदायक है, गर्भवती को यह दवा देते रहने से बच्चा मोटा ताज़ा और बुद्धिमान पैदा होता है। दिल की धकड़न, बहुत अधिक पसीना आना, स्वप्नदोष, प्रमेह में बहुत सफल है। मात्रा 3 से 10 बूंद दिन में 3 बार दें।

3. पुनर्निवा, बिसखपरा—यह दवा शरीर पर सूजन हो जाना, पेट और शरीर में पानी पड़ जाना, वृक्कों का ठीक काम न करना, मूत्र न आना, पाँडू रोग, दिल के रोग, यकृत का ठीक कार्य न करने में बहुत सफल दवा है। शरीर के तमाम अंगों पर सूजन और शरीर

तथा पेट में पानी पड़ जाने में यह बहुंत सफल दवा है। वृक्कों में चुस्ती पैदा करके काफी मूत्र लाकर शरीर में एकत्रित पानी और शरीर की सूजन दूर कर देती है। आप इस दवा से इन रोगों के पुराने बिगड़े और हताश रोगी तक ठीक कर सकेंगे। 5 10 बूंद दिन में 3—4 बार दें।

4. छोटी चन्दन, चन्द्रभागा, असरोल (Rauwolfia)—इस दवा ने न सिर्फ भारत बल्कि तमाम संसार में ख्याति प्राप्त कर ली है और संसार के तमाम बड़े बड़े पागलखानों मे प्रयोग की जा रही है। इस जड़ी बूटी की सबसे पहले हकीम अजमल खाँ संस्थापक आयुर्वेदिक और तिब्बिया कालिज देहली ने खोज की थी। यह दवा ज़ंजीरों में बंधे, बड़े बड़े जोशीले, मारने वाले, भाग जाने वाले, न सोने वाले पागलों को दो चार दिन में ठीक कर देती है। इसके अतिरिक्त यह हाई ब्लड प्रैशर की बहुत ही सफल दवा है। दिमाग के जोश को कम करती है और नींद लाती है। इन रोगों में यह संसार की सर्व प्रथम दवा है। 5 से 15 बूंद दिन में तीन चार बार दें। पूरे वृतान्त के लिये "उन्माद चिकित्सा मूल्य एक रुपया" में पढ़ें।

5. जामुन की गुठली की गिरी (साईज़ीजियम जम्बोलिनम)—पेशाब में शक्कर आने (मधुमेह) की संसार प्रसिद्ध दवा, पेशाब बार बार और बहुत अधिक मात्रा में आये तथा उसमें बहुत अधिक शक्कर आये, बार बार प्यास, शरीर के ऊपरी अंगों में पित की भाँति दाने निकल आयें जिनमें बहुत खुजली हो, वज़न गिर जाये और अत्याधिक दुर्बलता, मधुमेह में शरीर पर पुराने फोड़े जो ठीक न हों, मधुमेह के पुराने से पुराने रोगी इस दवा से ठीक हो जाते हैं। यह दवा इनसोलीन से भी अधिक लाभदायक है और इससे स्थायी लाभ हो जाता है। मात्रा–5 से 15 बूंद दिन में चार बार।

6. तुलसी (Ocimum Sanctum)—मलेरिया ज्वर (सर्दी से होने वाला ज्वर) की बहुत ही सफल दवा है, इसके अतिरिक्त

पुराना अजीर्ण, कै, दमा, खाँसी, पसली का दर्द, जोड़ों का दर्द, हैज़ा, दस्त, (बलगम को निकालकर) खाँसी को दूर कर देती है। नज़ला, ज़ुकाम, हर बात भूल जाना, इन्फलूएन्ज़ा, हड्डियों और शरीर में दर्द होना, न्यूमोनिया, बच्चों के पेट में कीड़े होना, ज्वर जिसके साथ दस्त और खाँसी हो, दाँत दर्द, बच्चा होने के पश्चात बदबूदार और अधिक स्राव तथा क्षय रोग के ज्वर में अनुभूत है। 2 से 4 बूंद दिन में तीन चार बार दें।

7. गोखरू (Tribulus)—वृक्क और मूत्राशय (गुर्दे और मसाना) के रोगों की सफल दवा है। नया पुराना सोज़ाक, मूत्र बन्द हो जाना, मूत्र थोड़ा थोड़ा या बूंद बूंद आना, पीप आना, पत्थरी से मूत्र बन्द हो जाना, वीर्य दुर्बलता, मानसिक दुर्बलता, वीर्य प्रमेह, स्वप्न दोष, वृक्क और मूत्राशय की सूजन, मर्दाना कमज़ोरी इत्यादि में लाभदायक है। 20 से 40 बूंद दिन में तीन बार दें।

8. काल मेघ, भूनिम्बा, किरयात—यकृत (जिगर) की शोथ, दर्द, जिगर बढ़ जाना, बच्चों का यरकान और यकृत रोग, खाँसी और कमज़ोरी, बच्चों में पेट दर्द और मरोड़, भूख न लगना, कब्ज़ और बिगड़ी पेचिश, तिल्ली (प्लीहा) बढ़ जाना, पुराना बिगड़ा मलेरिया की सर्व प्रथम दवा है। मात्रा–बच्चों को 1–2 बूंद, बड़ों को 3 से 10 बूंद दिन में तीन बार दें।

9. पीपल (Ficus Religioisa)—पीपल वृक्ष की भारत में पूजा की जाती है। इस वृक्ष से बना टिंक्चर अन्तड़ियों, फेफड़ों, आमाशय, मूत्राशय, गर्भाशय और शरीर के दूसरे भागों से रक्त आने की महान औषधि है। पुराने न भरने वाले फोड़े जिनकी पीप खुश्क न होती हो, पुरानी पेचिश में खून आना इत्यादि इसके प्रयोग से थोड़े दिनों में ही यह रोग दूर हो जाते हैं। चिकित्सक जो विदेशी ऐलोपैथिक दवाओं की प्रशंसा करते नहीं थकते, भारत की इन दवाओं को डाक्टरी रूप में प्रयोग करके देखें। इनके गुणों को देखकर आप चकित

रह जायेंगे। आप जरूर अपने देश की इन अनुभूत दवाओं को अपने रोगियों पर प्रयोग करें। ढाई तोला दवा की शीशी मूल्य दो रुपया से आप अपने कई रोगी ठीक कर सकते हैं।

वह दवा जिससे डाक्टर ग्रीन हृदय रोगों का विशेषज्ञ बन गया

कैटिगस आक्स (Crataegus ox)–यह सच्ची कहानी "न्यूयार्क मेडिकल जरनल" ने अक्टूबर 1896 में प्रकाशित की–– आयरलैंड में डाक्टर ग्रीन प्रैक्टिस करते थे। उनको संयोगवश ऐसी दवा का ज्ञान हो गया जिससे वह हृदय रोगों से पीड़ित रोगियों को निरोग बना लेते, थोड़े ही समय में उनकी प्रसिद्धि तमाम संसार में हो गई और संसार के कोने कोने से हृदय रोगों से पीड़ित रोगी उनके पास आने लगे। उन्होंने एक ही दवा से लाखों रुपया कमा लिया और तमाम संसार में प्रसिद्ध हो गये। आयरलैंड और संसार के बड़े 2 डाक्टरों ने यह गुप्त भेद मालूम करने के लियें लाखों यत्न किये परन्तु वह इस दवा का ज्ञान प्राप्त न कर सके। उनकी मृत्यु के पश्चात उनकी पुत्री ने यह भेद एक डाक्टर को बता दिया।

जिसने संसार के भले के लिये इस दवा का पूरा वृतान्त डाक्टरी के प्रसिद्ध पत्रों में छपवा दिया। आजकल यह दवा संसार के तमाम देशों में लाखों रोगियों पर प्रयोग की जा रही है। इस दवा का नाम कैटिगस आक्सकैन्था है, इस दवा से हृदय पीड़ा और फेल होने वाले हृदय के लाखों रोगी बचाये जा चुके हैं। इसीलिये यह दवा हार्ट टानिक (Heart Tonic) के नाम से प्रसिद्ध हो चुकी है।

रोगी आयु 65 वर्ष, रात को हृदय पीड़ा का आक्रमण हुआ, उसे साँस लेने में कठिनाई हो रही थी और इस कारण वह तड़प रहा था, रोगी बायें हाथ और पीठ में सख्त पीड़ा अनुभव करता, नाड़ी की गति बहुत तेज थी, उसके दिल में अत्याधिक दर्द होता, उसको

इस दवा की 15 बूंद एक तोला पानी में मिलाकर पिला दी गई जिससे 10–15 मिनट में उसकी नाड़ी में शक्ति आ गई और साँस की कठिनाई तुरन्त दूर हो गई। एक घण्टा पश्चात इस दवा की दूसरी मात्रा दी गई जिससे उसका कष्ट पूर्ण रूप से दूर हो गया।

जब रोगी के दिल फेल होने का भय हो, दिल में पीड़ा हो रही हो, नाड़ी की गति बहुत कमज़ोर हो जाये, दिल फैल गया हो, इस रोग के कारण रोगी को साँस लेने में बहुत कठिनाई हो तो इसकी एक दो मात्राओं से रोगी को मृत्यु के मुंह से बचा लिया जाता है। यह दवा बिल्कुल हानिरहित है। पेशाब खुलकर आने लग जाता है। जिससे हृदय की शोथ दूर हो जाती है। इस दवा की मात्रा 5 से 10 बूंद है।

कुछ समय तक इसका प्रयोग करते रहने से तमाम हृदय रोगों को पूर्ण रूप आराम आ जाता है। ढाई तोला दवा (मूल्य दो रुपया) से आप कई रोगियों को मृत्यु से बचा सकेंगे।

श्वास रोग (दमा का दौरा) को तुरन्त आराम

बलाटा औरियन्ट Blatta Orient

यह दवा दमा (श्वास रोग) की प्रसिद्ध दवा है, दमा का रोग किसी भी कारण से हो, यह दवा तुरन्त लाभ पहुँचाती है जब रोगी दमा के दौरे के कारण बहुत कष्ट में हो, श्वास आने में सख्त कठिनाई हो रही हो तो इस दवा को देने से तुरन्त दौरे का जोश और समय घट जाता है और कुछ समय तक देते रहने से रोगी को पूर्ण आराम आ जाता है, वर्षा के मौसम में और मोटे रोगियों के श्वास रोग में तो यह दवा विशेष लाभ पहुँचाती है।

प्रयोग विधि—दौरा के समय इस दवा के मदर टिंक्चर की 4-5 बूंद थोड़े पानी में मिलाकर तुरन्त पिला दें, यदि दौरा रहे तो एक घन्टे पश्चात ऐसी एक और मात्रा दें। रोग की जड़ काटने और रोग

को स्थायी रूप में दूर करने के लिए यह दवा 3x की शक्ति में दो बूंद की मात्रा में थोड़े पानी या मिल्क शूगर में मिलाकर प्रातः सायं एक दो मास तक पिलाते रहें।

बूढ़ों को जवान बनाने वाली दवा

शिगरफ रूमी एक तोला की डली, मालकंगनी नई एक पाव।

विधि—पहले मालकंगनी को कूटकर चूर्ण बनायें। फिर आधी मालकंगनी लेकर लोहे के तवे पर रखकर उस पर शिगरफ की डली रख दें और शेष मालकंगनी ऊपर डालकर हाथ से अच्छी तरह दबा दें तथा तवे को चूल्हे पर रखें और उसके नीचे आग जलायें। थोड़ी देर में मालकंगनी जलनी आरम्भ हो जायेगी। तब उसको आग लग जायेगी। बस जिस समय औषधि को आग लग जाये तो तवे के नीचे आग जलाना बन्द कर दें और औषधि वाला तवा चूल्हे पर ही रहने दें। जब ठण्डी हो जाये तो फिर राख को अलग करके शिगरफ की डली को निकालकर खरल में डालकर उसको अत्यन्त वारीक पीस लें। औषधि का रंग लाल होगा। शीशी में डालकर सावधानी से रखें।

प्रयोग करने की विधि—मात्रा एक से दो चावल तक पाँच तोला मक्खन या मलाई के साथ इस ढंग से खायें कि पहले आधे मक्खन या मलाई में औषधि रखकर गोली बनाकर खायें। शेष वैसे ही निगल लें। इस ढंग से औषधि मध्य में आ जायेगी इस दवा को खाने से पहले कुछ खाकर ही लिया जाये।

नोट - क्योंकि इस औषधि की मात्रा अत्यन्त न्यून है। इसलिए मैं अपने गुरु हकीम हाफिज जलील अहमद साहब प्रिंसिपल तिब्बिया कालेज लाहौर के आदेशानुसार निम्नलिखित ढंग से प्रयोग कराता हूं।

बढ़िया लोह भस्म एक तोला, उपरोक्त वर्णित औषधि तीन माशे। दोनों को खरल में डालकर अच्छी तरह मिलाकर शीशी में बन्द करके रख लें।

मात्रा–एक रत्ती मक्खन या मलाई के साथ उपयुक्त ढंग से दें। लाभदायक सिद्ध होगी।

लाभ—यह चमत्कारी लाभदायक औषधि नपुन्सकता, पुरुषों की कमज़ोरी, रक्त की कमी, पक्षाघात, मुंह टेढ़ा हो जाना, जोड़ों का दर्द और नाड़ी संस्थान की दुर्बलता के लिए सर्वश्रेष्ठ है। यह औषधि क्या है, एक गुप्त रहस्य था जो आज अनुभूत योग के रूप में आपकी सेवा में प्रस्तुत किया जा रहा है। हकीम मुहम्मद हुसैन ऐमनाबाद (पाकिस्तान)

कोड़ी की पीड़ा

कोड़ी का स्थान आमाशय के ऊपर और हृदय के समीप होता है। यह पीड़ा बहुत कष्टदायक होती है।

हींग शुद्ध बड़े चने के बराबर लेकर मुनक्का के 2 दाने, दोनों के बीज निकालकर उसमें हींग लपेटकर गोली सी बनाकर गरम पानी के साथ रोगी को खिला दें। शीघ्र ही आराम हो जायेगा। कभी ही दूसरी मात्रा देनी पड़ती है। क्योंकि यह औषधि सैकड़ों बार की अनुभूत है। इस गुप्त योग से एक साधू ने सैकड़ों रोगियों को ठीक किया है।

बाल अतिसार की अचूक दवा

माजू और तज एक एक माशा, असली केसर एक रत्ती, अफीम एक रत्ती। सब औषधियों को बारीक पीसकर चूर्ण सा बनायें।

मात्रा—एक वर्ष से कम आयु के बच्चे के लिए आधी रत्ती, दो वर्ष तक एक रत्ती। तीन वर्ष तक दो रत्ती मात्रा स्वच्छ पानी या सौंफ के अर्क के साथ दें। हर प्रकार के अतिसार यदि किसी औषधि से बन्द न होते हों तो इस औषधि से बन्द हो जाते हैं। अनुभूत तथा अनेक बार की परीक्षित अद्वितीय औषधि है।

1

दाद, चम्बल शर्तिया दूर होगा

बेरीयम सल्फाईड ढाई तोला, पाँच तोला जल में मिलाकर पन्द्रह मिनट तक रखें। तत्पश्चात पीले रंग का पानी ऊपर से निथार कर उसको आठ तोले शुद्ध सरसों के तेल में खरल करें। बस अद्वितीय मरहम तैयार है।

दाद, चम्बल को किसी खद्दर के कपड़े से रगड़ कर लगायें। एक सप्ताह के अन्दर दाद, चम्बल का सदा के लिए विनाश हो जायेगा।

नज़ला जुकाम का सफल योग

नज़ला जुकाम के लिए यह गोलियाँ चमत्कारी है। पहली ही मात्रा में लाभ प्रतीत होता है। हज़ारों रोगियों पर सफलतापूर्वक इसकी परीक्षा की जा चुकी है।

शुद्ध मीठा तेलिया (Aconite Pure) काफ़ूर, कल्मी शोरा, अफीम सम्भाग लेकर खशखास के दाना के बराबर गोलियाँ तैयार कर लें। एक गोली अर्क गाउजबान के साथ प्रातःकाल दें।

हकीम मौलाना मुहम्मद अब्दुल्ला।

घर का डाक्टर—बीस रोगों की एक दवा

यह औषधि प्रत्येक वैद्य, हकीम, डाक्टर के औषधालय में होनी चाहिये। रोगी के घर जाने पर अपने पास रखना मत भूलें। बीसियों रोगों को दूर करने के लिए अदभुत है।

पन्डित ठाकुरदत्त मालिक अमृतधारा ने अपने मासिक पत्र में इसकी बहुत प्रशंसा की है तथा इसको अत्यन्त सफल तथा उपयोगी बताया है।

योग – अफीम पाँच तोला, जायफल तीन तोला, लोंग तीन तोला, केसर एक तोला, कस्तूरी एक तोला। कूट पीसकर दूध की सहायता से

मूंग के बराबर गोलियाँ बना लें।

लाभ—(१) आमाशय के रोग तथा हाजमे की कमजोरी में एक गोली पान के साथ दें।

(2) अतिसार और संग्रहणी में छाछ या आनार के रस के साथ एक एक गोली दिन में तीन बार पान के साथ दें।

(3) सर्पदंश–एक गोली रोगी को खिलायें और एक गोली आक के दूध में घिसकर लगायें।

(4) भिड़ या बिच्छू का डंक–रीठे के साथ गोली को पानी की सहायता से घिसकर डंक के स्थान पर लेप करें।

(5) आँखों में जलन होने पर आमला के रस में घिसकर आँखों में एक दो सलाई लगायें।

(6) शीघ्र पतन—तीन माशा मोचरस के चूर्ण में एक गोली रखकर गाय के दूध के साथ दें।

(7) पुरुषों की गुप्त दुर्बलता—असगंध चूर्ण तीन माशा मक्खन के साथ दें।

(8) सिर के दर्द में पानी से घिसकर माथे पर लेप करें।

(9) पान्डु रोग (jaundice) में त्रिफला के तीन माशे चूर्ण में एक गोली मिलाकर मधु के साथ दें।

(10) कान का दर्द— स्त्री के दूध में घिसकर कान में डालें।

(11) रात्रि अन्ध – मुंह की थूक में घिसकर सलाई से आँख में लगायें।

(12) गोखरू के रस या क्वाथ के साथ एक गोली खिलाते रहने से पत्थरी को आराम होगा।

(13) श्वास (दमा) के लिए—एक माशा पिपली चूर्ण में एक गोली मिलाकर मधु के साथ दें।

(14) गठिया और वाई के दर्द—सोंठ के क्वाथ या अदरक के रस के साथ दें।

(15) नज़ला, जुकाम--पानी में घिसकर नसवार के रूप में द।

इस प्रकार चिकित्सक इसको उचित अनुपान से अनगणित रोगों की चिकित्सा कर सकता है।

पुराने से पुराने उपदंश को आराम

इस साधारण औषधि से पुराना उपदंश (Syphilis) दूर हो जाता है। एक रोगी के शरीर पर फुन्सियाँ थीं। शरीर का रंग काला और शरीर से दुर्गन्ध आती थी। मालूम करने पर पता चला कि रोगी को पन्द्रह वर्ष पूर्व उपदंश का रोग था। एक सप्ताह में रोगी स्वस्थ हो गया।

योग—उशवा (अन्तमूल) एक पाव को रात भर एक बोतल पानी में भिगो दें। प्रातः समय हाथों से मसल कर छान लें। इसमें पोटासियम आयोडाईड 3 माशा पीसकर मिलाकर शीशी में भर लें। औषधि तैयार है।

यह औषधि प्रातः तथा साँय ढाई से पाँच तोला तक पिलायें। एक सप्ताह में ही काफी आराम हो जायेगा। रक्त के रोग तथा रक्त शोधक के लिये अति उत्तम औषधि है।

वैद्य गोवर्धन दास शर्मा

स्वप्नदोष और प्रमेह की दवा

स्वप्नदोष और प्रमेह को एक सप्ताह में दूर करती है। हरे माजू, फटकरी खिल की हुई, अफीम शुद्ध सम्भाग पीसकर बारीक चूर्ण बना लें।

मात्रा—एक एक रत्ती प्रातः सायं थोड़े दूध के साथ दें।

हकीम गुलाम नबी एम० ए० लाहौर

अठराह की अचूक दवा

इस रोग में बच्चे आठ दिन, आठ मास या आठ वर्ष में मर जाते हैं। इस रोग की चिकित्सा हमारे परिवार में दो सौ साल से की जा रही है। जो शत प्रतिशत अनुभूत सिद्ध हुई है।

योग - शुद्ध पवित्र होकर सरू वृक्ष के 10 तोला पत्ते लेकर बीस काली मिर्च के साथ खूब बारीक पीस लें। तब जल की सहायता से चार चार रत्ती की गोलियाँ बना लें। गर्भ के तीसरे मास से चालीस रोज तक हर रोज़ प्रातः सायं स्त्री को एक 2 गोली ताज़ा पानी के साथ खिलायें। जब शिशु उत्पन्न हो जाये तो पुनः यही गोलियाँ औरत को 40 दिन तक खिलायें। ईश्वर की कृपा से बच्चा जीवित रहेगा। गर्भ समय स्त्री तीन साल किसी मौत या प्रसूत वाले घर का खाना न खाये।

स्वर्गीय हकीम दिलबर खाँ भट्टी आनरेरी मैजिस्ट्रेट, जागीरदार देहली तथा प्रिन्सिपल तिब्बिया कालेज पटियाला।

क्षय रोग की दवा

यह औषधि क्षय रोग तथा अन्य पुराने बुखारों के लिये उपयोगी है। इसके अतिरिक्त दमा, हिचकी, वमन आदि को दूर करती है।

योग--शिंगरफ से निकाला हुआ पारा पाँच तोला, शुद्ध गंधक आमलासार पाँच तोला। दोनों को मिलाकर सात दिन तक खरल करते रहें। काले रंग का पाउडर (कजली) बन जायेगा। अब इस औषधि को लोहे के कड़छे में डालकर आग पर रखें। जब भली भाँति पिघल जाये तो संभालू की लकड़ी से हिलाते रहें। जब सारी गंधक जलकर धुआँ निकलना बन्द हो जाये तो इस काले रंग की औषधि को निकालकर शीशी में बन्द करके रख लें।

आधी से एक रत्ती तक यह औषधि तीन माशा मधु, पाँच काली मिर्च, तुलसी के दो पत्ते। तीनों को कूटकर औषधि मिलाकर खिलायें

और बकरी का दूध पिलायें।

प्रमेह, स्वप्नदोष और वीर्य रोग

यह योग चिकित्सक सम्राट हकीम मुहम्मद अजमल खान संस्थापक तिब्बिया कालेज देहली का विशेष अनुभूत योग है। प्रमेह, स्वप्नदोष और वीर्य की दुर्बलता की अचूक दवा है।

बढ़ के वृक्ष के ताजा पीले पत्ते एक मन लेकर उनको तीन चार घड़ों में डालकर पानी से भर दें। सर्दी में आठ दिन और ग्रीष्म काल में चार दिन पश्चात एक साफ बड़ी कड़ाही लेकर उसमें पत्ते पानी समेत डालकर उबालों जब पत्ते गल जायें तो अच्छी तरह मलकर छान लें। इस पानी को कढ़ाई में डालकर पकायें, जब गाढ़ा हो जाये तो उसको बहुत ही धीमी आग पर गाढ़ा करें, यहाँ तक कि सूख जाये। परन्तु जलने न पाये। तब इसमें झोफली बूटी पाँच तोला, इमली के बीज की गिरी, सत इस्पगोल, शुद्ध शिलाजीत दो दो तोला। चाँदी भस्म दो माशा, सोना भस्म चार रत्ती, मोती बिना विधे चार माशा मिलाकर बेर के बराबर गोलियाँ बना लें। एक एक गोली प्रातः सायं दूध के साथ दें।

मधुमेह (मूत्र में शक्कर आना)

इस साधारण योग के प्रयोग से पेशाब में शक्कर आनी रुक जाती है।

(1) जामुन की गुठली की गिरी 1 तोला, अफीम 1 माशा। दोनों को पीस कर 32 गोलियाँ तैयार करें। दो गोली प्रातः तथा दो गोली सायं समय दें।

(2) गुड़मार बूटी और सूखी गिलोय समभाग पीस लें। 1–2 माशे प्रतिदिन खिलाने से पेशाब में शक्कर (मधुमेह) आनी दूर हो

जाती है। हकीम रिज़वान अहमद प्रिंसिपल तिब्बिया कालेज सिलहट (पाक०)

प्लीहा का बढ़ और सूज जाना

यह योग भोजन को पचाने और बढ़ी हुई प्लीहा को कम करने के लिये बहुत उपयोगी तथा अनुभूत है।

योग – नौशादर बीस तोला, जौखार पाँच तोला, नमक मनहारी पांच तोला, नमक लाहौरी पाँच तोला, काला नमक पाँच तोला। सबको बारीक पीसकर कागजी लीमू के आधा सेर रस में मिलाकर चीनी के बर्तन में डालकर धूप में रख दें। जब लीमू का रस सूख जाये तो औषधि को मिट्टी की हाँडी में डालकर दूसरी हाँडी ऊपर रखकर जोड़ों को मिट्टी से पोत कर सुखा लें और चूल्हे पर चढ़ाकर नीचे आग जलायें तथा पानी से भीगा हुआ कपड़ा हाँडी के ऊपर रखते रहें। कपड़ा गर्म हो जाने पर फिर कपड़ा रख दें। इस प्रकार दवाओं का समस्त तत्व उड़कर ऊपरी हाँडी पर लग जायेगा। कई घन्टे आग जलाने के पश्चात ठन्डा होने पर ऊपर वाली हाँडी के अन्दर लगी दवा चाकू से उतार कर शीशी में सुरक्षित रख लें।

एक रत्ती औषधि दोनों समय भोजन के पश्चात प्रयोग करें। (प्रिंसिपल रिजवान अहमद)

क्षय रोग में गधी का दूध

क्षय रोगी को गधी का दूध पिलाना अत्यन्त लाभदायक है। रोगी को सात तोला गधी का दूध प्रतिदिन पिलायें। तीन दिन पश्चात 1 तोला दूध बढ़ाना आरम्भ कर दें। यहाँ तक कि गधी के दूध की मात्रा इक्तालीस (41) तोला तक पहुँच जायें इसके पश्चात इस प्रकार 1–1 तोला घटाते जायें और अन्त में सात सात तोला दूध तीन दिन तक पिलाकर बन्द कर दें। प्रिन्सिपल रिजवान अहमद

निमोनिया की अचूक दवा

यह औषधि निमोनिया, छाती तथा पसली के दर्द आदि में बहुत उपयोगी है। बारहसिंगे का सींग, मोम, सफेद नमक, लाहौरी नमक समभाग लेकर बारीक पीसकर चने के बराबर गोलियाँ बना लें। 1–1 गोली प्रातः सायं खिलायें। निम्नलिखित औषधि का छाती के दर्द में लेप करें और फिर आग से सेंक दें। यहाँ तक कि लेप सूख जाये। बारहसिंगे का सींग छः माशे और काली मिर्च 1 माशा पानी में पीस कर दर्द के स्थान पर लेप करें। (प्रिन्सिपल रिजवान अहमद)

कफ वाली खाँसी

यह औषधि कफ को बिना कष्ट बाहर निकाल देती है। नाड़ी संस्थान में शाँति संचार करती है और बलगमी खाँसी में अत्यन्त लाभदायक है।

खुरासानी अजवायन, देसी अजवायन, साँभर नमक 1–1 तोला को बारीक पीस छानकर पानी में गूंध कर मिट्टी के प्याले में डालकर दूसरा प्याला रखकर जोड़ों को मिट्टी से पोत दें। सूख जाने पर पाँच सेर उपलों में रखकर आग लगा दें। ठन्डा होने पर पीसकर और कपड़े से छान कर रखें। चार रत्ती औषधि पान में रखकर या शहद में मिलाकर चटायें।

हर प्रकार की बवासीर

हारसिंगार के बीज (बिना छिल्का) 1 तोला, काली मिर्च तीन माशा। पीसकर चने के बराबर गोलियाँ तैयार कर लें। बादी तथा खूनी बवासीर के लिए सैकड़ों बार का अनुभूत योग है। (डा० जैलानी पाकिस्तान के सबसे बड़े चिकित्सक)

नेत्र दृष्टि तेज

जिन मनुष्यों की दृष्टि कमजोर हो गई हो वह निम्नलिखित योग की अवश्य परीक्षा करें। अत्यन्त रहस्यमयी औषधि है। इससे दृष्टि तेज हो जाती है। नेत्रों के लिये अत्यन्त लाभदायक है।

पीली हरड़ की गुठली की गिरी 12, पिपली पाँच, काली मिर्च एक। सबको वारीक पीसकर ताजा आमलों के रस में इतनो देर तक खरल करें कि पीसते पीसते औषधि काली हो जाये। तब वत्तियाँ या गोलियाँ बनाकर सुखा लें। पत्थर पर पानी की सहायता से रगड़कर सलाई से प्रतिदिन लगायें। डा० जैलानी

कुचला का तेल

माँसपेशियों को शक्तिदायक, शारीरिक दर्दें, वात की दर्दें, निमोनिया में छाती का दर्द, शीत के दर्द में रामवाण औषधि है। निरन्तर मालिश से शरीर में नवीन शक्ति का संचार हो जाता है। जोड़ों पर या पीड़ित स्थान पर मालिश करके रुई का सेंक करके रुई बाँध दें।

योग—कुचला बीस माशा, अफीम नौ माशे, गाय का दूध, तिलों का तेल 1–1 सेर। अफीम को दूध में मिला लें, कुचले के बारीक टुकड़े बनाकर तेल में मिला दें और आपस में मिलाकर धीमी 2 आँच पर जोश दें। जब दूध जल जाये और सिर्फ तेल बाकी रह जाये तो छानकर रख लें।

वर्षों की सिर पीड़ा दूर

जिन रोगियों को वर्षों से सिर दर्द रहता हो उनको इस तेल की मालिश करते रहने से आराम आ जाता है। मस्तिष्क की शक्ति बढ़ जाती है।

पदमाख, चन्दन सफेद, पीपल, निलोफर, मुलहठी 1–1 तोला। ताजा आमलों का रस बीस तोला। तिलों का तेल दस तोला धीमी आग पर पकाते रहें। जब आमलों का रस जल जायें तो तेल को सावधानी से निथार कर छान लें। डा० जैलानी

बाल शोष (सूखा)

बच्चों का सूख 2 कर काँटा होते जाना, हरे पीले अतिसार, कै अजीर्ण, ज्वर, दुर्बलता इत्यादि में अत्यन्त उपयोगी है। कच्छुये की खोपड़ी की हड्डी जहर मोहरा दोनों को बराबर वजन लेकर खरल कर लें। फिर अर्क वेदमुश्क में 1 दिन खरल करके 1–1 रत्ती की गोलियाँ बना लें। प्रातः सायं 1 - 1 गोली अर्क गाओजवान के साथ दें। कुछ ही दिनों में बच्चा मोटा हो जायेगा।

गोदहरी

योग क्या है, चमत्कार है। ईश्वर की कृपा से उन स्त्रियों को जिनके गर्भाशय में खराबी न हो मासिक धर्म ठीक आ रहा हो, यदि गर्भ न ठहरता हो तो इसके प्रयोग से उसी मास में गर्भ ठहर जायेगा।

हाथी दाँत का बुरादा दो तोला, पीपल के वृक्ष की दाढ़ी दो तोला, बड़ वृक्ष की दाढ़ी दो तोला, । छोटी इलायची के बीज दो तोला, तबाशीर 2 तोला। तमाम दवाओं को बारीक 2 पीस कर संभालकर रख लें।

जब स्त्री मासिक धर्म से निवृत हो जाये तो प्रातः सायं समय तीन माशा गाय के दूध के साथ 1 सप्ताह तक उसको प्रयोग करायें तब स्त्री प्रसंग करें। ईश्वर गोद हरी करेगा।

कई रोगों के लिए नस्य

मुझे आपके औषधालय में यह छोटी सी वस्तु बहुत ही प्रिय है। इस नसवार ने मुझे अदभुत चमत्कार दिखाये हैं। रोते को हंसाना, वेहोश को होश में लाना इसका साधारण सा चमत्कार है। हर प्रकार की सिरदर्द–चाहे कितनी ही पुराना क्यों न हों, दाँतों का दर्द, दाढ़ का दर्द, बलगमी पदार्थ से आँखें दुखना तथा अपस्मार (Epilepsy) में अत्यन्त उपयोगी है। जुकाम नजला में तो 1 बार लेते ही लाभदायक सिद्ध होती है। अनुभूत तथा शत प्रतिशत सफल औषधि है। कभी बेकार नहीं होती।

नौशादर 1 तोला, काफ़ूर 1 रत्ती। दोनों को महीन पीसकर सावधानी से 1 शीशी में बन्द कर लें तथा आवश्यकता के समय 1 चुटकी ज़ोर से लें।

देशी कोनीन मिक्सचर

चिरायता आधी छटाँक, पानी तीन पाव, नौशादर एक तोला। पहले चिरायता को बिल्कुल बारीक टुकड़ों में काट करके पानी में पन्द्रह बीस मिनट तक खूब उबाला जाये। फिर नौशादर (एमोनिया क्लोराईड) मिला और छानकर कार्क वाली स्वच्छ बोतल में भर लिया जाये।

मात्रा – आधी छटाँक दोपहर और सायं प्रयोग करनी चाहिये। बुखार उतर जाने के बाद एक दो रोज दूध में सागूदाना पकाकर देना चाहिये। हर प्रकार के ज्वरों में उपयोगी सिद्ध हुई है तथा ज्वर के बाद की दुर्बलता को दूर करती है।

एक ही मात्रा में संग्रहणी को आराम

एक ही बार के सेवन से प्रवाहिका (Dysentery) को दूर करने वाली अत्युत्तम औषधि है।

निम्नलिखित योग प्रवाहिका को दूर करने लिये अत्यन्त उपयोगी है तथा 1 ही खुराक से प्रवाहिका को आराम आ जाता है। दूसरी मात्रा की तो आवश्यकता ही नहीं पड़ती, परन्तु शर्त यह है कि रोटी न खाई जाये। उस दिन या 1 दिन पश्चात साबूदाना की पतली खीर खायें या खिचड़ी का सेवन करें।

योग – दारचीनी तीन माशा, कत्था सफेद दो तोला, पानी दस छटांक। पहले दारचीनी और कत्थे को बारीक पीस और कपड़े से छान लें। फिर पानी कलई की हुई देगची में डालकर कलई किये किये ढक्कन से उसे ढक कर चूल्हे पर चढ़ाकर आग जला दें। जब पानी खूब उबलने लगे तब पिसी दवा को देगची में डालकर तुरन्त आग से नीचे उतार कर ठण्डी जगह पर रखें जब बिल्कुल ठन्डी हो जायें तो छानकर शीशी में सुरक्षित रखें आवश्यकता के समय इस दवा से युवावस्था वाले को तीन से चार तोला और बच्चे को उचित मात्रा में कम करके पिलायें।

कई रोगों की एक दवा

कई रोगों में यह औषधि जादू का सा प्रभाव रखती है। तड़पते हुये रोगी को तुरन्त लाभ पहुंचाती है। देखने में साधारण है परन्तु तीर की तरह कार्य करती है। रोतों को हसाना इसी का काम है। अतएव आमाशय रोगों में चूर्ण के तौर पर, मानसिक रोगों में नसवार के रूप में, दाँतों के रोगों में मंजन के तौर पर और नेत्र रोगों में सुरमे के रूप में इसका प्रयोग करें बहुत उपयोगी है।

काली मिर्च, नौशादर, गेरू मिट्टी तीनों वस्तुओं को समभाग लेकर बारीक पीसकर सुरमा की तरह चूर्ण बना लें और आवश्यकता के समय चाहे सिर दर्द कैसा क्यों न हो, दातों का दर्द, नज़ला, जुकाम, अपस्मार तथा मूर्च्छा को दूर करने के लिए नसवार के रूप में प्रयुक्त करें। दाँतों का मैल, मुंह की दुर्गन्ध, पीप, बादी, सूजन

ग्रौर दर्द को करने के लिए मंजन के रूप में प्रयोग करें ग्रौर गर्म पानी से कुल्ली करें । ग्रजीर्ण, उदरशूल, पेट फूल जाना, वायु गोला इत्यादि में दो रत्ती ग्रर्क सोंफ (गर्म करके) के साथ प्रयोग करायें । ग्राँखो की धुन्ध, जाला, फोला रात्रि ग्रन्ध ग्रादि के लिये चार भाग सुरमा में मिलाकर ग्राँखों में लगायें । प्रवाहिका, मरोड़, ग्रतिसार में 1 तोला गुलकन्द में मिलाकर खिलायें, ऊपर से ईस्पगाल का लुग्राव खिलायें। गठिया, सूजन, हर प्रकार के दर्द को दूर करने के लिये किसी तेल में मिलाकर मालिश करें ।

गीली खारिश की चमत्कारी ग्रौषधि

ग्रजवायन, हरमल के बीज डेड़ 2 तोला, प्याज 1 तोला तीनों को बारीक करके दस तोला तेल सरसों में जलायें ग्रौर लोहे के भारी मूसली से रगड़कर लेप वना लें ।

1–2 बार खारिश के स्थान पर मल दें । गीली खारिश के लिये उपयोगी है तथा दो चार रोज़ में रोग नष्ट कर देती है ।

नए सोज़ाक की दवा

बड़ी इलायची विना छिल्के की, शोरा कल्मी बराबर लेकर ग्रलग ग्रलग पीस कर मिला लें । 3 से 6 माशा प्रातः व सायं पानी से फाँक लें। यह सोजाक को दूर करने की ग्रचूक ग्रौषधि है । ग्रौषधि प्रयोग के समय गर्म, खट्टी वस्तुयें, ग्रचार तथा लाल मिर्च न खायें ।

ग्रनेक रोगों की एक दवा

प्रतिष्ठित हकीम रजीउद्दीन (स्वर्गीय) रईस तथा ग्रानरेरी मैजिस्ट्रेट देहली ।

यह मेरा गुप्त योग है । सैकड़ों रोगियों पर इसकी परीक्षा की जा चुकी है ।

योग—गोदन्ती, असगंध नागौरी, पाँच पाँच तोला अलग 2 कूटकर मिट्टी के कूजों में डालकर उस पर सरपोश लगाकर जोड़ों को गीली मिट्टी से बन्द करके सुखा लें। तब किसी कोने में वायु से बचा कर, भूमि में गढ़ा खोदकर इस कूजा के ऊपर नीचे और चारों तरफ दस सेर उपले रख दें। सायंकाल को आग लगायें। समस्त रात्रि यह कूजा आग पड़ा रहने दें। दिन को जब राख ठन्डी हो जाये तो सावधानी से मुंह खोलकर औषधि निकाल लें।

(1) गर्मी तथा जाड़े से चढ़ने वाला ज्वर होने से दो घण्टे पूर्व 1 रत्ती दवा लगे हुये पान के साथ खिलायें।

(2) ज्वर में 1 रत्ती औषधि तुलसी के पत्ते के साथ दें।

(3) पक्षाघात, अधरंग अकड़न में 1 रत्ती सोंठ के मुरब्बे के साथ दें।

(4) शक्ति बढ़ाने के हेतु 1 रत्ती औषधि 1 आमला के मुरब्बे के साथ दें।

(5) प्रसूत के रोग में 1 रत्ती औषधि 2–2 रत्ती जाय फल के साथ दें।

(6) गठिया और वात के दर्दों में 1 माशा अकरकरा के चूर्ण के साथ दें।

यह औषधि अगणित रोगों को दूर करने में अचूक है।

चित्रकूट की श्वास रोग की औषधि

विज्ञापन करने वाले वैद्य और औषधि विक्रेता चित्रकूट की औषधि के नाम पर जनता से बहुत रुपया लूट रहे हैं। पूर्णमाशी के दिन इस औषधि का सेवन करने से दमा के रोगियों को इससे बहुत लाभ पहुंचता है। काफी समय तक खोज करने के पश्चात इस बूटी का रहस्य मालूम किया गया है।

यू० पी० के एक विज्ञापनदाता पाठा बूटी की जड़ को पीसकर तीन रुपये प्रति रोगी के हिसाब से वी० पी० भेज देते हैं। मात्रा—रोगी इस बूटी को 1 माशा पिसी हुई 8 काली मिर्च मिलाकर पानी से पी ले।

गर्मियों के दिनों में इस दवा को ठन्डाई के रूप में पानी में रगड़ कर पीने को कहा जाता है। 1 घन्टा बाद पाव भर दूध पीने का आदेश दिया जाता है। इससे बलगम बाहर निकल आती और श्वास का दौरा कम हो जाता है।

शक्तिवर्द्धक अद्‌भुत औषधि

प्रोफैसर डाक्टर रामकृष्ण बी० ए० बी० एस० सी० आयुर्वेद आचार्य ने इस औषधि की अपनी हिन्दी पुस्तक "पेटेन्ट औषधियाँ" में बहुत प्रशन्सा की है।

आपका कथन है कि आपने यह औषधि एक रईस जो बिल्कुल नपुन्सक था के लिये बनाई थी। बाद में उसके एक मित्र ने जो योरुप में काफी समय तक रहा यह औषधि बनाकर यथेष्ठ धन कमाया। उनका कहना है कि यह दवाई इतनी शक्ति प्रदान करती है कि इसके गुणों को शब्दों का रूप नहीं दिया जा सकता। अनेक स्त्रियों के पति, वृद्धावस्था में शादी कर लेने वाले प्रयोग करके ही इसके चमत्कार देख सकते हैं। एक दिन में इस औषधि की सहायता से सेरों दूध हजम हो जाता है।

गर्मी, खुश्की को दूर करने के लिये इस औषधि के साथ दूध और घी का अधिक प्रयोग अत्यन्त आवश्यक है।

नकछिकनी	तीन रत्ती	कायफल	छः रत्ती
लौंग	चार रत्ती	केसर	एक रत्ती
शिगरफ	चार रत्ती	रेगमाही	एक माशा
माजूफल	चार रत्ती	सोने के वर्क	सात रत्ती

अफीम	चार रत्त	चाँदी के वर्क	सात रत्ती
दारचीनी	एक माशा	कस्तूरी (मुश्क)	एक माशा

सब औषधियाँ अलग 2 पीसकर मिला लें। शाम को दो माशा इस दवा को आधा सेर दूध के साथ दें। अगर आमाशय या छाती में जलन हो तो अधिक दूध घी पियें।

दमे की अद्‌भुत औषधि

मैंने श्वास की अनगिनत औषधियाँ बनाई परन्तु वास्तव में किसी से पूरा आराम न आता था। निम्नलिखित औषधि यद्यपि दमे को पूरी तरह समाप्त तो नहीं करती मगर इससे रोगी का श्वास रोग (दमा) बहुत कम रह जाता है। इसके सेवन से खाँसी तथा श्वास रोग से रोगी बचा रहता है। कफ निकल जाती और रोगी अनुभव करता है कि उसे रोग नहीं रहा अगर कभी दमे का दौरा हो जाये तो इसी औषधि के सेवन से आराम आ जाता है।

यह श्वास की सैकड़ों औषधियों में उतम दवा है। प्रारम्भिक दमा, पुरानी बलगमी खाँसी के लिये तो यह एक सुन्दर उपहार है। इससे फेफड़ों में जमी हुई बलगम पतली होकर स्वयंमेय सूख जाती तथा श्वास की नाली साफ हो जाती हैं। मुझे यह उपहार एक प्रसिद्ध सन्यासी से वर्षों के यत्नों के पश्चात प्राप्त हुआ। चिरकाल तक प्रयोग करने से रोग का नाश हो जाता है।

योग—मीठा तेलिया (Aconite) शुद्ध 1 तोला, काली मिर्च 1 तोला दोनों को अलग 2 पीसकर कपड़े से छानकर आपस में मिलाकर खरल करें। जब मैदे की भाँति हो जाये तो ताजा अदरक का रस निकालकर इसमें डालें तथा खरल करते रहें। जब खरल करते 2 रस सूख जाये तो और रस डाल दें। इस भाँति 1 बोतल (तीन पाव) अदरक का रस सूख जाये तो इस औषधि की उर्द की दाल के दाने के बराबर गोलियाँ बना लें। 1–2 गोली प्रातः तथा

सायं ताजे पानी या सौंफ के अर्क के साथ दें। खट्टी मीठी वस्तुओं से परहेज करें। बलगमी खाँसी तो तीन चार दिन में दूर हो जायेगी, मगर दमे के लिये एक दो सप्ताह तक औषधि सेवन करना आवश्यक है।

(हकीम इल्म दीन भागोवालिया सम्पादक अलमुआलिज)

कम सुनना (बहरापन) की औषधि

लहसन की (छिलका उतरा हुआ) 8–10 फाँकें, कड़वे बादामों का तेल दो तोला। दोनों को मिलाकर आग पर रखें। जब लहसन तनिक काला हो जाये तो साफ करके छानकर शीशी में बन्द करके रख लें। 2–3 बूंदें थोड़ा गरम करके कान में डालने से बहरापन (कम सुनाई देना) दूर हो जाता है।

(हकीम नूरुद्दीन नैरवी महाराजा जम्मू काश्मीर के शाही हकीम)।

विवाहित पुरूषों के लियें अनुपम उपहार

लाहौर के प्रसिद्ध हकीम फिरोजुद्दीन साहब ने इस औषधि की बहुत प्रशन्सा की है। विवाहित व्यक्तियों के लिये यह विशेष औषधि है।

मोटे छुहारे आवश्यकतानुसार लेकर रात को भैंस के दूध में भिगोकर रख दें। सुबह को चीरकर गुठली निकालकर इस जगह विशुद्ध केसर और अफीम हरएक दवा 2–2 रत्ती हर 1 छुहारे में डालकर इसमें बड़ वृक्ष का दूध भर लें। जब बड़ का दूध सूख जाये तो और दूध डालें। यहाँ तक कि बड़ का और दूध न जा सके, तब इन छूहारों को गुंधे हुये आटे में लपेटकर शुद्ध घी में इतनी देर तक भूनें कि आटा लाल हो जाये। तब छुहारों को निकाल कर दवाओं समेत छुहारे कूट लें और चने के बराबर गोलियाँ तैयार कर लें। शाम को 1–2 गोली दूध से प्रयोग करें।

क्षय रोग की अत्युत्तम औषधि

अनेक आयुर्वेदिक पुस्तकों के रचयिता राजवैद्य कृष्ण दयाल ने क्षय रोग के लिये निम्नलिखित औषधि की बहुत प्रशंसा की है।

योग—सफेद फूल वाले बाँसा की जड़ का छिलका साढ़े बारह सेर कुचल कर चौंसठ सेर पानी में डालकर उबालें कि पानी चौथाई रह जाये तब इसको भली भाँति मलकर छान लें तथा इसमें बारह सेर खाँड मिलाकर धीमी आँच पर चाशनी तैयार करें। जब गाढ़ा शर्बत बन जाये और तार छोड़ने लगे तो निम्नलिखित औषधियाँ बारीक पीसकर उसमें मिला दें।

तेज पत्र, मीठा कुठ, कमीला, दारचीनी, सोंठ, काली मिर्च, पिपली, छोटी इलायची, कायफल, सफेद जीरा, काला जीरा, पीपलामूल, चव्य, हरीतकी का छिलका, तालीसपत्र, कुटकी, सूखा धनिया। प्रत्येक दवा चार चार तोला बारीक पीसकर चाशनी में मिला दें तथा 1 सेर शुद्ध शहद मिलाकर सुरक्षित रखें।

सेवन विधि—दिन में दो तीन माशा से एक तोला तक दो तीन बार दें।

यह अचूक औषधि ऐसी अवस्था में लाभ पहुँचाती है जब क्षय रोगी को खाँसी के समय बलगम के साथ रक्त आता हो। औषधि खाने के पश्चात् बकरी का गर्म किया हुआ दूध पिलाना बहुत लाभकारी है।

इससे काफी लाभ पहुँचता है। यह अचूक औषधि है।

उदर के पुराने दर्द की औषधि

हकीम अजमल खाँ के साथी 80 वर्षीय पाकिस्तान के सबसे बड़े हकीम फरीद अहमद का अनुभूत योग—

एक वैद्य मनुष्य की जली हुई हड्डी की भस्म बनाकर मिर्गी के रोगियों को दिया करता था। जिससे बहुत से रोगी स्वस्थ हो गये। मेरे एक शिष्य ने मनुष्य की जली हुई हड्डी का चूर्ण बनाया। जिन रोगियों को वर्षों से पेट में दर्द रहता था, उनको 1 रत्ती खिलाया। ईश्वर की कृपा से लाभ हुआ। उसके समकालीन वैद्यों को आश्चर्य हुआ। एक दिन मेरे पास एक रोगी आया। जिसको 2 वर्ष से पेट में दर्द था। मैंने यही चूर्ण दिया ईश्वर की कृपा से लाभ हुआ। मनुष्य की जली हुई हड्डी शमशान में सुगमतापूर्वक मिल सकती है।

आतशक की कम खर्च और अनुभूत औषधि

यह हृदय का गुप्त रहस्य है जो पाठकों को भेंट कर रहा हू। सैंकड़ों वैद्यक पुस्तकों को देखने के पश्चात भी यह योग न मिलेगा। हानि और विषरहित तथा अत्युत्तम है। आतशक चाहे किसी प्रकार का हो इसके प्रयोग से आराम आ जाता है। कोई विशेष परहेज नहीं है। विषैली औषधियाँ चाहे रोगी को आराम दे दें, परन्तु फिर भी अपना विषैला प्रभाव छोड़ जाती हैं। इस टोटके से शरीर चाहे कैसा ही गल सड़ क्यों न गया हो। शरीर कुन्दन की भाँति निकल आता तथा सर्वदा के लिए रोग समाप्त हो जाता है। गुप्त योग हैं। बनाकर लाभ उठायें।

उनाब विलायती 41 दाने बिना कूटे लेकर रात को 20 तोला पानी में भिगो दें। प्रातः हाथों से अच्छी तरह मल और छानकर बिना कुछ खाये इसको पी लें। 41 दिन तक यही दवा खाते रहें। हर प्रकार के आतशक को आराम आ जायेगा।

अंग्रेज़ सिविल सर्जन के अनुभूत योग

लेफ्टीनेन्ट कर्नल डाक्टर बर्डवुड एम० ए० एम० डी० सिविल सर्जन। अंग्रेजों के शासन काल में मेडिकल स्कूल आगरा के प्रिंसिपल थे। सिविल सर्जन होने पर भी आपको भारतीय देसी घरेलू औष-

धियों की रिसर्च का बहुत शौक था। आपने अनेक रोगियों को देसी औषधियों दीं, उन पर परीक्षण किये। इसके पश्चात इन दवाओं का पूरा हाल अपनी अंग्रेज़ी पुस्तक Bazar Medicines में लिखा। यहाँ उनकी इस पुस्तक से कुछ अनुभूत योग लिखे जाते हैं।

प्रदर के रोग—अजवायन छः माशा, दाना बड़ी इलायची 1 तोला, काली मिर्च 6 माशा, सोंठ 6 माशा। हर एक औषधि पृथक 2 पीसकर कपड़े से छानकर मिला लें। पेट के तमाम रोग, अजीर्ण, भूख की कमी, पेट दर्द को दूर करता तथा भूख लगाता है। मात्रा–1 से 2 माशा।

कब्ज—मुसब्बर 24 ग्रेन, हीरा कसीस 24 ग्रेन, दालचीनी 60 ग्रेन, शुद्ध मधु आवश्यकतानुसार। प्रत्येक दवा को अलग अलग पीस और छानकर शहद में गूंध कर 24 गोलियाँ तैयार करें। यह गोलियाँ कब्ज़ को दूर करतीं व साफ शौच लाती हैं। रात को सोते समय एक गोली खा लें।

खांसी—नौशादर 10 ग्रेन, पानी 1 औंस, मुलहेठी का ऐक्सट्रैक्ट (Liquid) 20 बूंद। सबको परस्पर मिलाकर सेवन करें। यह एक मात्रा है।

खाँसी श्वास—बाँसा (अड़ूसा) के सूखे पत्ते आधी छटाँक। 10 छटाँक उबलते पानी में उबालें। चौथाई पानी रह जाने पर नीचे उतार कर रख दें। ठंडा होने पर छानकर इसमें काली मिर्च 10 रत्ती, सौंठ 10 रत्ती, खाँड 3 ड्राम। सबको आपस में मिला लें। आधा औंस तक सेवन करें। पुरानी खाँसी तथा फेफड़ों की दुर्बलता दूर करता है।

श्वास (दमा)—बाँसा (अड़ूसा) के पत्तों को कूट कर सिग्रेट

बना लें, जब दमा का दौरा होने लगे तो रोगी को यह सिग्रेट पिलायें। दमा को आराम आ जायेगा। अद्भुत औषधि है।

गर्भपात—अशोक वृक्ष की भीतरी छाल, शिवलिंगी के बीज, सहदेवी बूटी, जावित्री, छोटी इलायची के बीज, कूजा मिसरी। सब दवायें बराबर बराबर लेकर पीसकर मिला लें।

मात्रा—एक माशा गाय के दूध के साथ दें।

इसका सेवन करने से बच्चेदानी के समस्त रोग दूर हो जाते हैं। यह गर्भपात की अद्भुत औषधि है।

इसको थोड़े समय तक सेवन करने से स्त्री गर्भवती हो जाती है।

अंगों का कांपना--जटामांसी 2 ड्राम, पानी 10 छटांक। धीमी आग पर रखकर उबालें। जब चौथाई पानी रह जाये तो छान कर पिला दें। सिर तथा हाथ पाँव के काँपने में उपयोगी है।

मलेरिया ज्वर—अजवायन 8 ग्रेन, आक की जड़ का छिलका 1 ग्रेन, शोरा कलमी 8 ग्रेन, सोडा बाई कार्ब (खाने का सोडा) 16 ग्रेन। पृथक पृथक पीसकर कपड़े से छानकर मिला लें।

खाने की मात्रा–4 से 10 ग्रेन तक। मलेरिया बुखार को तुरन्त दूर करती है।

घावों पर छिड़कने का पोउडर—बोरिक एसिड 1 भाग, जिंक आक्साइड (जस्त का फूला) 1 भाग, निशास्ता 2 भाग। कपड़े से छानकर रख लें। घावों को साफ करने के लिये अत्यन्त उपयोगी Dusting Powder है।

संग्रहणी–कैस्टर आयल 1 औंस, कीकर की गोंद 3 ड्राम, खाँड 3 ड्राम, अर्क जीरा 4 औंस। सबको आपस में मिलाकर अच्छी तरह खरल करके ऐमलशन तैयार कर लें। एक एक ड्राम दिन में तीन बार दें।

पुरानी संग्रहणी—कुर्ची की छाल 1 औंस, गर्म पानी 1 पाइन्ट, आग पर रख कर उबालें। जब चौथाई पानी रह जाये तो उतार कर छान कर रखें। एक तोला प्रातः तथा सायं के समय प्रयोग में लायें। पुरानी संग्रहणी के लिये उपयोगी है।

दाद, खाज, एक्जीमा—फिटकरी 1 ड्राम, सुहागा 1 ड्राम, 8 औंस पानी में लोशन बनाकर इसमें कपड़ा भिगो करके दाद वाले स्थान पर रखें।

सोज़ाक—कबाब चीनी 20 ग्रेन, फिटकरी 5 ग्रेन। यह एक मात्रा है। दिन में ऐसी दो तीन मात्रा दें तथा 24 ग्रेन फिटकरी 6 औंस पानी में मिलाकर पेशाब की नाली में पिचकारी करें।

रक्तस्राव—फिटकरी 10 ग्रेन, टिंक्चर ओपियम 5 बूंद, पानी एक औंस में मिलाकर पियें। आमाशय और फेफड़ों से खून आने में उपयोगी है।

हिस्टेरिया—काफ़ूर 4 ग्रेन, हींग 4 ग्रेन। दोनों की एक गोली बनायें। ऐसी एक एक गोली दिन में 2–3 बार दें।

कब्ज—सत मुलहेठी दो ड्राम, सना एक औंस, सूखा धनिया चार ड्राम, इमली दो औंस, आलू बुखारा 1 औंस, खाँड 6 औंस। कूट पीसकर तैयार करें। अत्यन्त स्वादिष्ट है। 1 ड्राम, खाने से पाखाना खुलकर आ जाता है। बवासीर की कब्ज़ के लिए अत्यन्त लाभदायक है।

कोढ़ तथा रक्त की खराबी—चालमोगरा आयल पाँच बूंदें, काड लिवर आयल 30 बूंद। दिन में दो बार खाना खाने के पश्चात पिलायें। नीम के तेल में चालमोगरा का तेल मिलाकर शरीर पर मालिश करें।

मलेरिया—काला दाना २० ग्रेन, काली मिर्च ५ ग्रेन, अतीस १५ ग्रेन। यह एक खुराक है। ऐसी दो मात्रा प्रातः तथा सायंकाल दें।

बवासीर—रसौंत १ ग्रेन, नीम के बीज की गिरी तीन ग्रेन, मुनक्का दस ग्रेन। सबको मिलाकर एक गोली बना लें। ऐसी १ गोली रात को सोते समय खिलायें और अफीम ३० ग्रेन, माजू एक ड्राम पीसकर वैसलीन १ औंस में मिलाकर मरहम बनाकर मस्सों पर लगायें। बवासीर की पीड़ा और रक्त आने में तुरन्त लाभ करती है।

गर्मी के दाने (पित्त)—काफूर दो ग्रेन, जिंक आक्साइड दो ड्राम, सुहागा अंग्रेजी (Borax) दो ड्राम, निशास्ता दो ड्राम, कपड़े से छानकर मैदा की तरह बारीक पीसकर गर्मी के दानों पर मल दें।

कांच निकलना—माजू बारीक १ औंस १ पाइंट पानी में दस मिनट तक उबालकर ठण्डा हो जाने पर इससे गुदा को धोयें।

दाद—(१) नीला थोथा २५ ग्रेन, माजू एक ड्राम। दोनों को पीसकर कपड़े से छानकर १ औंस वैसलीन में मिलाकर दाद पर लगायें।

(२) सुहागा दो ड्राम, सिरका दो औंस मिलाकर दाद पर लगाने से आराम आ जाता है।

खारिश—गन्धक १ भाग, कमीला दो भाग। दोनों को बारीक पीसकर कपड़े से छान लें और खारिश के स्थान पर पौडर की भांति मल दें।

प्रमेह—(वीर्य निकल जाना) काफूर दो ग्रेन, अफीम चौथाई ग्रेन। ऐसी १ खुराक दिन में दो बार खिलायें।

अजीर्ण—(१) हीरा कसीस २ ग्रेन, १ औंस अर्क चिरायता के साथ दो बार प्रयोग में लायें।

(२) हीरा कसीस २४ ग्रेन, दारचीनी एक ड्राम । पृथक २ कूट कर शहद से २४ गोलियां तैयार करें । दो गोलियां प्रतिदिन खिलायें ।

मधुमेह—(पेशाब में शक्कर आना) एक सन्यासी का गुप्त भेद—गुड़मार बूटी पीसकर रख लें। प्रातः सायं २–३ माशा खिलाते रहने से थोड़े समय में मूत्र में चीनी की मात्रा कम हो जाती है ।

बाबा शामगिर सन्यासी

पेचिश की औषधि

(हकीम श्री किबरिया खान रईस दिल्ली)

दिल्ली में इस औषधि का योग प्राप्त करने के लिये अनेक डाक्टरों तथा हकीमों ने भरसक प्रयास किये। यह योग अत्यन्त कठिनाई से प्राप्त हुआ ।

नुस्खा—पीली हरड़, आमला बिना गुठली, माजू, काफूर एक एक भाग, केसर काशमीरी शुद्ध आधा भाग । अलग २ पीसकर खरल में डालकर बरांडी या अर्क गुलाब में खरल करके चने के बराबर गोलियां बना लें । एक २ गोली प्रातः, सायं तथा दोपहर को दें । यह पेचिश के लिये अति उपयोगी है ।

श्वेत कुष्ठ की औषधि

कलकत्ता के एक वैद्यराज केवल श्वेत कुष्ठ रोग की ही चिकित्सा करते हैं। देश के सर्वश्रेष्ठ पत्रों में विज्ञापन देते हैं। टेलीफोन तक लगा रखे हैं । रोगी की आर्थिक अवस्था देखकर एक २ रोगी से तीस से पचास रुपये तक प्राप्त करते हैं। एक रोगी ने उनकी दवा को हमें भेजा । जिसकी रसायनिक परीक्षा करने पर इसमें निम्नलिखित औषधियां मिलीं —

बाउवढ़ंग, नरगुंडी की जड़, बाबची, मूसली सफेद ।

चारों दवायें समभाग पीसकर मिलायें। इस औषधि को घी के साथ खाने और बाद में गाय का मूत्र तीन चार छटांक पीने और यही औषधि गाय के मूत्र में मिलाकर लेप करने से श्वेत कोढ़ अर्थात् फुलबहरी दूर हो जाती है।

वर्षों पुराने पायोरिया को आराम

इस योग से वर्षों का पुराना पायोरिया (मसूड़ों से पीप और रक्त आना) को आराम आ जाता है। इस योग से ऐसे २ रोगी भी ठीक हो चुके हैं। जिनको बड़े २ डाक्टरों ने तमाम दांत निकलवा देने की सलाह दी थी। योग यह है –

टिंक्चर आयोडीन (रेक्टीफाइड)	= ६ भाग
टिंक्चर मिर्रह (Myrrh)	= ४ भाग
टैनिक एसिड (Tannic Acid)	= आधा भाग
ग्लीसरीन	= ८ भाग

सबको आपस में मिलाकर रख लें और रूई की फुरेरी से दिन में दो बार मसूड़ों पर ४—५ सप्ताह तक मल दिया करें।

मुर्गी के अन्डे के बराबर पत्थरी की बिना आपरेशन चिकित्सा

हकीम फज़ल अहमद बदांयूनी ने यह योग अखिल भारतीय वैद्यक एन्ड युनानी कान्फ्रैन्स में बताया और प्रमाण के तौर पर ३०० पत्थरियां भी हकीमों को दिखाईं और कहा कि इस दवा से मुर्गी के अन्डे के बराबर पत्थरी भी टूट २ कर बिना आपरेशन निकल जाती है।

योग—संग यहूद (बेर पत्थर) ५ तोला, कलमी शोरा १० तोला मूली का रस तीन सेर। एक मिट्टी के बर्तन में ५ तोला शोरा

डालकर उस पर संग यहूद फैला दें। अब बाकी ५ तोला शोरा उसके ऊपर फैला दें। तब आधा सेर मूली का रस डालकर चूल्हे पर रखकर वायु से सुरक्षित स्थान में दो सेर उपलों की आग दें। भली भांति ठन्डा हो जाने पर इसी प्रकार बार २ आधा सेर मूली का रस डालकर ६ बार आग दें और ठन्डा करें। दवा तैयार है। एक रत्ती दवा १ रत्ती यवक्षार और एक रत्ती मूली क्षार में मिलाकर शर्बत बजूरी या पानी के साथ दिन में तीन बार प्रतिदिन देते रहें। पत्थरी रेत बनकर मूत्र के साथ निकलती जायेगी।

मां के पेट से मुर्दा या जिन्दा बच्चा निकालने वाली दवा

ऊंट कटारा बूटी की आधा इन्च मोटी और तीन इन्च लम्बी जड़ को लेकर स्त्री के तालू (सिर का सामना भाग) के बाल हटाकर वहां जड़ को रखकर हाथ से दबाये रखें। मां के पेट में जीवित या मुर्दा बच्चा जैसा भी हो ५ मिनट में पैदा हो जायेगा। बच्चा पैदा होते ही जड़ को तुरन्त हटा लें वरना हानि हो सकती है।

पुत्र उत्पन्न होगा

कविराज हरनाम दास बी० ए० लेखक पत्नी पथ प्रदर्शक का वह योग जिससे स्त्री को पुत्र उत्पन्न होता है। चाहे इससे पूर्व लड़कियां ही लड़कियां पैदा होती हों।

योग—मोर के पंख के अन्दर के दो रंगीन चांद लेकर कैंची से बहुत बारीक काटकर न घिसने वाले खरल में डाल पानी की सहायता से घोट लें। जब बाल बिल्कुल न रहें और मोर के चांद का बारीक खुश्क पाउडर बन जायें तो उसमें आवश्यतानुसार गुड़ मिलाकर २ भागों में बांटकर उसे २ कैपशूलों में डालकर शिव लिंगी बूटी का १—१ बीज डालकर कैपशूलों को बन्द कर दें।

अब बिदारी कन्द वारीक पीस और कपड़े से छानकर उसकी ६–६ माशा की दो पुड़ियां वना लें।

स्त्री को गर्भ हो जाते ही तीन मास के अन्दर २ प्रातः काल और सायंकाल ४ बजे १–१ कैंपसूल बछड़े (नर बच्चे) वाली गाय के ताज़ा या उबले परन्तु ठण्डे मिश्री मिले दूध के साथ निगलवा दें। दूसरे दिन प्रातः बिदारी कंद की एक पुड़िया और तीसरे दिन दूसरी पुड़िया दूध के साथ प्रातः समय खिला दें। पहले दिन स्त्री सिर्फ दूध ही पिये। दूसरे और तीसरे दिन प्रातः समय दूध ही पिये और शाम को सातविक भोजन रोटी और सब्ज़ी ही खाये। खटाई, तेल और सम्भोग से परहेज़ करे। इस दवा से उसको शर्तिया पुत्र उत्पन्न होगा। चाहे पहले लड़कियां ही लड़कियां क्यों न पैदा हुई हों।

मृत्यु से कष्ट

कई रोगियों को मरते समय कई प्रकार के कष्ट होते हैं। जिससे उनको और उनके सम्बन्धियों को बहुत दुख उठाने पड़ते हैं।

आर्सेनिक एल्ब (Arsenic Alb) २०० शक्ति प्रसिद्ध होमियोपैथिक दवा को मरते समय रोगी को एक मात्रा खिला दें तो रोगी के विभिन्न रोगों से होने वाले कष्ट कम हो जाते हैं। वह अन्त समय तक शान्त रहता है और उसका मस्तिष्क सचेत हो जाता है। रोगी को इस दवा की ५–७ बूंद १ तोला पानी या मिल्क शूगर में मिलाकर दें।

कुकरों की दवा

मनुष्य के शरीर में जब कोई खराबी (दोष) आ जाती है तो उसके किसी अंग प्रत्यंग में कोई रोग हो जाता है। आंखो के पपोटों के अन्दर घाव (कुकरे) शरीर में दोष आ जाने से ही हो जाते हैं।

उनको आंखों में दवायें डालने से ठीक नहीं किया जा सकता। नये और पुराने कुकरों और भैंगापन जैसे आंखों के रोगों में प्रसिद्ध होमियोपैथिक दवा अर्जेन्टम नाईट्रीकम (Argentum Nitricum) २०० शक्ति की ४ से ६ बूंद एक तोला पानी या मिल्क शूगर में मिलाकर रोगी को प्रातः समय (बिना कुछ खाये) खिला दें। इस दवा की दूसरी मात्रा ३ दिन बाद प्रातः समय दें अर्थात् यह दवा कुछ समय तक सप्ताह में दो बार खिलाते रहें। इस दवा से न सिर्फ कुकरों को ही आराम आ जाता है बल्कि रोगी के कई और शारीरिक रोग भी दूर हो जाते हैं। हज़ारों रोगियों पर परीक्षित योग है।

आंखों का भैंगापन

जब मनुष्य का नर्वस सिस्टम तीव्र रोगों और विटामिनों की कमी आदि के कारणों से कमज़ोर हो जाता है तो उसके मस्तिष्क की स्नायुयें जो नेत्रों को घुमाती हैं, ठीक कार्य नहीं कर सकतीं। जिसके कारण मनुष्य की एक आंख तो एक ओर को देखती है और दूसरी आंख दूसरी ओर देखने लग जाती है। डाक्टर इस रोग की चिकित्सा आपरेशन बताते हैं। होमियोपैथिक दवा साईक्लेमिन ६ शक्ति की दो या तीन बूंद १ तोला पानी या मिल्क शूगर में मिलाकर दिन में चार बार ऐसी मात्रा प्रतिदिन एक दो मास तक खिलाते रहने से भैन्गापन दूर होकर आंखों की दृष्टि बढ़ जाती है।

ग्राईप वाटर बनाने की विधि

बच्चों के आमाशय और अन्तड़ियों के रोगों जैसे अजीर्ण, दस्त, कै, दूध हज़्म न होना, दांत निकालते समय के कष्टों में बाज़ार में बड़ी २ कम्पनियों के बने ग्राईप वाटर बहुत मंहगे बिक रहे हैं।

इन सबका योग यह है।

अनीथी आयल (सोये का तेल)	२ बूंद
सोडा बाई कार्ब	२० ग्रेन
रैक्टीफाईड स्प्रिट ९० प्रतिशत	९० बूंद
खांड का सादा शर्बत	एक औंस
प्रक्षालित जल (डिस्टिल्ड वाटर)	साढ़े तीन औंस

रेक्टीफाईड स्प्रिट में सोये का तेल भली प्रकार मिला लें। पानी में सोडा बाई कार्ब घोलकर शर्बत मिलाकर तमाम दवायें आपस में मिलाकर शीशी में डालकर कार्क लगा दें।

मात्रा—नवजात शिशु को आधा छोटा चम्मच, १ से ६ मास के बच्चे को १ छोटा चम्मच, बड़ें बच्चों को २ छोटे चम्मच दिन में ३–४ बार दें। प्रयोग से पहले दवा को हिला लिया करें और हमेशा ठण्डे स्थान में रखें।

तीसरी शादी

कई लोग बुढ़ापे में दूसरी या तीसरी शादी कर लेते हैं। परन्तु बुढ़ापे के कारण अपनी जवान धर्मपत्नी को खुश नहीं कर सकते। जिससे उस घर में लड़ाई झगड़े होते और शादी दुख में बदल जाती है। ऐसी दशा में वैद्य, डाक्टर ऐसे वूढ़े रोगी को होमियोपैथिक की प्रसिद्ध दवा लाईकोपोडियम १००० शक्ति की ५ से ७ बूंद प्रातः समय थोड़ी मिल्क शूगर या पानी में मिलाकर पिला दें। यह दवा सप्ताह में सिर्फ एक ही पुड़िया खिलानी काफी है। मास में चार बार अर्थात एक सप्ताह में एक मात्रा दें। इस दवा से ऐसे बूढ़े शादी के योग्य हो जाते हैं और उस चिकित्सक के धन्यवादी होते हैं।

डा० नैश एम० डी०

पोटासियम परमैंगनेट

अत्यन्त ही सस्ती अंग्रेजी औषधि है। अपने औषधालय में अवश्य रखें।

(१) सांप काटते ही डंक को तुरन्त ब्लेड या तेज चाकू से चौड़ा करके पोटासियम परमैंगनेट डंक के स्थान में भर दें। सांप के विष का प्रभाव नष्ट हो जाता है।

(२) एक हजार भाग पानी में एक भाग यह औषधि मिला लें। श्वेत प्रदर में लाभदायक है। इस लोशन से योनि में डूश करते रहें।

(३) नाक से पीप आने की दशा में योग नम्बर दो से नाक को प्रतिदिन धोयें।

(४) पायोरिया में भोजन के पश्चात् एक औंस पानी में आधा ग्रेन यह औषधि पानी में घोलकर गरारे करें।

(५) दस छटांक पानी में तीन ग्रेन यह औषधि मिला लें। यह पानी हैजा के रोगी को थोड़ा २ पिलाते रहें या तीन ग्रेन इस दवा पर कैराटीन का परत चढ़ाकर गोली बना लें। हैजा के रोगी को एक २ घन्टे बाद एक एक गोली खिलाते रहें।

अधिक पसीना आना

(१) सवा सेर पानी में दो बड़े चम्मच एसेटिक एसिड घोल कर असपंज को इस पानी से गीला करके रोगी के शरीर को पूंछ दिया करें। इससे अधिक पसीना आना दूर हो जायेगा।

(२) पानी में एसेटिक एसिड मिलाकर इसको खारिश, दाद, इन्द्रलुप्त, गंज, मस्सों पर लगाते हैं। इसको सिरके का तेजाब भी कहते हैं।

युक्लिप्टिस आयल

(Eucalyptus Oil)

(१) जुकाम, नज़ला, इन्फ्लुएन्ज़ा रोग में इसकी कुछ बूंदें रूमाल पर डालकर रोगी को सुंघाएं।

(२) सिर दर्द, छींक आने की दशा में इसकी कुछ बूंद माथे पर लगायें और नाक के आसपास मालिश करें।

(३) दस छटांक उबलते पानी में दस बूंद इस तेल की डाल दें। जिससे धुंआ निकलने लगेगा। यह धुंआ रोगी को सुंघाने से जुकाम, खांसी, गले के रोग, फेफड़ों की वायु की नालियों की सूजन को आराम आ जाता है।

(४) वैसलीन में मिलाकर इसको मलने से ऊपर लिखे रोग दूर हो जाते तथा शरीर के नंगे भागों पर मलने से मच्छर समीप नहीं आते।

(५) सफेद वैसलीन ५ भाग, मोम ५ भाग। अत्यन्त धीमी आग पर पिघलाकर नीचे उतार लें और बाद में यूक्लिप्टिस आयल एक भाग मिलाकर खूब हिलायें। गन्दे फोड़ों या जले हुए स्थान पर यह मरहम लगा दें। पट्टी न बांधी जाये। नहीं तो घाव खराब हो जायेगा।

(६) जुकाम, नज़ला, इन्फ्लुएन्ज़ा, प्रसूत ज्वर और सर्दी के ज्वर में इस तेल की तीन बूंद बताशे में डालकर या शहद में मिलाकर रोगी को खिलायें।

हिचकी तुरन्त बन्द

गारडीनल (Gardinal) आधी ग्रेन की टिकिया तीन तीन घण्टे पश्चात देते रहने से सख्त से सख्त हिचकी भी बन्द हो जाती है।

हृदय रोग

जब हृदय में अत्यन्त व्याकुलता तथा घबराहट हो और इसी कारण से नींद न आये तो आधी से एक ग्रेन तक फैनोबारबीटोन टिकिया के रूप में खिलायें। तुरन्त आराम होगा। इस औषधि को गार्डीनाल, फैनोबारबीटल, ल्यूमीनाल भी कहते हैं। इसका रंग सफेद, गंधरहित, स्वाद थोड़ा कड़वा होता है।

गर्भ की अनुभूत औषधि

वीट जर्म आयल Wheat Germ Oil (विटामिन ई) कैप्सूल के रूप में बिकता है। दो कैप्सूल दिन में तीन बार गर्भपात के चिन्ह प्रकट होने पर और इसके पश्चात् इस रोग से बचने के लिए एक कैप्सूल प्रातः तथा एक सायंकाल को काफी दिन तक देने से गर्भपात का भय नहीं रहता।

बवासीर का रक्त तथा दर्द तुरन्त बन्द

अफीम और माजू फल से बनी मरहम (Gall and opium ointment) कैमिस्टों से खरीद लें। इसको गुदा के भीतर बवासीर के मस्सों पर लगाते रहने से असह्य पीड़ा तथा रक्त आना तुरन्त बन्द हो जाता है। बायें हाथ की बीच वाली उंगली से रोगी इस मरहम को गुदा के भीतर लगायें।

रक्त तुरन्त बन्द हो जायेगा

घाव पर लगाने की यह औषधि अत्यन्त ही लाभप्रद तथा अनुभूत है। रुई की फुरेरी में यह औषधि लगाकर तुरन्त घाव पर लगायें। रक्त तुरन्त बन्द हो जायेगा। कैमिस्टों से टिंक्चर बैनजोईन कम्पाउण्ड खरीद लें। बस यही औषधि है पट्टी तक बांधने की आवश्यकता नहीं है। यह औषधि कीटाणुनाशक भी है।

यकृत दुर्बलता

जब यकृत पूर्णतया काम न करता हो और रक्त न रहा हो जिसके कारण मुख का रंग पीला हो गया हो तथा शरीर में रक्त की अत्यन्त कमी हो गई हो तो संसार भर में सफलतापूर्वक प्रयोग में लाई जाने वाली औषधि फोलिक एसिड (Folic Acid) को अवश्य प्रयोग करें। एक ग्रेन का बारह्वां भाग (पांच मिलीग्राम की एक से दो टिकियां) प्रतिदिन दस दिन तक एक खुराक देते रहें। इसके पश्चात बाद में एक टिकिया प्रतिदिन देते रहें।

नेत्र रोगों के लिए गोल्डन आयन्टमेंट

इस मरहम की एक दो सलाई नेत्रों में लगाने से नेत्रों के समस्त रोग दूर हो जाते हैं। मर्करी आक्साईड येलो (पीली) एक भाग को एक सौ गुना वैसलीन में मिलाकर, साफ पत्थर पर स्पॅचूला की सहायता से अच्छी तरह मिलाकर रख लें। मरहम तैयार है।

नेत्रों के लिए प्रोटारगोल लोशन

बच्चों की आंख दुखने और आंखों के दूसरे समस्त रोगों में एक दो बूंदें आंखों में डालें। अर्क गुलाब या डिस्टिल्ड वाटर सौ भाग में एक भाग प्रोटारगोल (Protargol) मिला लें। लोशन तैयार है। ड्रापर से दो बूंदें डालें। नीले रंग की शीशी में रखें।

अनेक रोगों को दूर करने वाली औषधि

अगर आपके औषधालय में सिबाज़ोल (Cibazol) की शीशी नहीं है तो आपको पूरा चिकित्सक नहीं कहा जा सकता यह औषधि समस्त संसार में लाखों रोगियों पर प्रतिदिन प्रयोग की जा रही है। इन टिकियों से आप निराश रोगियों को कुछ ही दिनों में ठीक कर सकते हैं। हर प्रकार का न्यूमोनिया, सोज़ाक, मूत्राशय की सूजन,

प्लेग, बेसिलरी संग्रहणी, चेचक, मेनिनजाईटिस (दिमाग के पर्दों में सूजन) जैसे रोगों में अत्यन्त चमत्कारिक औषधि है। यह औषधि टिकियों, एम्पूल, पाउडर तथा बाहरी प्रयोग के लिए मरहम के रूप में बिकती है। इस औषधि का प्रयोग करके आप मृत्यु का ग्रास बने हुए रोगियों को बचा सकेंगे। बड़ों को २-२टिकियां दिन में दो तीन बार दें। रोग कम होने पर मात्रा कम करते जायें।

दमा का दौरा तुरन्त बंद

न्यो एपीनीन निर्माता बरोज वेलकम की एक टिकिया श्वास रोग के दौरे के समय जीभ के निचले हिस्से में रख लें। धीरे धीरे स्वयंमेव घुल जायेगी। दमे का दौरा तुरन्त कम हो जायेगा। इस रोग को समूल दूर करने के लिए इस औषधि की एक एक टिकिया दिन में दो तीन बार जीभ के नीचे रखकर घुलने दें।

आग से जले घाव

अलसी का तेल या नारियल का तेल लेकर, इसको चूने के पानी में मिलाकर खूब घोटें,। यहां तक कि दोनों पदार्थ मिलकर गाढ़ा एमल्शन बन जाये। आग से जले घाव पर इस औषधि में कपड़ा या रूई भिगोकर रखें। तुरन्त दर्द, जलन और कष्ट दूर हो जायेगा।

उपदंश (तीसरे दर्जे) की औषधि

पोटासियम आइयोडाईड उपदंश तीसरा दर्जे का, त्वचा रोग, शरीर पर उभार जो आतशक के विष से छोटी २ गिल्टियों के रूप में होते हैं, के लिए अत्यन्त उपयोगी है। न्यूमोनिया के अन्तिम दर्जे में जब फेफड़ों से कफ को निकालना हो तो इसका प्रयोग बहुत अच्छा परिणाम दिखाता है। दुर्गन्ध युक्त कफ सुगमता से निकल जाती है। इसलिये दमा और क्रानिक ब्रोंकाईटिस में प्रयोग

किया जाता है। बिना रंग स्वच्छ धुंधली कलमें या सफेद दानेदार चूर्ण, स्वाद नमकीन, तनिक कड़वा, गंधरहित होता है इसकी मात्रा पांच से बीस ग्रेन पीसकर पानी में घोल कर दें।

पेट फूल जाना और आमाशय के अन्य रोगों की औषधियां

डाक्टर बरामवेल का यह योग पेट फूलना, भोजन का न पचना तथा उदर का भारीपन के लिए अत्यन्त लाभदायक है।

मैन्थल (पोदीना का सत) १ रत्ती का चौथा भाग, स्प्रिट अमोनिया एरोमेटिक ३० मिनिम, स्प्रिट क्लोरोफार्म ३० मिनिम मिलाकर मिक्सचर बना लें। यह एक खुराक है। उदर का भारीपन, पेट फूलना आदि होने पर थोड़ा पानी मिलाकर पिलायें।

प्लीहा और ज्वरों की अनुभूत औषधि

फैरी सल्फ दो माशा, कोनीन सल्फास दो माशा, एसिड सल्फयूरिक (Pure) २० मिनिम, टिंक्चर जिन्जर ४० मिनिम, मैगनेशिया सल्फास ५ तोला, गुलाब का अर्क १० तोला।

कोनीन सल्फास को तेज़ाब में थोडा सा गुलाब का अर्क मिलाकर घोल लें। फिर सब औषधियां मिला लें। ये दस खुराक हैं। प्रतिदिन प्रातः काल एक खुराक पिला दें तथा एक घन्टे के बाद गाय का आधा सेर दूध दें। उचित परहेज करायें।

लाभ—तप चौथिया (चौथे दिन आने वाला ज्वर) के लिए अचूक है। प्लीहा वृद्धि के लिए भी लाभदायक है। प्रतिदिन होने वाला ज्वर, नया तथा पुराना ज्वर दूर होगा।

नोट—गुलाब के अर्क में तेजाब बूंद २ करके डालें।

मलेरिया के लिए मिक्सचर

कोनीन सल्फ ५ ग्रेन, सल्फयूरिक एसिड डाईल्यूट १० बूंद, मैंगनेशिया सल्फ एक ड्राम, एक्वा क्लोरोफार्म एक औंस।

यह एक खुराक है। दिन में तीन बार दें।

सोज़ाक

मैथीलीन बिल्यू—दो ग्रेन।

सन्दल का तेल—५ मिनिम।

आयल कोपाईबा—३ मिनिम।

आयल सिनेमन (दारचीनी का तेल)—१ मिनिम।

सारी औषधियों को एक कैंपसूल में डालकर बन्द कर दें। दिन में तीन बार एक २ कैंपसूल देते रहें।

न्यूमोनिया की विश्वस्त औषधि

लेदरली लेबोरेटीज ने एक नई एन्टी बायोटिक औषधि एकरोमाईसीन (Achromycin) तैयार की है। यह औषधि भयानक न्यूमोनिया के लिए रामबाण सिद्ध हुई है। यह दवा पाउडर, तरल और कैंपसूल के रूप में बिकती है। साधारण रोग में एक ग्राम और रोग खतरनाक हो तो ४ ग्राम तक औषधि को चार खुराकों में बांट कर छः छः घन्टे बाद यह औषधि देते रहें। न्यूमोनिया के अतिरिक्त यह औषधि अन्य रोगों जैसे सोजाक, काली खांसी के लिए भी लाभकारी है।

मिर्गी की अनुभूत औषधि

(१) इस औषधि को काफी समय तक प्रयोग करने से अपस्मार (Epilepsy) को आराम आ जाता है। ल्यूमीनाल जिसको फेनो-बारबीटोन, गार्डीनाल तथा फेनो बारबीटल भी कहते हैं। दो ग्रेन लेकर कैपसूल में बन्द करके दिन में दो तीन बार देते रहें।

(२) पोटासियम ब्रोमाईड १५ ग्रेन
सोडा बाई कार्ब १० ग्रेन
एक्वा क्लोरोफार्म १ औंस

यह एक मात्रा है। ऐसी तीन खुराकें दिन में तीन बार देते रहें।

(३) ल्यूमीनाल तीन ग्रेन, लैक्टोज दस ग्रेन। दोनों को कैचिट में बन्द कर दे। एक एक कैचिट पानी के साथ दिन में दो तीन बार दें।

मलेरिया की सस्ती अनुभूत औषधि

इम्पीरियल कैमीकल इन्डस्ट्रीज़ ने वर्षों की रिसर्च के पश्चात इस दवा का आविष्कार किया है। मलेरिया बुखार में यह दवा कोनीन से भी अधिक लाभप्रद है। गर्मी तथा खुश्की नहीं करती। एक बड़ी टिकिया सप्ताह में केवल एक बार पानी के साथ खा लेने से मनुष्य मलेरिया के आक्रमण से बचा रहता है। मलेरिया रोग से पीड़ित व्यक्ति को दो छोटी टिकियां दिन में तीन बार दस दिन तक या एक बड़ी टिकिया प्रात: तथा एक सायं एक सप्ताह तक खिलाने से मनुष्य शरीर में मलेरिया के कीटाणु सर्वथा नष्ट हो जाते हैं। यह औषधि ऐवलोक्लोर (Avlochor) है। जिन व्यक्तियों को यह ज्वर बार बार हो जाता हो तथा उनके रक्त में मलेरिया बुखार बैठ गया हो। उनको पहले दो दिन तक दिन में तीन बार तक एक २

बड़ी टिकियां दें। इसके पश्चात आठ दिन तक प्रातः सायं एक एक बड़ी टिकिया देते रहें।

रक्त अल्पता के लिए लिवर एक्सट्रैक्ट

(Liver Extract)

गर्भवती स्त्रियों के शरीर में बच्चे को आहार पहुँचाने के कारण रक्त कम हो जाता है। संग्रहणी में भी रक्त की कमी हो जाती है। रोगी जिनके शरीर में रक्त बहुत कम हो गया हो, मुख पीला हो तथा रक्त अल्पता के कारण धीमा २ बुखार हो जाता हो, उनको लिवर (यकृत) का सत प्रयोग करना अत्यन्त उपयोगी है। पाव भर बकरी की कलेजी कूटकर तमाम रस निकालकर इसमें एक छोटा चम्मच पोर्ट वाईन तथा एक दो बूंदें नींबू का ऐसन्स सम्मिलित करके पिलाते रहने से रोगी में लाल रक्त उत्पन्न हो जाता है। चूंकि प्रतिदिन कलेजी से रस निकालना कठिन है तथा अनेक रोगी इसको स्वादिष्ट न होने के कारण नहीं पीते, इसलिए कैमिस्टों से लिवर एक्सट्रैक्ट खरीदा जा सकता है। इसके एक से दो चम्मच दिन में दो तीन बार पिलाये जा सकते हैं। पिलाने की बजाय अगर लिवर एक्सट्रैक्ट के इन्जेक्शन किये जायें तो शीघ्र तथा अधिक उपयोगी सिद्ध होते हैं। ऐसी अवस्था में २ सी० सी० की मात्रा में एक दिन छोड़कर या तीसरे दिन मांस में इन्जेक्शन करें। इन्जेक्शन के लिए लिवर एक्सट्रैक्ट एम्पूल के रूप में बिकता है।

पैसा पैसा की सफल औषधियां

लहसन Garlic

प्राचीनकाल में औषधि के रूप में इसका प्रयोग अधिक होता था तथा भिन्न भिन्न रोगों को दूर करने के लिए इसको रामबाण माना जाता था। इसका गुण गर्म तथा उत्तेजित है। विभिन्न प्रकार की खांसी, ज्वर तथा दुर्बलता की अवस्था में इसका प्रयोग लाभदायक है। लहसन का रस निकालकर उसको थोड़ा गर्म करके कान में दो तीन बूंद टपकाने से या इसको जैतून के तेल में जलाकर यह तेल बहरापन (कम सुनाई देना) की अवस्था में कान में डालने से लाभ पहुंचाता है। यूरोप और अमेरिका के डाक्टर इसको तीव्र कीटाणु-नाशक तथा छूत (Infections) रोगों के लिए लाभदायक समझते हैं। इसके रस को चार गुणा पानी में मिलाकर गदे दुर्गन्धित घाव धोने से उनकी दुर्गन्ध दूर हो जाती तथा घाव साफ हो जाते हैं। चौवीस घन्टों में घावों का दर्द समाप्त हो जाता है।

इसको खाने से अजीर्ण, अफारा, उदरशूल, अन्तड़ियों में दुर्गन्ध, श्वास आदि के लिए लाभदायक है। टाईफायड ज्वर के आरम्भ में लहसन का रस एक ड्राम चार या छः घन्टे के बाद रोगी को पिलाते रहें तो यह बुखार रुक जाता है। डिफ्थेरिया में इसका रस देने से तापमान कम हो जाता तथा रोगी का कष्ट कम हो जाता है। काली खांसी के जिए भी लहसन लाभप्रद है। ब्लड प्रैशर (रक्त-

चाप की अधिकता) को कम करने के लिए भी लहसन गुणकारी है। इसी अभिप्राय से इसको अधिक से अधिक प्रयोग किया जा रहा है। टाईफायड, छूत के रोग और डिफ्थेरिया इत्यादि में भी लाभदायक है।

डा० करोसमैन की राय में अगर इसको दिन में कई बार दिया जाये तो न्यूमोनिया के लिये अत्यन्त लाभदायक है। क्षय रोग में इसका प्रयोग विभिन्न रूपों में बहुत किया का रहा है। इससे क्षय रोगी की भूख बढ़ जाती है। सख्त खांसी कम हो जाती तथा रात को पसीना आना दूर हो जाता है। लहसन पेशाब तथा मासिक धर्म को खोलता है। आवाज को साफ कर देता है। कफ तथा नाड़ी संस्थान के रोग, दमा तथा जोड़ों का पुराना दर्द, पक्षाघात, अधरंग और शरीर का कांपना को दूर करता है। शीतकाल में शरीर को गर्म और स्वस्थ रखता है। सांप और बिच्छू के घाव पर लहसुन कूटकर बांध देने से विष का प्रभाव दूर हो जाता है। पंजाब के ग्रामों में क्षय के रोगियों को लहसन का रस भैंस के दूध में मिलाकर पिलाने की प्राचीन प्रथा है। इसकी तुरियों को सुखाकर गोलियां या चूर्ण बना लें। सूखे लहसन की मात्रा १५ रत्ती दिन में तीन बार है। लहसन का टिंक्चर भी तैयार करके विभिन्न रोगों को दूर करने के लिए प्रयोग किया जा रहा है।

बिसखपरा Boerhaavia पुर्निनवा

खेतों और बागों में यह बूटी स्वयं उत्पन्न होती है। यह बूटी जलोदर (Dropsy) रक्त की कमी तथा हृदय रोगों की सफल औषधि है। संस्कृत के आयुर्वेदिक ग्रन्थों में इन रोगों के विषय में इसकी बहुत प्रशंसा की गई है। एलोपैथिक तथा होमियोपैथिक डाक्टरों ने इस बूटी पर काफी रिसर्च की है। इस बूटी में पोटासियम नाईट्रेट

की मात्रा अधिक पाई जाती है। जिसके कारण पेशाब खुलकर आता है। चरक और सुश्रुत आयुर्वेद की संस्कृत पुस्तकों में इसकी बहुत प्रशंसा की गई है। सुश्रुत में लिखा है कि इस बूटी का क्वाथ लहसन के रस के साथ मिलाकर पीने से शरीर के भीतर किसी भी अंग में विद्यमान हानिकारक रुका पानी शीघ्र निकल जाता है। सुश्रुत इस बूटी में शहद मिलाकर कुत्ते के काटे, चूहे और अन्य विषैले जन्तुओं के घावों के लिए लाभदायक बताते हैं। प्राचीनकाल के प्रसिद्ध वैद्य और बूटियों में निपुण चक्रदत लिखते हैं कि इस बूटी की जड़ का रस सांप के विष को नष्ट कर देता है। वंगसैन ने इसको जोड़ों के दर्द, धीमा ज्वर और जलोदर (Dropsy) के लिए रामबाण माना है। कलकत्ते के प्रसिद्ध डाक्टर सिन्हा ने वृक्क (Kidney) के रोगों से पीड़ित १५ वर्षीय रोगी जो बड़े २ एलोपैथिक डाक्टरों से ठीक न हो सका था। इस बूटी के टिंक्चर से थोड़े ही समय में स्वस्थ कर दिया।

डाक्टर सिन्हा ने एक चालीस वर्ष की स्त्री जो रक्त अल्पता की रोगिणी थी तथा जिसका जिगर खराब था। इसके टिंक्चर से उसका जिगर बिल्कुल ठीक कर दिया और उसे खुल कर मूत्र आने लगा। वर्षों की रोगी स्त्री इसके प्रयोग से कुछ ही मास में स्वस्थ हो गई।

तीसरा रोगी ७० साल का बूढ़ा दमा का रोगी था। उसने बहुत औषधियां प्रयोग की परन्तु लाभ न हुआ। मगर इसके टिंक्चर से उसका दमा दूर हो गया। बेरी बेरी के रोग में यह बूटी अत्यन्त कल्याणकारी है। इस बूटी की मात्रा (सूखी) १५ रत्ती है। इस बूटी को टिंक्चर के रूप में पांच से दस बूंद शुद्ध जल में मिलाकर दी जाय। एक औंस दवा का मूल्य २॥) है।

सोडा बाई कार्ब

(Soda-Bi- Carb)

इसको आम बोलचाल में 'मीठा सोडा' कहते हैं और घरों में सब्जियों को शीघ्र पकाने के लिए थोड़ी मात्रा में मिलाया जाता है।

यह पेट फूल जाना, गठिया, जोड़ों के दर्द और पेशाब की तेजाबियत के रोगों को दूर करता है। अजीर्ण, आमाशय तथा अन्तड़ियों में खराबी होने की दशा में इसको भोजन के दो घन्टे पश्चात् दिया जाये। नई तथा पुरानी सूजन, जलन वाले सोज़ाक के लिए यह अत्यन्त लाभप्रद है। इसके प्रयोग से मूत्र के तेज़ाबी पदार्थ दूर हो जाते हैं। न्यूमोनिया, गले की सूजन व खराश में लाभदायक है। इन्फ्लुएन्ज़ा में भी इसको देने से बहुत लाभ होता है। भिड़, बिच्छू और विषैले जन्तुओं के घावों पर इसका पानी में लेप बनाकर लगा देने से विष और दर्द दूर हो जाता है। इसको पानी में घोलकर खुजली के स्थान पर मलने से रोग शान्त हो जाता हैं। इसको पानी में घोलकर इस लोशन की पट्टी रखने से घाव साफ होकर भर जाते हैं।

दांत में खोढ़ होने पर इसका पानी में मिला लोशन लगाने से मसूड़े और दांत के दर्द को आराम आ जाता है। मधुमेह के तमाम रोगियों में सबसे पहले इसको एक ड्राम की मात्रा में दिन में तीन बार दूध के साथ दिया जाता है। इसको खाने से पेशाब खुलकर आ जाता है। १५ से ६० ग्रेन (७॥ से ३० रत्ती) पानी में घोलकर दें।

पोटासियम परमैंगनेट

Potassium Permanganate

यह लाल औषधि है। जिसके गरारे किये जाते हैं और जो कुंओं में डाली जाती है। इसको प्रत्येक मनुष्य जानता है। यह कीटाणुनाशक और दुर्गन्ध दूर करने वाली औषधि है। इसको जल में मिलाकर घाव धोये जाते हैं। गले, मसूड़ों और मुंह के रोगों में इसके गरारे किये जाते हैं।

प्रसिद्ध डाक्टर लार्ड बरुनटन इसको सांप काटे के लिए बहुत लाभदायक मानते हैं। उनका कहना है कि सांप काटने पर तुरन्त तेज़ चाकू, उस्तरे या ब्लेड से घाव खुला करके इसमें इस औषधि के क्रिस्टलों को बहुत बारीक पीसकर घाव पर मल और भर दियाजाये तो विष का प्रभाव नष्ट हो जाता है। इस औषधि को को बीस गुणा पानी में मिलाकर इस लोशन से जहरीले सांप, बिच्छू, पागल कुत्तों के घाव पर तुरन्त ही पट्टी रखते रहने से रोगी को स्वस्थ किया जा सकता है। सुज़ाक में आधी रत्ती औषधि आधी छटांक पानी में मिलाकर (जिससे पानी हल्का गुलाबी हो जाये) सुज़ाक के रोगी के शिश्न में इसकी पिचकारी करें। इसको दस गुना पानी में घोलकर दाद, चम्बल और खारिश पर लगाया जाये। इसको बहुत अल्प मात्रा में खाने के लिये प्रयोग किया जाता है। मासिक धर्म की रुकावट, मासिक धर्म की कमी या मासिक धर्म का देर और कष्ट से आने की अवस्था में इसको एक से दो ग्रेन की मात्रा में दिया जाता है।

कुएं के पानी की दुर्गन्ध दूर करने के लिये अधिक प्रयोग में लाई जाती है। तीन छटांक से एक दो पौंड औषधि कुएं में डालकर बाल्टियों से पानी को खूब हिलाया जाये। रात भर पानी को इसी प्रकार रहने दिया जाये। बाद में कुएं का पानी इतनी देर तक निकालें कि कुए का पानी साफ हो जाये। हैज़े के रोग में इसको

एक से दो ग्रेन खाने के लिये दिया जाता है।

इसको सावधानी से रखा जाये। क्योंकि अल्कोहल, ग्लीसरीन, इत्यादि के साथ मिलने से ज़ोर के धमाके से जल उठता है।

अफीम (Opium)

अफीम औषधि के दृष्टिकोण से अत्यन्त मूल्यवान तथा लाभप्रद है। यदि हम इसका उचित प्रयोग करें। अगर भूल से इसको अधिक मात्रा में खा लिया जाये या अनुचित रोग में प्रयोग किया जाये तो हानि भी पहुंचा सकती है।

(१) कई रोगियों को अफीम की अल्प से अल्प मात्रा भी अनुकूल नहीं आती। इसलिये ऐसे रोगियों को अफीम या इससे बनी वस्तुएं बिल्कुल न दी जायें।

(२) बच्चों को भी अफीम अनुकूल नहीं आती, मगर बच्चों के कई रोग ऐसे हैं जिनमें इसका प्रयोग योग्य चिकित्सक की देखरेख में बिना हानि किया जा सकता है।

(३) अफीम को गर्भवती स्त्रियों को वृक्क और जलोदर (Dropsy) के रोगों में बिल्कुल न दें।

गठिया, विभिन्न प्रकार के फोड़े, घाव, कोढ़, आतशक और कंठमाला के घाव और दूसरी बीमारियों जिनमें प्राय: रात को अत्यन्त दर्द होने के कारण नींद न आती हो, दर्द कम करने और नींद लाने के लिये यह सफल औषधि है। ऐसी अवस्था में एक ग्रेन (आधी रत्ती) देनी उचित है। इससे अधिक मात्रा आरम्भ में देनी उचित नहीं। आधी रत्ती या इससे कम मात्रा में अफीम एक रत्ती काफूर में मिलाकर देने से इसके गुण बढ़ जाते हैं। अन्तड़ियों तथा मूत्राशय में अकड़न और मूत्राशय में पत्थरी के कारण होने वाले दर्द के लिये भी अफीम लाभदायक है।

मधुमेह के रोग में यदि चिकित्सक इसको सावधानी से और उचित परीक्षा करके प्रयोग करे तो बहुत लाभ होता है। कै की अवस्था में कई बार इसकी पहली खुराक से ही लाभ हो जाता है। इसका लेप हर प्रकार के दर्दों के लिये अत्युत्तम है। १५ ग्रेन अफीम को आधा औंस नारियल के तेल या वैसलीन में अच्छी तरह मिला लें। अर्श के कारण जब दर्द से जान निकल रही हो तो बवासीर के मस्सों पर इस मरहम की मालिश करें। दांत दर्द की दशा में आधा ग्रेन से एक ग्रेन तक दांत की खोढ़ में भर देने से तुरन्त दर्द दूर हो जाता है। आंखों के लोशन बनाने में अफीम की उचित मात्रा प्रयोग की जाती है तथा इससे आंखों के अनेक रोगों को आराम आ जाता है। अतिसार तथा पेचिश में भी इसकी अल्प मात्रा से रोगी को लाभ होता है।

मात्रा—आधी ग्रेन से लेकर तीन ग्रेन तक (चौथाई रत्ती सें डेढ़ रत्ती तक)

अंग्रेज़ी औषधियां बेचने वालों से अफीम का सत (Morphine Hydrochlor) मिलता है। इसकी मात्रा $\frac{१}{६}$ ग्रेन से $\frac{१}{३}$ ग्रेन तक है।

पोटासियम ब्रोमाईड

Potassium Bromide

यह औषधि मस्तिष्क में अधिक रक्त संचार को शांत करने (Sedative) कामवासना घटाने और निद्रा लाने वाली है। मिर्गी, हिस्टेरिया, अकड़न पैदा करने वाले रोगों में रामबाण है। अधिक कामवासना, मानसिक थकावट, मस्तिष्क में जोश के कारण नींद न आने, गर्भवती की कै, समुद्री कै तथा सिर का चकराना, नींद में बच्चों का भयभीत होना तथा चीखना, नींद में छाती पर बोझ हो जाना, प्रमेह, स्वप्नदोष या मानसिक थकावट से उत्पन्न सिर दर्द, दमे का दौरा और काली खांसी में प्रायः लाभ पहुँचाती है। इसकी मात्रा ५

से ३० ग्रेन है।

अंग्रेज़ी औषधियां बेचने वालों से सफेद रंग की डलियों में खरीदी जा सकती है। शोरे जैसे स्वाद की होती है। ताज़ा शुद्ध जल में मिलाकर दी जाती है।

सुहागा (Borax)

प्रत्येक घर एवं औषधालय में सुहागे का होना आवश्यक है। यह अत्यन्त सस्ती वस्तु है तथा अनेक रोगों में काम आती है। औषधि के रूप में खिल किया हुआ सुहागा काम में लाया जाये। सुहागे को पीसकर किसी साफ बर्तन में आग पर रखें। थोड़ी देर में पिघल जायेगा। जब पिघलकर सूखकर भली भांति फूल जाये तथा वज़न में हल्का हो जाये तो उतारकर बहुत बारीक पीस लें। यह कीटाणुओं और जुंओं को मारता है।

(१) एक भाग सुहागा को बीस गुणा पानी में मिलाकर सोज़ाक तथा ल्यूकोरिया के रोग में इसकी पिचकारी की जाती है।

(२) बीस गुना पानी में मिलाकर इसके गरारे करने से जीभ, गले के छाले और मसूढ़ों की सूजन को दूर करता है।

(३) स्त्रियों तथा पुरुषों के गुप्त अंगों में अगर अत्यन्त खाज हो तो ऊपर लिखे लोशन में साफ कपड़ा या रूई भिगोकर उस स्थान पर रखें।

स्त्रियों के गुप्त अंगों में खुजली होने पर इसका डूश किया जाये या रूई भिगोकर भीतर रखी जाये।

(४) स्त्रियों के स्तनों (छातियों की भुटनी) पर घाव हो गये हों, पित्त के दानों और त्वचा के रोग में सुहागे का प्रयोग अत्यन्त उपयोगी है। वैसलीन में मिलाकर इसको घावों और खाज के स्थान पर लगाया जाये।

(५) दो रत्ती सुहागा एक औंस अर्क गुलाब या पानी में मिला-

कर नेत्रों में दो दो बूंद ड्रापर से डालें। आंखों का दुखना, लाली, पानी बहना इत्यादि रोग दूर हो जाते हैं।

(६) इसको आठ गुणा शहद में अच्छी तरह घोट कर जीभ तथा मसूढ़ों के घावों पर लगाने से आराम आ जाता है।

(७) थोड़ा सा सुहागा शहद में मिलाकर साधारण मात्रा में छोटे बच्चों को दो दो घन्टे बाद चटाते रहने से हरे, पीले दस्तों को आराम आ जाता तथा बच्चे आसानी से दांत निकाल लेते हैं। इस औषधि को दांत निकालने के समय बच्चे के मसूड़ों पर दिन में दो बार मल दिया जाये। इससे बच्चा दांत आसानी से निकाल लेता तथा मसूढ़ों की सूजन दूर हो जाती है।

(८) उदर से वायु को निकालने तथा अजीर्ण रोग में इसको दूसरी औषधियों में डाला जाता है।

(९) बवासीर के मस्से, कील, छाइयां तथा अधिक उभरे मांस को काट देता है।

(१०) इसको दुगनी चाक मिट्टी में मिलाकर दांतों पर मलने से दांतों का दर्द, मसूड़ों की सूजन, दांतों का कीड़ा, दांतों का मैल दूर हो जाता है।

(११) बढ़ी हुई तिल्ली इसको खाते रहने से से कम हो जाती है।

(१२) ग्लीसरीन आठ भाग में एक भाग बोरिक एसिड अच्छी तरह मिला लें। जीभ, गले की सूजन, मुंह पक जाना तथा सफेद रंग के छालों पर लगाने से तुरन्त आराम आ जाता है।

(१३) वैसलीन आधी छटांक में पांच रत्ती बोरिक एसिड डालकर अच्छी तरह मिला लें। मरहम तैयार है। हर प्रकार की खारिश, फोड़े फुन्सी पर लगाने से घावों को साफ करती तथा उन्हें ठीक करती है।

यह गर्म खुष्क है। इसके खाने की मात्रा आधा से एक माशा तक है। बाहरी प्रयोग में सुहागे के स्थान पर आप अंग्रेज़ी औषधि बेचने वालों से बोरिक एसिड (Boric Acid) लेकर प्रयोग कर सकते हैं।

सोडा सैलीसिलास

(Soda Sali-Cylas)

यह दवा अंग्रेज़ी औषधियां बेचने वालों से कम मूल्य में मिल जाती है। इसको सोडियम सिलीसिलेट (Sodium Salicylate) भी कहते हैं। छोटे छोटे चमकीले पतले पर्त या चपटी कलमें, स्वाद कुछ मीठा नमकीन तथा कुछ बुरा गन्धरहित या साधारण गन्ध वाला, बराबर पानी में मिलाने से घुल जाता है। गठिया तथा उससे उत्पन्न ज्वर में उपयोगी है। तापमान को तुरन्त उतार देता है। दर्द एवं सूजन को दूर कर देता है। शरीर में किसी कारण भी दर्द हो तो इसकी एक दो खुराकों से आराम आ जाता है। इन्फ्लुएन्ज़ा, मधुमेह, गठिया, लगड़ी का दर्द और गले सूज जाने में उपयोगी है। आमाशय में खमीर उठता हो तो उसको दूर कर देता है। बच्चों के दस्तों में यह औषधि अपना चमत्कार दिखाती है। सोजाक के आरम्भ में यह एक अत्यन्त लाभदायक औषधि है। इस रोग के आरम्भ में इसको सोडा बाई कार्ब में मिलाकर दिया जाये। जिगर की सुस्ती, दर्द, जिगर में रक्त का एकत्रित हो जाना और पीठ के दर्द में भी यह उपयोगी है। चम्बल के आरम्भ में जब नये दाग फूट रहे हों तथा उनमें खारिश हो तो ६–७ रत्ती औषधि थोड़े से पानी में मिला कर दिन में दो तीन बार पिलायें। नये गठिया में तो आठ रत्ती दवा दो दो घन्टे बाद देते रहने से ४८ घन्टे में बुखार उतर जाता है।

इसको सोडा बाई कार्ब में मिलाकर देने से यह अधिक लाभ

पहुँचाता है। सर्वदा पानी में घोलकर दिया जाये, नही तो जीभ, गला आमाशय इत्यादि में खराश उत्पन्न करेगा।

अधिक मात्रा या अधिक समय तक प्रयोग करने से सिर दर्द तथा तथा कानों में शायं २ होनी आरम्भ हो जाती है। ऐसी अवस्था में इसका प्रयोग बन्द कर दिया जाये।

(१) **योग**—सोडा सैलीसिलास ५ रत्ती, एमोनिया क्लोराइड ५ रत्ती। ऐसी एक पुड़िया एक कप पानी में मिलाकर दिनमें तीन बार दें। जिगर की खराबी से उत्पन्न सिर दर्द और भूख न लगने और ज्वर में अत्यन्त उपयोगी है।

(२) योग—सोडा सैलीसिलास २० ग्रेन, सोडा बाई कार्ब ३० ग्रेन, लिक्विड एक्सट्रैक्ट आफ लिकोरस (मुलहठी का एक्सट्रैक्ट) १५ बूंद। तीनों औषधियों को खरल में घोट कर इतना पानी मिलायें कि एक औंस दवा तैयार हो जाये। ऐसी एक मात्रा हर चौथे घन्टे बाद देने से जोड़ों के सख्त दर्दों को आराम आ जाता है।

इस्पगोल

(Plantago Ovata)

प्राचीनकाल से भारत के प्रत्येक भाग में इसकी संग्रहणी, कब्ज़, अतिसार, आमाशय तथा अन्तड़ियों की सूजन में प्रयोग किया जा रहा है।

मूत्राशय और वृक्क तथा सोज़ाक आदि में पेशाब लाने और शीतल करने के लिए भी प्रयोग किया जाता है। इसके बीजों को कुछ समय पानी में भिगो देने से वह लेसदार हो जाते हैं। इस्पगोल के बीजों का छिलका दूर करके इसको सत इस्पगोल या उसका छिलका कहते हैं। इसको औषधि के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। मगर डाक्टर चोपड़ा साहब जिन्होंने भारतीय बूटियों की सबसे ज्यादा

खोज की है। उनकी राय है कि छिल्के की अपेक्षा बीज अधिक लाभदायक हैं।

वर्षों के अनुभवों से इस बात का पता चल गया है कि इस्पगोल का लेसदार और गाढ़ा घोल आमाशय और अन्तड़ियों की झिल्लियों के साथ पतले पर्दे की भांति लग जाता है। जिससे वहां कीटाणु प्रभाव नहीं कर सकते। इस लेस का अन्तड़ियों में समावेश नहीं होता है। परन्तु यह पाखाने के साथ बाहर निकल जाता है।

पुरानी कब्ज में इसका प्रयोग उपयोगी है तथा पेचिश में भी इसको सफलतापूर्वक प्रयोग किया जा सकता है। पुरानी पेचिश के अनेक रोगियों को कुड़ा छाल (Kurchi Bark) दो ड्राम की खुराक दिन में तीन बार तथा सवा तोला इस्पगोल के बीज प्रतिदिन देकर डाक्टर चोपड़ा ने स्वस्थ्य कर दिये हैं। इस्पगोल के बीज आधे ड्राम से दो ड्राम तक पानी के साथ या पानी में भिगोकर लिए जा सकते हैं।

मैगनेशिया सल्फास

(Magnesia Sulphas)

इसको ऐप्सम (Epsom) साल्ट या मैगनेशिया सल्फेट भी कहते हैं। यह सफेद रंग के चमकदार क्रिस्टलों तथा कलमों के रूप में विकत है। गन्धरहित, स्वाद कुछ कड़वा, नमकीन और शीतल है। यह सस्ती औषधि है। किसी भी अंग्रेज़ी दवा बेचने वाले से आप खरीद लें।

कब्ज को दूर करने के लिए यह अत्यन्त हानिरहित औषधि है। इससे बिना जी मितलाए तथा बिना पीड़ा के पाखाना खुलकर आ जाता है। इसको देने से अन्तड़ियों में पड़ा मल पानी की भांति पतला होकर बिना कष्ट बाहर निकल जाता है। पेट में पानी पड़ जाने (Dropsy) में गुणकारी है। ब्लड प्रैशर को घटाकर मिर्गी के दौरा

को कम कर देता है। अत्यन्त न्यून मात्रा में फैरम सल्फैट (हीरा कसीस) के साथ मिलाकररक्त कमी की कमी (Anaemia) में दिया जाता है।

संग्रहणी (Bacillary Dysentery) में लाभप्रद है। ऐसी दशा में इसे एकर ड्राम दिया जाये। एक्यूट गठिया केज्वर में डा० इसका इन्जेशन करते हैं। जिससे इसका टीका चमत्कार दिखाता है। नये गठिया में भी इसके चार टीके करने से ही दर्द कम हो जाता है। भिड़, मक्खी बिच्छू और विषैले जन्तुओं के काटते पर इसको तीन गुणा पानी में मिलाकर डंक के स्थान पर रगड़ते रहें। दर्द तथा विष का प्रभाव दूर हो जायेगा।

त्वचा की सूजन में इसको थोड़े पानी में घोल लें। अब रूई को इसमें भिगोकर सूजन वाले स्थान पर रखें तथा ऊपर से पट्टी बांध दें। यह अत्यन्त उपयोगी जुलाब है। आमाशय की खट्टास को दूर करता है। पाखाना साफ लाता है। जिगर को साफ रखता है। कब्ज़ से होने वाली सिर पीड़ा, गठिया, मलेरिया, बुखारों को नष्ट करता हैं। ऐसी कब्ज जो जिगर के विकार से हो, में यह दवा अत्यन्त उपयोगी है। फोड़ों और कारबंकल में भी प्रयोग किया जाता है। घाव के मुर्दा मांस को अलग कर देता है।

साधारण कब्ज़ को दूर करने के लिए इसके एक से दो छोटे चम्मच थोड़े से पानी में घोलकर प्रातः भोजन से पूर्व पी लें। सख्त जुलाब या कई जुलाब लेने के लिए इसके चाए से पांच चम्मच पानी में मिलाकर भोजन से पूर्व प्रातः समय दिये जायें। इससे ५–६ दस्त आ जाते हैं।

प्रिंसिपल तिब्बिया कालेज लाहौर के अनुभूत योग

विष नाशक औषधि

जब कभी रसकपूर, संखिया, दारचिकना या उनकी कच्ची भस्म खा ली जाये तो कई बार रोगी के प्राण तो बच जाते हैं। मगर विष के प्रभाव के कारण शरीर में जोड़ों का दर्द, शोथ, ज्वर और अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न हो जाते हैं। इस औषधि से रोगी को प्रतिदिन एक दो पाखाने आ जाते हैं और विष बाहर निकल जाता है।

योग—दो पके नींवू लेकर उन्हें काटें। उनके चार बराबर टुकड़े बनायें। गाय का ताजा दूध १ सेर लेकर चार प्यालों में बराबर बराबर डाल दें। आधा नींबू एक प्याला में निचोड़ कर दूध फटने से पूर्व ही रोगी को पिला दें। इसी प्रकार थोड़े थोड़े समय के पश्चात् अन्य प्यालों का दूध भी पिलाते रहें। दिन में चार प्यांले पिला दें। पन्द्रह दिन में ही शरीर में से सारा विष दूर हो जायेगा।

शीरे से बड़े बड़े जटिल और पुराने रोग दूर किये जा सकते हैं

Mr. Cyril Scot ने लन्दन में एक अंग्रेजी किताब प्रकाशित की हैं जिसमें शीरे से मनुष्य के अनेक रोगों की आसान चिकित्सा वर्णन की गई हैं। यह किताब कई बार छप चुकी है और संसार भर में बिक रही है। इस किताब के लेखक हानिरहित दवाओं और प्राकृतिक चिकित्सा के लिये दुनिया भर में प्रसिद्ध हो चुके हैं। आपका कहना हैं कि शीरा न केवल अगणित मनुष्य रोगों को ही दूर कर सकता है बल्कि मनुष्य के लिये बेजोड़ शक्तिवर्द्धक पदाथ है। इसमें मनुष्य शरीर के लिये कई अनावश्यक विटामिन मौजूद हैं। लेखक महोदय इसका प्रतिदिन सेवन करने की सम्मति देते हैं। आपने दृढ़ तर्कों और

रोगियों की दशाओं से प्रमाणित किया है कि शीरे में फासफोरिक एसिड पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है। जब मानव शरीर में यह एसिड नहीं रहता तो मस्तिष्क और नर्वस सिस्टम की सैल्ज़ टूट जाती है। न्यूज़ीलड के मि० परसन शीरे का सेवन करके कई भयानक रोगों से बच गये। तब उन्होंने शीरे से विविध रोगों की चिकित्सा करने पर तमाम दुनिया में प्रचार किया और संसार भर के असंख्य रोगियों को इसका सेवन कराया। सेवन कराने के बाद उनके रोग और स्वास्थ्य की अवस्थायें दर्ज कीं। आजकल यह चिकित्सा पद्धति Molasses Therapy के नाम से संसार भर में प्रसिद्ध हो चुकी है। भारत में खांड की असंख्य मिलें हैं जिनमें हज़ारों टन शीरा हर साल बच जाता है। इस शीरे को नाम मात्र मूल्य पर बेच दिया जाता है। रासायनिक तौर पर भी इससे असंख्य केमीकल्ज़ और कई बहुमूल्य वस्तुयें तैयार की जा सकती हैं।

प्रथम विश्व युद्ध से भी पहले डाक्टर फोरबीज रास (स्वर्गीय) ने शीरे से कैन्सर (Cancer) दुष्ट अर्बुद यानी राज फोड़ा की चिकित्सा पर पूरा वृतान्त लिखा और बतलाया कि जो लोग गन्ने के खेतों में काम करते और गन्ना चूसते हैं उनको यह भयानक रोग नहीं होता है। उन्होंने शीरे से इस भयानक रोग के कई रोगी ठीक किये।

गिल्टियों व रसूलियों की चिकित्सा

Glands & Growths

न्यूज़ीलैंड के मि० परसन का स्वास्थ्य इतना बिगड़ गया कि वह हल्के से हल्का काम तक न कर सकते। उनके पेट में रसूली और कई रोग उत्पन्न हो गये। हृदय रोग हो गया, कब्ज, अजीर्ण, पायोरिया, नासूर और कई दूसरे रोगों का शिकार हो गये और उनका नर्वस सिस्टम बिगड़ गया। उनका वजन दिन प्रतिदिन गिर रहा था। तमाम बाल सफेद हो गये थे। बड़े बड़े डाक्टरों के

परामर्श तथा दवाओं के सेवन करने पर भी उनकी दशा बिगड़ती गई। सौभाग्य से उनको एक ऐसे रोगी के हालात सुनने का अवसर मिला जिसके पेट और अन्तड़ियों का बड़े बड़े सिविल सर्जनों ने आपरेशन किया परन्तु रोग न गया और उसे असाध्य समझ कर अस्पताल से निकाल दिया गया। उसको बतलाया गया कि वह दो मास की अवधि में मर जायेगा। इस मृत समान रोगी को किसी व्यक्ति ने शीरे का सेवन करने की राय दी। जिससे वह न केवल मृत्यु से बच गया बल्कि उसका स्वास्थ्य पहले से भी अच्छा हो गया। मि० परसन ने भी शीरे का सेवन करना आरम्भ कर दिया जिससे उनके पेट की रसूली दूर हो गई और अन्य कई रोग भी ठीक हो गये। लगातार सेवन करने से उनके सफेद बाल काले हो गये। उनके चेहरे पर चमक आ गई। चिकित्सा के समय मि० परसन की अवस्था ६० वर्ष की थी। नया जीवन प्राप्त कर लेने पर उन्होंने सारी दुनिया में शीरे से चिकित्सा का जोर से प्रचार किया। रसूलियों (गिल्टियों) की चिकित्सा बड़े बड़े सिविल सर्जन आपरेशन ही बतलाते हैं। शीरे चिकित्सा से गर्भाशय की रसूलियां (Glands), पेट की रसूलियां, छाती की रसूलियां, जीभ की रसूलियां ठीक हो चुकी हैं। एक रोगी की जीभ में इतनी बड़ी रसूली हो गई कि वह बोल भी न सकता था। किन्तु शीरा प्रयोग करते रहने और मुख में रखकर गरारे करने से इस रोग से पूर्णतया स्वस्थ हो गया। शरीर के विविध भागों की गिल्टियां और रसूलियां इस चिकित्सा पद्धति से ठीक हो गईं। रोगियों को शीरा दवा के रूप में खिलाया जाता और बाहरी गिल्टी की दशा में इसकी पुलिटस लगाई जाती रही।

एक स्त्री के गर्भाशय में रसूली थी जिससे रक्त बहता रहता था। डाक्टरों ने कैन्सर बताया और कहा कि रोगिणी डेढ़ मास में मर जायेगी। उसका वज़न घटता जा रहा था। उसको शीरा खिलाना आरम्भ कराया गया और हल्के गर्म पानी में शीरा मिलाकर डूश

करने को कहा गया। कुछ महीनों के बाद जब वह स्त्री मिस्टर परसन के पास आई तो वे उसको मोटी ताज़ी और स्वस्थ्य हो जाने के कारण पहचान तक न सके। रक्त आना बन्द हो गया था। वज़न बढ़ गया था। उसका चेहरा लाल हो गया था। एक रोगी के गले में गिल्टी पैदा हो गई, सांस से बदबू आती, वह मुंह से कुछ न खा सकता। उसको टयूब द्वारा भोजन खिलाया जाता। शीरे का सेवन करने पर दस-पन्द्रह दिन बाद अन्डे के बराबर मांस का सख्त टुकड़ा उसके मुंह से निकला। जिससे उसके गले की तमाम बीमारियां दूर हो गईं।

पक्षाघात (फालिज) का आक्रमण

(Strokes)

बड़ी आयु में शरीर में विविध प्रकार के खनिज तत्व कम हो जाने से पक्षाघात के आक्रमण हो जाते हैं। यदि किसी रोगी या रोगिणी को दोबारा इस रोग का आक्रमण हो जाये तो तीसरी बार वह इस रोग से बच नही सकती। एक बूढ़े को इस रोग का तीसरी बार आक्रमण हुआ और उसके शरीर के एक ओर के अंग पक्षाघात से पूर्णतया पीड़ित हो गये। उसे शीरा सेवन कराया गया। जिससे उसके तमाम अंग ठीक हो गये। जिसे देखकर रोगी के डाक्टर व मित्र चकित रह गये।

जोड़ों की सूजन और दर्द

(Arthritis)

एक स्त्री आयु ७० वर्ष की जांघ का जोड़ तीन वर्ष से जुड़ गया था और बिल्कुल नही हिल सकता था। सख्त दर्द होता। एलोपैथिक इन्जेक्शनों का भी कुछ प्रभाव न हुआ। एक विशेषज्ञ ने आपरेशन का परामर्श दिया। किन्तु स्वास्थ्य की गारन्टी फिर

भी नहीं दी। स्त्री को शीरे का प्रयोग आरम्भ कराया गया। छत्तीस मात्रायें खा चुकने के बाद वह स्त्री बिना लाठी चलने फिरने के योग्य हो गई और उसके घुटने व जांघ के जोड़ पूरी तरह हिलने लग गये। यहां तक कि वह दूसरों को ठोकर तक मार सकती। कई दूसरे रोगी जो लाठियों के सहारे चलते फिरते थे और जिनका निचला भाग बेकार हो चुका था शीरे के सेवन से स्वस्थ हो गये।

नासूर, पुराने और गन्दे घाव

(Ulcers)

वे लोग जिनके रक्त में कोई विकार नहीं होता। उनको फोड़े और नासूर इत्यादि नहीं होते। बाहरी दवायें, मरहमें लगाने से पुराने रिसने वाले नासूर और कई घाव तो योग्य सिविल सर्जनों से भी ठीक नहीं हो सकते। न्यूज़ीलैंड के एक डाक्टर को काफी समय से पुराने फोड़े थे। जिनसे पीप व रक्त बहता रहता था। डाक्टरों का इलाज बेकार साबित हुआ। कुछ समय बाद शीरे के सेवन से उसके तमाम घाव गायब हो गये और उसका स्वास्थ्य बहुत अच्छा हो गया। बल्कि इस चिकित्सा पद्धति से आमाशय के घाव Ulcers तक ठीक हो चुके हैं।

त्वचा की सूजन, एग्ज़ीमा, चम्बल

Dermatitis Eczema, Psoriasis

एग्ज़ीमा, खारिश, चम्बल के रोगियों की स्थानीय रूप में शीरे को पानी में मिलाकर इसकी पट्टियां रखी गईं और दिन में कई बार शीरे की मात्रायें दी गईं। जिससे डेढ़ मास में पूरा आराम हो गया। मरहमों और बाहरी चिकित्सा से कई बार स्थानीय दशा

ठीक हो जाती है। किन्तु अवसर पाने पर शरीर में कई रोग पैदा कर देती है।

ब्लड प्रैशर, हृदय की पीड़ा

High Blood Pressure, Angina Pectoris

रोगी को शीरा और एक लीमू का रस प्रतिदिन देते रहने से इस रोग के असंख्य रोगी ठीक हो चुके हैं। इस रोग में दिल से रक्त धकेलने वाली धमणियां (Arteries) में सख्ती आ जाने से इनकी लचक कम हो जाती है और वे रुक जाती है। जिससे उनमें से रक्त आसानी से नहीं निकल सकता। शीरे में ऐसे खनिज नमक प्रस्तुत हैं, जिनसे नाड़ियों में लचक पैदा हो जाती है और हाई ब्लड प्रैशर को आराम आ जाता है। इसके अतिरिक्त शीरा हृदय की मांसपेशियों (Muscles) को शक्ति देता है। मि० परसन ने कई ऐसे रोगियों का उल्लेख किया है। जिनको हृदय की दुर्बलता के कारण कार चलाने का लाईसेंस नहीं मिलता था। किन्तु जब उन्हें डेढ़ मास तक शीरे का प्रयोग कराया गया तो उनकी हृदय दुर्बलता पूरी तरह दूर हो गई और उन्हें कार चलाने का लाईसेंस मिल गया। दिल के एक रोगी को डाक्टरों ने असाध्य घोषित कर दिया और बतलाया कि एक सप्ताह में इसकी मृत्यु हो जायेगी। किन्तु कुछ समय तक शीरे के सेवन से वह पूरी तरह स्वस्थ हो गया। डाक्टरों ने उसे देखकर चमत्कार समझा।

एक स्त्री आयु ६३ वर्ष, विविध रोगों से पीड़ित, रात में दिल की अधिक धड़कन के कारण उठ बैठती, दिल में दर्द होता, सांस रुक जाता और डर लगता, चेहरा गर्म और रक्त से लाल हो जाता। बड़े २ उपाधि धारी डाक्टरों की दवायें बेकार साबित हुईं। कई सप्ताह तक शीरे की चिकित्सा से दिल के रोगों से पूरी तरह स्वस्थ हो गई और इस चिकित्सा से वह इतनी प्रभावित हुई कि वह हर जानकार को शीरे

के सेवन की सम्मति देती।

कब्ज़ और अन्तड़ियों का सूज जाना

Constipation, Colitis

पढ़े लिखे और शिष्ट मनुष्यों में कब्ज़ का रोग बहुत बढ़ गया है क्योंकि वे प्राकृतिक भोजन और प्राकृतिक रहन सहन के तरीके छोड़ते जा रहे हैं। कब्ज दवायें खाने से दूर नहीं हो सकती। अन्तड़ियों में कई प्रकार के खनिज नमकों की कमी के कारण इनमें काम करने की शक्ति और गति कम हो जाती है। यदि आप फलों व उबली हुई सब्ज़ियां, बिना छने आटे की रोटी और उनके साथ शीरे का प्रयोग करायें तो इस रोग को दूर करना कुछ भी कठिन नहीं है।

मि० साईरल स्काट लिखते हैं कि एक छोटा चम्मच या कुछ अधिक अलसी के बीज छलनी में डालकर पानी से धो लें। तब इनको पानी की सहायता से निगल लें। आमाशय व अन्तड़ियों में जाकर अलसी के बीज फूल जाते हैं। उनका तेल निकलकर तमाम अन्तड़ियों को हानिरहित और प्राकृतिक रीति से चिकना कर देता है। अलसी के बीज मानव शरीर के लिए बिल्कुल हानिरहित है। इसलिये रात को सोते समय इनका सेवन निर्भय होकर किया जा सकता है। एक मास तक सेवन करने से पर्याप्त और स्थायी लाभ हो जाता है। आजकल शिष्ट लोग लिक्विड पैराफीन (Liquid Paraffin) कब्ज़ दूर करने के लिए सेवन करते हैं। किन्तु इसका लगातार सेवन मानवी स्वास्थ्य के लिए ठीक नहीं। होमियोपैथिक डाक्टर शीरे को कब्ज़ तोड़ दवा के रूप से दीर्घकाल से प्रयोग कर रहे हैं। एक छोटा चम्मच काला शीरा मौसम के अनुसार गर्म या ताज़ा एक गिलास या आधा गिलास पानी में मिलाकर छोटे छोटे घूंट में प्रातःकाल धीरे धीरे पियें। अधिक कब्ज़ की दशा में दो तीन चम्मच शीरा पानी, दूध

या चाय में मिलाकर सेवन कर सकते हैं। इसके बाद दिन में खाना खाने के समय या खाना खाने के बाद दो तीन छोटी मात्राय सेवन करें एक मास से डेढ़ मास तक शीरे को इस रीति से सेवन किया जाये।

आजकल अन्तड़ियों के सूख जाने (Colitis) का रोग भी शिष्ट लोगों में बहुत हो गया है। बड़ी अवस्था हो जाने पर प्रायः लोग इससे पीड़ित हो जाते हैं। ऐसी दशा में सेर डेढ़ सेर मामूली गर्म पानी में एक चम्मच शीरा डालकर सप्ताह भर तक एनीमा किया जाये। दूसरे सप्ताह एक दिन छोड़कर एनीमा करें। तीसरे सप्ताह में दो बार और तब एनीमा करना बन्द कर देने और शीरे का सेवन जारी रखने से अंतड़ियों की खुष्की दूर हो जाती है।

रक्त अल्पता तथा रक्त की घातक कमी

Anaemia, Pernicous Anaemia

चूंकि शीरे में लोहा और कैल्सियम की पर्याप्त मात्रा है इस कारण रक्ताल्पता के बहुत से रोगी इस चिकित्सा पद्धति से ठीक हो चुके हैं। आजकल रक्त की कमी के लिये डाक्टर, हकीम, वैद्य विविध रूपों में फौलाद के कुश्ते (भस्में) तथा लोहे के मिश्रण काफी समय तक काफी मात्रा में खिलाते हैं। जिससे आमाशय और अन्तड़ियों की शक्ति दुर्बल पड़ जाती है। रक्त की कमी के लिए लोहा और कैल्सियम शीरे के रूप में खिलाया जाये तो इससे बहुत लाभ होता है। शीरे में ये दोनों तत्व प्राकृतिक दशा में मौजूद हैं। रक्त की भारी कमी के रोगियों में भी शीरे के सेवन ने कई बार चमत्कार दिखलाये हैं।

पेशाब तकलीफ से आना तथा मूत्राशय के रोग

Bladder Troubles

जैसा कि पहले लिखा जा चुका हैं कि शीरा रसूलियों और गिल्टियों को घुलाने में बेजोड़ वस्तु है। इसलिये बड़ी अवस्था के आदमियों में इसके सेवन से बढ़ी हुई प्रास्टेट ग्लैन्ड अपनी असली दशा में आ जाती है।

एक बूढ़े रोगी को बहुत कठिनाई से पेशाब आता और कभी बिल्कुल बन्द हो जाता। वह अस्पताल में दाखिल होने को था कि किसी ने उसे शीरे का सेवन करने और हरे अजमोद (Parsley) की सब्जी चूसने की सम्मति दी। इससे वह अस्पताल में दाखिल होने से बच गया। पेशाब का कष्ट शीरे और हरे अजमोद की सब्जी के रस के सेवन करने से बिल्कुल ठीक हो जाता है।

पित्त की पत्थरी

(Gall Stone)

बतलाई गई मात्रा में शीरे का सेवन करने और तीन चार छोटे चम्मचे जैतून का तेल (Olive oil) प्रतिदिन प्रयोग करने से पत्थरी चूरा चूरा होकर बिना आपरेशन वृक्कों (गुर्दों) व मूत्राशय से निकल जाती है।

स्नायु दुर्बलता

(Nervous Debility)

जिन लोगों का नर्वस सिस्टम (Nervous System) दुर्बल हो चुका है। शीरे का सेवन करके दोबारा स्वस्थ हो सकते हैं। बच्चों की स्नायु दुर्बलता में तो शीरा बहुत शीघ्र लाभ करता है। इसे

सेवन करानें से बच्चे बलवान और स्वस्थ हो जाते हैं।

गर्भ के समय—गर्भवती स्त्रियों को जिन्होने गर्भ के समय शीरे का सेवन किया। उनको बिना कष्ट बच्चा पैदा हो गया तथा उन्होंने सुन्दर, स्वस्थ और मोटा ताज़ा बच्चा जना।

रजोनिवृत्ति

(Meno–Pause)

४४–४५ वर्ष की अवस्था हो जाने पर जब स्त्री को मासिक धर्म सदा के लिए बन्द होने लगता है तो काफी समय तक स्त्री को कई प्रकार के कष्ट और रोग हो जाते हैं। कई कई बच्चे जनने और ठीक व शक्तिप्रद और पौष्टिक भोजन न मिलने के कारण स्त्री के शरीर के कई खनिज नमक समाप्त हो जाते हैं। इसलिए ऐसे समय में शीरे के सेवन से उस समय के कष्ट बहुत सीमा तक घट जाते हैं।

अन्य विभिन्न रोगों में शीरे के चमत्कार

(१) एक लड़का जो बहुत ही जड़ बुद्धि था। शीरे के सेवन से शारीरिक व मानसिक तौर से परिवार के दूसरे सदस्यों जैसा हो गया।

(२) एक्स–रे कराने पर एक व्यक्ति के फेफड़ों की फोटो में एक धब्बा था, उसे शीरे का प्रयोग करने का आदेश दिया गया। जब दूसरी बार इसका एक्स–रे लिया गया तो वह धब्बा दूर हो गया था।

(३) एक लकड़ी जो बहुत दुर्बल थी। डाक्टरों को दिखाने पर उन्होने क्षय रोग बतलाया, शीरे के लगातार सेवन से उसका स्वास्थ्य बहुत अच्छा हो गया।

(४) एक व्यक्ति की उंगली में घाव के कारण सख्त दर्द था,

उसकी भुजा के नीचे एक सख्त गिल्टी निकल आई थी। उंगली के घाव पर प्रतिदिन शीरे में भीगी हुई पट्टी बांधने से तीन दिन में घाव ठीक हो गया और शीरा पिलाते रहने से उसकी गिल्टी घुल गई।

(५) एक व्यक्ति के शरीर पर विसर्प (Erysipelas) था। उसने स्थानीय तौर पर शीरा लगाया और दवा के तौर पर शीरा पीता रहा। जिससे उसका यह रोग ठीक हो गया। जब उसने अपने आप को उस डाक्टर को दिखाया। जिसकी दवाओं से लाभ न हुआ था तो वह रोगी को देखकर चकित हो गया और रोगी को इसका सेवन करते रहने का आदेश दिया।

(६) इस चिकित्सा पद्धति के आविष्कारक मि० परसन को पायोरिया (मसूड़ों से पीप तथा रक्त आना) का कष्टदायक रोग था। वास्तव में यह रोग मानव शरीर में विकार हो जाने से होता है। डाक्टर ऐसे रोगियों को दांत निकलवा देने का परामर्श देते हैं ताकि विष आमाशय में न जाये। इस रोग में शीरे में पानी मिलाकर उसके गरारे किये जायें और मुख द्वारा इसको पिलाया जाये।

शीघ्र आराम पानें के लिए कैलकेरिया फ्लोर, नैट्रम फास, काली म्यूर नं० ६x की ताकत में (तीनों मिलाकर) दो तीन रत्ती दवा दिन में दो तीन बार सेवन की जायें। आराम आ जाने पर कैलकेरिया सल्फ नं० ६x और सिलिशिया १२x बारी बारी से या मिलाकर दें।

(७) शीरे को मुख द्वारा दो तीन सप्ताह तक प्रयोग करते रहने से तमाम शरीर पर इसका प्रभाव पड़ता है। कई स्त्रियां जिनके बाल छोटी आयु में ही सफेद हो गये थे। इसके सेवन से बाल पुनः काले हो गये। विविध रोगों के कारण नाखून, सूखे फीके और कुरुप हो जाते हैं। उनकी चमक जाती रहती है। शीरे के सेवन से वे चमकदार, चिकने और प्राकृतिक दशा में आ जाते हैं।

(८) आपरेशन करने के बाद घाव को शीघ्र भरने और रोगी को स्वस्थ और बलवान बनाने के लिए शीरे का सेवन बहुत लाभदायक सिद्ध हुआ है। रसूलियों, गिल्टियों के और दूसरे आपरेशन कराने से पहले यदि रोगी तीन चार सप्ताह शीरे का सेवन करता रहे तो सर्जन को आपरेशन करने में कठिनाई नहीं होती। क्योंकि रोग काफी सीमा तक घट चुका होता है।

लन्दन में छपी अंग्रेजी पुस्तक "Crude Black Molasses" में लेखक ने शीरे का सेवन मानव शरीर के लिए बहुत आवश्यक ठहराया है। यह पुस्तक तमाम दुनियां में बिक रही है। इसमें शीरे के असंख्य लाभ वर्णन किये गये हैं। अंग्रेजी न जानने वाले सज्जन जो शीरे पर अधिक जानकारी चाहते हैं "शीरे के चमत्कार" हिन्दी पुस्तक मंगवा सकते हैं।

इस अंग्रेजी पुस्तक के लेखक ने लिखा है कि न्यूजीलैंड के देश में जहां शीरे का सेवन अधिकता से किया जा रहा है। वहां लोगों की मृत्यु दूसरे देशों की अपेक्षा कम होती है। जनसख्या भी बढ़ गई और लोग अधिक स्वस्थ है।

शीरा प्रयोग करने की विधि

शीरे का सेवन भोजन से पहले बहुत उपयुक्त है। इसकी मात्रा एक छोटा चमम्चा है। इसको आधे प्याले गर्म पानी में मिलाकर इसमें इतना ठन्डा पानी मिलायें कि पौन प्याला हो जाये। इसे गर्म दशा में पी लिया जाये। बच्चों के लिए आधा छोटा चम्मच काफी है। शीरा पीकर बाद में गर्म पानी भी पी सकते हैं। मौसम के अनुसार इस तरीके में परिवर्तन भी किया जा सकता है। इसे चाय, काफी या दूध में मिलाकर भी सेवन कर सकते हैं। कोमल स्वभाव वाले लोग या आरम्भ में यदि स्वाद पसन्द न हो तो कम मात्रा में ले सकते हैं। रसूली का बढ़ना, गिल्टियो, रसूली के रोगों में इसे

रात को सोते समय और प्रातः उठते समय लेना चाहिये । दिन को भी ले सकते हैं । पानी इतना गर्म हो कि उसमें उंगली आसानी से रखी जा सके इसे शीघ्र पी लेना ठीक नहीं हैं। बल्कि छोटे छोटे घूंटों में धीरे २ पियें। गर्म दशा और मामूली मात्रा में लेने से यह जल्दी शरीर का अंश बन जाता है । ठन्डे पानी में मिलाकर पीने से जुकाम हो सकता है । दूध में मिलाकर भी पिलाया जा सकता है । मुरब्बा, खीर, हलवा, दूसरी खुराकों में भी इसे मिला सकते हैं ।

पेट में रसूली, गिल्टियां होने पर इसे गर्म पानी में मिलाकर एनीमा किया जा सकता है । पुराने घावों, कटी हुई जगह, डंक पर थोड़े पानी में मिलाकर पट्टी बांध सकते हैं । इस उद्देश्य के लिये सदा कच्चा शीरा जिसे अंग्रेजी में "Crude Black Molasses" कहते हैं सेवन किया जाये । तम्बाकू बेचने वालों के पास जो शीरा होता है उसमें काफी मात्रा में स्वास्थ्य नाशक वस्तुयें, तम्बाकू इत्यादि मिले होते हैं । आरम्भ में कम मात्रा में सेवन करके धीरे २ मात्रा बढ़ाते जायें और इसका प्रभाव रोगी या आप अपने पास नोट करें । खांड की मिल में खांड निकाल लेने के बाद जो गाढ़ा काला न जमने वाला शर्बत रह जाता है उसे शीरा कहते हैं । इसमें लहसन से मिलती जुलती तेज गन्ध आती है ।

इस लेख के लिये हम मि० Cyril Scott प्राकृतिक चिकित्सा के विशेषज्ञ का विशेष को रूप से धन्यवाद देते हैं ।

आवश्यक सूचना—हकीम, डाक्टर, वैद्य जो अपने रोगियों को शीरे का सेवन करायें या रोगी जो स्वयं इसका सेवन करें । पूरे परिणामों से हमें सूचित करें जिससे इस अनुसन्धान से मानव समुदाय को लाभ पहुंचाया जा सके ।

स्वामी शिवानन्द जी महाराज के अनुभूत योग

श्रीमान स्वामी शिवानन्द जी महाराज का न केवल भारत बल्कि संसार के बड़े २ देशों में सम्मान किया जाता है। आपने ऋषीकेश (यू० पी०) में योग वेदान्त फारैस्ट यूनिवर्सिटी स्थापित की थी। आपने अंग्रेजी भाषा में विभिन्न अध्यात्मिक विषयों और औषधियों पर कई उपयोगी पुस्तकें प्रकाशित की हैं। सन्यासी बनने से पूर्व आप मलाया में वर्षों तक सफल एलोपैथिक डाक्टर के रूप में प्रैक्टिस करते रहे। आपकी गणना मलाया के सबसे बड़े और चोटी के चिकित्सकों में होती थी। आपका ग्रेड सिविल सर्जन के बराबर वर्णन किया जाता है। उनके योग देखने में साधारण परन्तु सैकड़ों हजारों व्यक्तियों पर परीक्षित किये जा चुके हैं। आपके कुछ योग नीचे लिखे जाते हैं।

मलेरिया ज्वर का सत्यासी टोटका

मलेरिया ज्वर को रोकने के लिए अत्यन्त सफल रहस्य,है। साधारण समझकर घृणा से न देखें अपितु परीक्षा करें।

Vaidyaraj Zandu Bhatji
National Ayurvedic Library
Delhi-26
Call No.........................
Book No.........................
Acc No...001225...

LX3 152N

फिटकरी पीस कर कड़ाही में डालकर आग पर रखें, पानी हो जायेगी। जब बिल्कुल सूख जाये तो इसको भली प्रकार खरल करके कपड़े से छान लें तथा इसमें चौगुनी पिसी हुई खांड अच्छी तरह मिला लें। मलेरिया ज्वर चढ़ने से पूर्व आधा से एक छोटा चम्मच तक यह औषधि अद्र उष्ण पानी के साथ दो दो घन्टे बाद खिलाते रहें। तीन खुराक खा लेने से बुखार न चढ़ेगा। बुखार हो जाये तो २–३ और खुराक दें। कोनीन से अधिक लाभदायक है इसके अतिरिक्त कोनीन की तरह गर्मी खुश्की नहींकरती। इस औषधि की गोलियां भी बनाई जा सकती है।

खाँसी की संयासी औषधि

काली मिर्च और मिसरी समभाग लेकर पीस लें। इसमें इतना घी मिलायें कि गोली सी बन जाये। इन गोलियों को मुंह में रखकर धीरे २ इनका रस चूसें। हर प्रकार की सूखी या तर खांसी पहली गोली चूसने से कम हो जायेगी। अवश्य परीक्षा करें।

श्वेत प्रदर तथा मासिक धर्म की औषधि

(१) मुलहेठी के चूर्ण में दुगनी पिसी हुई मिसरी मिलायें। तीन माशा यह औषधि प्रातः सायं ल्यूकोरिया (स्त्रियों को सफेद पानी आना) तथा प्रदर की अधिकता में अत्योत्तम है।

(२) सवा सेर पानी में दस बारह बूंद चूने का पानी मिला दें। इस पानी को थोड़ा २ दिन भर पिलाते रहें। चूने के पानी में साफ कपड़ा भिगोकर उसकी तह बनाकर स्त्री को योनि में दिन में दो तीन बार रखें। प्रदर की अधिकता तथा अन्य रोगों में भी बहुत उपयोगी है।

दर्दों का तेल—सरसों के गर्म तेल में थोड़ा सा काफूर पीसकर अच्छी तरह मिला ले। इस तेल की मालिश गठिया (जोड़ों

का दर्द) कमर का दर्द, घुटनों का दर्द, पट्ठों का दर्द और दूसरे शारीरिक दर्दों के लिए अत्युत्तम है। यदि स्त्री के स्तनों में दूध अधिक आता हो तो इसकी मालिश से कम हो जाता है।

कारबंकल बिना आपरेशन ठीक—दही को मोटे कपड़े में डालकर बांधकर लटका दें। जब सारा पानी निकल जाये तो इस सख्त दही की टिकिया बना लें। इस टिकिया को कारबंकल के फोड़े पर फैलाकर पटटी बांध दें। दिन में तीन चार बार नई टिकिया बदल दें। कारबन्कल का समस्त गन्दा विषैला पदार्थ, खून, पीप मांस के लोथडे इस टिकिया में आ जायेंगे तथा रोगी की जलन दूर होकर ठंडक पड़ जायेगी।

देहाती चिकित्सा का चमत्कार—स्वामी शिवानन्द जी महाराज ने अपनी प्रसिद्ध अंग्रेज़ी पुस्तक "Home Remedies" में यह सच्ची दिलचस्प घटना लिखी है। अनेक बार देहाती चिकित्सा बड़े २ चमत्कार दिखाती है। यह घटना मेरी आंखों देखी तथा सही है। मेरे परसनल एसिस्टेंट श्री पुरुषोत्तम स्वामी को कई वर्ष से दोनों, हाथों पर काफी सख्त मुहासे (Warts) थे। उनमें दर्द पीड़ा आदि नहीं होती थी मगर वे बुरे लगते थे। ऋषीकेश केसमीप वाले एक गांव के लड़के ने स्वामी जी के इन मुहासों को देखकर देहाती चिकित्सा जो उस गांव में प्रचलित थी पर अनुसरण करने को कहा। उस लड़के ने बतांया कि उसको भी इस प्रकार के मस्से थे। इस ढंग से बिल्कुल दूर हो गये।

देहाती चिकित्सा—एक पैसा या ताम्बा का टुकड़ा थोड़ा सा पानी पत्थर पर डालकर खूब रगड़ें। तब इस पानी को उस ताम्बे के टुकड़े के साथ तमाम मुहासों पर लगा दें। तब इस ताम्बे के टुकड़े को एक कपड़े में लपेटकर किसी चौराहे के बिल्कुल बीच में रख दें।

पुरुषोंत्तम स्वामी ने इस टोटके पर अनुसरण किया। उनके तमाम

मुहासे कुछ ही मास में दूर हो गये तथा उन स्थानों पर किसी प्रकार का चिन्ह तक भी न रहा। कई मास बीत चुके हैं। मगर किसी स्थान पर भी कोई मुहासा पुनः उत्पन्न नहीं हुआ प्रत्येक प्रांत तथा देहात में इस प्रकार के टोटके होते हैं उनसे घृणा न करें। इस प्रकार की कई औषधियां तो बड़े बड़े सिविल सर्जनों के योगों से भी अधिक लाभ पहुँचाती हैं। यह योग हम दो रोगियों पर सफलतापूर्वक आजमा चुके हैं।

पैसा पैसा के सफल योग

अजवायन का सत

Thymol

अजवायन को Distill करने पर जो तेल निकलता है। उससे यह औषधि बनाई जाती है। अत्यन्त तेज़ कीटाणुनाशक है। टाईफायड और अतिसार में कीटाणु विनाश के रूप में सफलता से प्रयोग की जाती है। पेट के रोगों के लिए यह दवा काफूर और सत पोदीना में मिलाकर सैकड़ों नामों से बिक्री की जा रही है। बाजार में एक प्रकार की गोलियां बिक रही हैं जो अजीर्ण के लिए उपयोगी हैं। १/४ भाग अजवायन का सत, ढाई रत्ती सोडा बाई कार्ब को मिला लें। इन गोलियों में यही दो औषधियां होती हैं। इस औषधि को चूसने या गर्म पानी से लेने से पेट की समस्त बीमारियां दूर हो जाती हैं। इसका एक क्रिस्टल दांत की खोढ़ में भर देने से दांत का दर्द तुरन्त दूर हो जाता है। चाक मिट्टी में साधारण मात्रा में मिला देने से अत्योत्तम मंजन तैयार हो जाता है।

पपीता का रस

पपीता जिसको पापिया और पपई भी कहते हैं प्रसिद्ध फल है जो भारत के प्रत्येक भाग में अधिकांश मात्रा में मिलता है। यह फल उदर रोगों में उपयोगी माना जाता है। कच्चा (हरा) पपीता लेकर इसके सब्ज़ बाहरी भाग पर चाकू मारने से एक प्रकार का रस निकलेगा। इस तरह पपीता के समस्त भाग पर चाकू मारकर रस निकाल कर बहुत ही धीमी आग पर सुखा लें। इसको पपीता का सत या Papin कहते हैं। पेट के समस्त रोगों, जिगर की खराबी तथा अजीर्ण में अत्यन्त लाभदायक है। दाद पर इसको मलने से दाद को आराम आ जाता है। इसको खिलाकर कुछ समय पश्चात कैस्टर आयल पिला देने से पेट के कीड़े पाखाना के साथ बाहर निकल जाते हैं। यदि जिगर काम न करता हो और कोई भी वस्तु पचती न हो तो यह अनुभूत औषधि है। आप यदि स्वयं तैयार न कर सकें तो अंग्रेज़ी औषधि विक्रेताओं से Papin नामक यही औषधि बनी बनाई खरीद सकते हैं। इसकी मात्रा ढाई रत्ती से लेकर छः रत्ती तक है। अगर पपीता का सत स्वयं तैयार करें तो इसकी मात्रा दो रत्ती से चार रत्ती तक दी जाये।

फिटकरी के चमत्कार

(Alum)

शताब्दियों से इसको औषधि के रूप में प्रत्येक घर में प्रयोग किया जा रहा है। फिटकरी खुश्क करने वाली (stringent) औषधि है।

कलकत्ते के प्रसिद्ध सामाजिक तथा राजनैतिक कार्यकर्ता डा० सतीश चन्द्र दास गुप्ता गांधी जी के प्रसिद्ध साथी, होम तथा विलेज डाक्टर (घर और ग्राम चिकित्सक) प्रसिद्ध पुस्तक के लेखक तथा

देश के सैकड़ों हकीमों, डाक्टरों ने असंख्य रोगों को दूर करने के लिए फिटकरी की अत्यन्त प्रशंसा की है। सैंकड़ों आयुर्वेदिक पुस्तकों के लेखक हकीम मौलाना अब्दुल्ला ने इसके गुणों पर उर्दू और हिन्दी में पुस्तक प्रकाशित की है। जिसका मूल्य दो रुपया है। फिटकरी के गुणों एवं लाभों पर हकीम साहब ने अपनी पुस्तक में निम्नलिखित लेख लिखा है:—

आवश्यकतानुसार सफ़ेद फिटकरी लेकर मिट्टी के ऐसे बर्तन में डाल दें जिसमें पानी न डाला गया हो। बर्तन का तिहाई भाग खाली रहे। अब इसका मुंह ढक्कन से बन्द करके जोड़ों पर चिकनी मिट्टी या गूंधा आटा लगाकर इतनी दृढ़ता से बन्द करें कि भीतर की वायु बाहर न निकल सकें। इस बर्तन को गर्म तन्दूर या भट्टी में दो तीन घण्टे तक पड़ा रहने दें। फिटकरी बर्तन के अन्दर पिघल कर भुन जायेगी। तीन घन्टे बाद बर्तन का मुंह खोलकर और इसको पीसकर कपड़े से छानकर रख लें।

(१) आंखों का दर्द—एक माशा औषधि शहद में मिलाकर सलाई से लगायें।

(२) आंखों का लोशन—एक माशा औषधि दस तोला गुलाब के अर्क में घोलकर दो दो बूंदें डालने से आंखों के समस्त रोग दूर हो जाते हैं।

(३) कान का दर्द—एक रत्ती दवा कान में डालकर लीमू का रस कान में डालें। कान का दर्द ठीक हो जायेगा।

(४) नक्सीर—एक रत्ती औषधि थोड़े से पानी में मिलाकर नाक में डालें।

(५) कान की पीप—एक दो रत्ती शहद में मिलाकर बत्ती बनाकर कान में रखें। दिन में दो बार बत्ती बदल दें।

(६) दांतों पर मलने से दांतों का दर्द, मैल, मसूढ़ों से खून आना, दांत हिलना, दांतों के कीड़े इत्यादि रोग दूर हो जाते हैं।

(७) खून—नक्सीर, बवासीर का खून, छाती मे खून, मासिक धर्म का खून अधिक आये तो आधे से एक माशा औषधि खांड में मिलाकर शीतल जल से खिलायें।

(८) ज्वर--ज्वर आरम्भ होने से पूर्व इसको एक एक घन्टा बाद तीन खुराकें खा लेने से ज्वर रुक जाता है।

(९) पेचिश तथा अतिसार—एक माशा औषधि मुनक्का या कैप्सूल में डालकर प्रातः एवं सायं खिलायें।

(१०) सोज़ाक---इसमें समभाग गेरु मिट्टी मिलाकर तीन तीन माशा औषधि बकरी के दूध की छाछ के साथ दिन में तीन चार बार दें।

(११) डाक्टर सतीश चन्द्र दास गुप्ता अपनी प्रसिद्ध अंग्रेजी पुस्तक 'होम एन्ड विलिज डाक्टर' में लिखते हैं कि आमाशय के फोड़े मासिक धर्म की अधिकता में और टाईफाईड के कारण अन्तड़ियों से रक्त आने की अवस्था में फिटकरी (कच्ची) पांच से आठ रत्ती तक देने से इन रोगों को आराम आ जाता है।

(१२) पेचिश तथा अतिसार और रात को पसीना आने की अवस्था में भी इसका प्रयोग लाभदायक है।

(१३) क्षय रोग की खांसी के कारण आने वाली वमन में तीन से पांच रत्ती तक फिटकरी लेने से रोग को आराम आ जाता है।

(१४) पांच रत्ती कच्ची फिटकरी अढ़ाई तोला पानी में मिला कर इसके गरारे करने से मुंह पक जाना, जीभ के छाले तथा घावों और गला पक जाना इत्यादि को आराम आ जाता है।

(१५) इसको ग्लेसरीन में मिलाकर रूई की फुरेरी से गले में लगाने से गले के रोग दूर हो जाते हैं।

(१६) अढ़ाई तोला पानी में डेढ़ रत्ती कच्ची फिटकरी घोलकर सोजाक के रोग तथा श्वेत प्रदर में पिचकारी करने से पीप आना

पेशाब की जलन, पेशाब रुक कर आने की शिकायत दूर हो जाती है।

(१७) कच्ची फिटकरी में थोड़ा सा पानी मिलाकर लेप बनाकर लगाने से विषैले जन्तुओं के डंक की पीड़ा तथा घाव से रक्त प्रवाह बन्द हो जाता है।

(१८) कच्ची फिटकरी को पानी में मिलाकर माथे पर लगाते रहने से नकसीर को आराम आ जाता तथा शरीर के किसी भी भाग से रक्त आना बन्द हो जाता है।

(१९) फेफड़ों, आमाशय, वृक्क, बच्चादानी या किसी भीतरी अंग से रक्त आने की अवस्था में दो रत्ती फिटकरी दिन में तीन बार दें।

(२०) कच्ची फिटकरी को पानी में घोलकर इसमें हरड़ का क्वाथ मिलाकर कपड़ा भिगोकर बवासीर के मस्सों और गुदाभ्रंश पर रखने से बहुत ही लाभ होता हैं।

(२१) ढाई छटांक पानी में दो ढाई माशा कच्ची फिटकरी मिलाकर इसमें कपड़ा गीला करके शरीर के जिस भाग और जोड़ में सूजन पैदा हो गई हो अथवा चोट लग गई हो, रखने से आराम आ जाता है।

(२२) पानी साफ करने के लिए पांच रत्ती कच्ची फिटकरी एक घड़ा पानी में घोल दें। कुएं का जल साफ करने के लिए इसको दो तीन छटांक पीसकर कुएं में डाल दें। फिटकरी मुख द्वारा खाने के लिए इसमें छः सात गुना खांड मिलाकर पानी की सहायता से रोगी को सहज से सेवन करा सकते हैं।

एलोपैथिक के अनुभूत योग

अमेरिका तथा यूरोप के एलोपैथिक डाक्टरों ने अपने चमत्कारों से संसार को चकित कर दिया है। विभिन्न देशों में बड़ी बड़ी औषधि निर्माता फर्में हैं जो करोड़ों रुपये से औषधियां बनाने काकाम कर रही हैं। इन फर्मों में सैकड़ों शिक्षित एलोपैथिक डाक्टर हैं जो मनुष्यों को बचाने के लिए विभिन्न रोगों की औषधियों पर रिसर्च कर रहे हैं। वर्षों की रिसर्च के पश्चात ऐसी औषधियां तैयार कर ली गई हैं, जिनसे टाईफायड, राजयक्ष्मा और चेचक जैसे भयानक रोगों को दूर किया जा सकता है।

ऐसी औषधियां मंहगी अवश्य हैं परन्तु इन औषधियों का प्रयोग करके आप अपने रोगियों को शीघ्रातिशीघ्र स्वस्थ बना सकते हैं तथा अपने नगर में ख्याति, सम्मान, धन तथा प्रसिद्धि प्राप्त कर सकते हैं।

इस भाग में यूरोप, अमरीका तथा संसार के अन्य देशों के बड़े २ डाक्टरों, सिविल सर्जनों, बड़े २ सरकारी अस्पतालों में हर रोज लाखों रोगियों पर अनुभूत योग लिख दिये गये हैं। भयंकर रोगों में रोगियों को एलोपैथिक औषधियां देकर उनको एक दो दिन में स्वस्थ बना सकते हैं।

ऐसे २ अनुभूत योग, जिनसे आप टाईफायड जैसे भयंकर ज्वर को एक दो दिन में उतारने में सफल हो जायेंगे। औषधि जिसकी एक ही खुराक से मलेरिया बुखार उतर जायेगा। इस प्रकार के अदभुत चमत्कार और बहुमूल्य अनुभूत सहज योग इस भाग में पढ़ें।

एक ही मात्रा से टाईफायड उतरने लग जायेगा

टाईफायड अत्यन्त भयंकर बुखार है जो रोगी को चूस लेता और अपनी निश्चित अवधि से पूर्व नहीं जाता। किसी औषधि से इस ज्वर की अवधि कम नहीं होती। इस ज्वर से रोगी के अनेक अंग खराब हो जाते हैं। कुछ वर्ष पूर्व ही एक नई औषधि का आविष्कार हुआ है। जिसकी प्रथम खुराक से ही यह बुखार उतरना आरम्भ हो जाता है। यह औषधि (Chloromycetin क्लोरोमाईसेटिन) औषधि विक्रेताओं से खरीदी जा सकती है। बड़ों के लिए यह औषधि कैपसूल में बन्द और बच्चों के लिए शर्बत के रूप में बिकती है। एक या दो कैपसूल चार से छ: घन्टे बाद दिये जायें। तीन चार दिन में ज्वर बिल्कुल दूर हो जायेगा। अगर पांच छ: दिन तक प्रयोग कर ली जाये तो टाईफायड पूर्णतया उतर जाएगा। बच्चों को एक ड्राम की खुराक दी जाती है। अगर रोगी पन्द्रह बीस दिन तक पूरी तरह आराम कर ले और दूध ही पीता रहे तो दोबारा यह भयंकर रोग न होगा। तनिक सी असावधानी से यह ज्वर पुन: हो जाता है।

इस औषधि की प्रथम मात्रा से ही ज्वर उतरने लग जाता है। औषधि महगी है मगर संसार के समस्त देशों के लाखों रोगी इस भयंकर ज्वर से छुटकारा पा चुके हैं।

एक ही मात्रा से मलेरिया दूर

पार्क डेविस कम्पनी ने हाल ही में यह औषधि आविष्कार की है। निर्माता का दावा है कि विषम ज्वर, मलेरिया, कपकपी से होने वाला ज्वर इसकी एक ही मात्रा से दूर हो जाता है। हमने मलेरिया ज्वर

वाले काफी रोगियों को इसकी एक ही खुराक दी है जिससे ज्वर दूर हो गया। प्रौढ़ रोगी को तीन गोलियां एक ही बार पानी से खिला दें। ६ से १५ साल तक दो टिकियां, तीन से पांच साल तक एक टिकिया, एक से दो वर्ष के बच्चे को आधी टिकिया एक ही बार दें।

इसके दो सप्ताह पश्चात ऐसी ही एक मात्रा देनी चाहिये। सुन्दर मोमी कागज़ में बन्द तीन टिकियों का पैकिट बिकता है।

इस औषधि का नाम कामोकोइन (Camoquin) है और पार्क डेविस की बनाई हुई है।

हृदयशूल तथा ब्लड प्रैशर को तुरन्त आराम

एमाइलिस नाईट्रिस (Amylis Nitris B. P.) इसको एमाइल नाईट्राईट (Amyl Nitrite) भी कहते हैं। पीले रंग का सुगन्धित तरल पदार्थ है। शीशे की टयूब में जिसमें एक से पांच बूंद औषधि बन्द होती है बिकती है। यह औषधि क्षणों में ब्लड प्रैशर को कम कर देती है। हृदय तथा रक्त सम्बन्धी अंगों में इसका तुरन्त प्रभाव पड़ता है। हृदय शूल (Angina-Pectoris) आदि के कारण जब मनुष्य की हृदय गति रुक जाने का भय हो तो तुरन्त रूमाल या थोड़ी सी रूई में कैप्सूल को तोड़कर रोगी को सुघा दें। रोगी की दशा सुधर जायेगी। दिल की शिरायें तुरन्त फैल जायेंगी। रक्त का दबाव कम हो जायेगा। इसके अतिरिक्त यह दवा अकड़न, श्वास, सिर का दर्द, काली खांसी में भी उपयोगी है।

विटामिनी औषधियां प्रयोग करें

लोगों को आजकल पौष्टिक आहार न मिलने के कारण शारीरिक दुर्बलतायें हो जाती हैं। जिससे उनको अनेक रोग हो जाते हैं। यदि आपके पास एक पीले मुख वाला मनुष्य आये और कहे कि

उसका वज़न गिर रहा है, सिर में दर्द रहता है, सख्त कब्ज़ है। मसूड़ों में सूजन हो गई है, शारीरिक दुर्बलता बढ़ती जा रही है, दौड़ते हुए दिल अधिक धड़कने लग जाता है तो ऐसी दशा में आप समझ लें कि उसके शरीर में विटामिनों की कमी हो गई है ऐसे रोगियों की चिकित्सा करते समय विटामिनी औषधियों का प्रयोग करें। पोलीवाईट (Polywhite) निर्माता शेटी कम्पनी या मिल्टी वाईट की एक एक टिकिया रोगी को दिन में दो तीन बार देते रहने से इस प्रकार के समस्त रोग तथा कमज़ोरियां स्वयं दूर होनी आरम्भ हो जायेंगी और वह अपने अन्दर नई शक्ति और नया जीवन अनुभव करने लग जायेगा। इन गोलियों में समस्त विटामिन जो मनुष्य शरीर के लिए आवश्यक होते हैं। आप विभिन्न रोगों की चिकित्सा करने के साथ साथ इन गोलियों को देकर अपने रोगियों को शीघ्र स्वस्थ बना सकेंगे। यह अत्यन्त सस्ती मगर अनुभूत औषधियां हैं।

कापर सल्फेट (नीला थोथा) से इलाज

(१) आंखों के पपोटों को उलट कर इसकी डली अत्यन्त सावधानी तथा नरमी से सिर्फ एक ही बार फेरें। चन्द रोज में कुकरों को आराम आ जायेगा।

(२) बिच्छू काटे स्थान पर नीले थोथे का चूर्ण और नमक पीसकर थोड़ा सा पानी मिलाकर गाढ़ा लेप बनाकर घाव के स्थान पर लगा दें।

(३) पुराने सोजाक और श्वेत प्रदर में एक औंस पानी में आधी रत्ती यह औषधि घोलकर पेशाब की नाली में पिचकारी करते रहें।

(४) गन्दे तथा फैलने वाले घावों पर इसकी डली पानी में गीली करके घाव के चारों ओर दिन में एक बार लगा दिया करें। घाव

फैलने रुक जायेंगे।

(५) फासफोरस के खाने के विष को दूर करने के लिए तीन चार ग्रेन यह औषिध पानी में मिलाकर थोड़े २ समय के बाद देते रहें। यहां तक वमन आनी आरम्भ हो जाये। वमन के साथ फासफोरस का विष दूर हो जायेगा।

(६) इसको पानी में घोलकर उसमें सब्जियां तथा फल डुबो लेने से उनके समस्त कीटाणु मर जाते हैं।

(७) तम्बाकू की आदत छुड़ाने के लिए सौ भाग पानी में एक भाग यह औषधि डालकर रोगी को प्रतिदिन गरारे करायें। इससे रोगी को तम्बाकू पीने से घृणा हो जायेगी।

शराब की तलछट

(Yeast)

शराब निकाल चुकने के पश्चात जो गाढ़ी गाद नीचे बैठ जाती है, शराब के कारखानों से अत्यन्त सस्ती मिल जाती है। यह तलछट बेशुमार रोगों में उपयोगी है। नवयुवक,युवतियां जिन्हें फोड़े फुन्सियां निकलते रहते हैं। रक्त की अशुद्धता से होने वाले समस्त रोगों को दूर करके रक्त को साफ करती है। रक्त अल्पता, अजीर्ण, त्वचा की सूजन, मधुमेह (मूत्र में शक्कर आना) अन्तड़ियों तथा आमाशय की शोथ, कब्ज़ पेट में गैस पैदा होना, गले की सूजन, चम्बल, बेरी बेरी आदि रोगों में अनुभूत औषधि हैं। मात्रा चार से पन्द्रह रत्ती तक भोजन के साथ या खाली पेट पानी में मिलाकर दें। कील और चम्बल के स्थान पर इसको पीसकर लेप करें। अत्यन्त सस्ती, परन्तु उपयोगी एवं अनुभूत है। एक दो टिकियां दिन में तीन बार खिलायें।

बूढ़ों को जवान और सफेद बालों को जड़ों से काला बनाने वाली दवा

प्राचीनकाल के प्रसिद्ध हकीम शीराजी अपनी एक पुस्तक में लिखते हैं कि एक बार यात्रा में मुझे एक वृद्ध पुरुष मिला जिसकी आयु १०४ साल की थी। इस पर भी उसके सिर और दाढ़ी के बाल काफी काले थे। बातचीत के समय उसने बताया कि यह नौजवान स्त्री मेरी तीसरी पत्नी है। मेरी दो और भी पत्नियां हैं। उसका चेहरा भरा हुआ और गुलाब के समान लाल था और वह आयु को देखते हुए काफी ताकतवर था। उसने बतलाया कि जवानी में उसका स्वास्थ्य बहुत खराब था। एक साधू ने उसको सिम्बल की जड़ प्रतिदिन खाने का आदेश दिया। दो साल तक सिम्बल की जड़ का पाऊडर खाते रहने से मेरे सिर और दाढ़ी के बाल दोबारा काले हो गये और मेरे शरीर में अत्यधिक मर्दाना, मानसिक और शारीरिक शक्ति पैदा हो गई। इस दवा के प्रभाव से मैंने बुढ़ापे में पहली पत्नी होने पर भी दो और शादियां कीं। मेरा बटा जिसकी आयु ५० साल है यह दवा दो साल तक खाता रहा जिससे दाढ़ी के बाल दोबारा काले हो गये। प्रसिद्ध यूनानी पुस्तक 'किताबुल मुफरेदात' में प्रसिद्ध हकीम मुजफ्फर हुसैन ऐवान ने सिम्बल के लाभ इस प्रकार लिखे हैं। इसको निरन्तर प्रयोग करते रहने से समय से पहले सफेद बाल दोबारा जड़ों से काले पैदा होने लग जाते हैं। इसकी जड़ का पाऊडर मर्दाना ताकत पैदा करता, शीघ्रपतन, नपुन्सकता, वीर्य की कमी व पतलापन की चोटी की दवा है। जठराग्नि को बढ़ाता और निरन्तर प्रयोग से बुढ़ापे में जवानी व नई शक्ति पैदा ही जाती है। सिम्बल के पाऊडर के खाने की मात्रा आधा तोला से एक तोला तक है। मधु या खांड में मिलाकर खाली पेट प्रातः साय कई मास तक निरन्तर प्रयोग करते रहें।

२५०० = ६.७४

॥ समाप्त ॥

000128